अवतार मेहेरबाबा के साथ मेरी

# जीवन गाथा

(मूल अंग्रेज़ी का हिन्दी अनुवाद)

केशव नारायण निगम

*अनुवादकर्त्ता :*
प्रताप चन्द्र निगम
लेक्चरर

द्वितीय संशोधित संस्करण
सितम्बर–२००७

**प्रकाशक**
डा. (श्रीमती) मेहेर ज्योति कुलश्रेष्ठ
एम.एससी., पीएच.डी.

**सर्वाधिकार सुरक्षित**
श्रीमती सुधा केशव निगम
डा. (श्रीमती) मेहेर ज्योति कुलश्रेष्ठ
"जिज्ञासा", बी. २४४८, इन्दिरा नगर
लखनऊ – २२६०१६ (उ.प्र.)
फ़ोन – ०५२२–२३५०२१४

प्रथम संस्करण–१९८८
द्वितीय संशोधित संस्करण–२००७

**मुद्रक**
शिवम् आर्ट्स, २११ पाँचवीं गली, निशातगंज, लखनऊ
फोन : ०५२२–२७८२३४८, २७८२१७२

# प्रस्तावना

मैं अपने आपको अत्यंत भाग्यशाली समझती हूँ क्योंकि मुझे बाबू (मेरे पिताजी, श्री केशव नारायण निगम) पिता के रूप में प्राप्त हुये। इसे मैं अपने प्रियतम अवतार मेहेर बाबा का अनोखा और प्रेमपूर्ण आशीर्वाद मानती हूँ जो उन्होंने कृपापूर्वक मुझे दिया है। मैं बाबू को अपना गुरु मानती हूँ। बचपन से लेकर अब तक मैं बाबा कार्य और अपने प्रतिदिन के जीवन में उन्हें अपना आदर्श मानती हूँ। मेरे हृदय में प्रियतम बाबा के बाद बाबू का स्थान है। मुझे कम उम्र में ही यह अनुभव होता था कि प्रियतम बाबा की आज्ञाओं की तरह, मुझे बाबू की आज्ञाओं का अक्षरशः पालन करना है।

वह अत्यन्त दयालु, क्षमाशील, ईमानदार, प्रसन्नचित्त, विनोदी एवं समय के पाबन्द थे। बाबा कार्य में सदैव व्यस्त रहने एवं गरीबी के बावजूद, वह हमारे प्रति अत्यंत प्रेमपूर्ण एवं हमारी परवाह करने वाले थे। वह हमारे जीवन के हर पहलू का, जैसे कि बीमारी, शिक्षा एवं विवाह आदि का ध्यान रखते थे और छोटी-छोटी बातों का भी ख्याल रखते थे। बाबू अत्यंत क्षमाशील थे, इसलिये मैं छोटी-बड़ी, अच्छी-बुरी सभी बातें उन्हें निडर होकर बताती थी क्योंकि मैं आश्वस्त थी कि वह मुझे क्षमा कर देंगे। मेरे माता-पिता के जीवन का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पहलू, जिसकी मैं अभी भी प्रशंसा करती हूँ और उसका अनुकरण मुझे अत्यंत कठिन लगता है, उनका सदैव प्रसन्नचित्त रहना एवं बाबा की मर्ज़ी के पूर्णतया अधीन होना था। उनकी बातचीत एवं भावों से घर की आर्थिक स्थिति का हमें कभी भी एहसास न हो सका। मैं यहाँ एक घटना का उल्लेख करना चाहती हूँ जिससे बाबा के अन्तर्यामी होने एवं बाबू का उनकी मर्ज़ी के पूर्णतया अधीन होने का ज्ञान होता है। यह सितम्बर १९६९ की बात है। प्रियतम बाबा ने शरीर छोड़ दिया था। १५ सितम्बर, १९६९ को मेरी जूनियर रिसर्च फेलोशिप समाप्त हो रही थी और मेरी छोटी बहिन मेहेर मनी एम.एससी. अंतिम वर्ष में पढ़ रही थी। वह लखनऊ यूनीवर्सिटी के कैलाश होस्टल में मेरे साथ रह रही थी। मेरी पीएच.डी. के तीन वर्ष १५ सितम्बर को पूरे हो

रहे थे और मुझे इसके बाद फेलोशिप मिलने की कोई आशा नहीं थी। एम.एससी. करने के बाद मैं अपना और अपनी बहिन का खर्च अपनी फेलोशिप से ही करती थी। अब, मेरी पीएच.डी. और उसका एम.एससी. दोनों ही अधूरे थे। दोनों का पूरा होना असंभव प्रतीत होता था क्योंकि बाबू को हिन्दी मासिक पत्रिका 'मेहेर पुकार' के संपादक के रूप में १५० रु. प्रतिमाह वेतन मिल रहा था। मैंने सी.डी.आर.आई. लखनऊ में, जहाँ मैं पीएच.डी. कर रही थी, साइंटिस्ट बी के पद के लिए आवेदन पत्र दिया था जिसका इन्टरव्यू सितम्बर के अन्त में था। मैं बहुत तनाव में थी। मैंने बाबू को तार द्वारा सूचित किया कि उपरोक्त पद के लिये मेरा चयन नहीं हुआ और मैं हमीरपुर (अपने घर) पहुँच गई। जब मैं वहाँ पहुँची तो बाबू ने मुझे १५०० रु. हमारे खर्च के लिये दिये। मैंने यह सोचकर रु. लेने से इंकार कर दिया कि बाबू ने कर्ज लिया है और मैं बाबू पर और अधिक बोझ डालना नहीं चाहती थी। इसलिये मैंने बाबू से कहा कि मैं अपने बचत के रुपयों से अपना खर्च चला लूँगी। बाबू ने मेरी झिझक को शीघ्र ही समझ लिया और कहा :–

''जब मुझे तुम्हारा तार मिला, मैंने निराशा का अनुभव किया और मुझे कुछ समझ में नहीं आया कि तुम किस प्रकार खर्च चलाओगी। कुछ समय बाद, मुझे बाबा का संदेश, ''चिन्ता न करो, खुश रहो.....'' याद आया और मेरी सारी चिन्तायें लुप्त हो गईं और मैंने सब कुछ उनके ऊपर छोड़ दिया। जिस क्षण मैंने सब कुछ बाबा के ऊपर छोड़ा, भाई पुकार मेरे पास आये और मुझे १५०० रु. देकर बताया कि जब वह जनवरी १९६६ में बाबा के पास गये थे तो बाबा ने मेरे खर्च के लिये उन्हें वे रुपये दिये थे; वापस आने के बाद वह मुझे रुपये देना भूल गये। उन्हें उसी दिन याद आई और वह मुझे रुपये देने आये....''। प्रियतम बाबा ने समय का संयोजन कितनी पूर्णता के साथ किया था जैसी कि उनकी विशिष्ट रीति है ! यह सुनकर, मैंने रुपये ले लिये।

प्रियतम बाबा ने अक्टूबर १९६८ में बाबू को अपने पास बुलाया और उनसे अपने दोनों हाथ बाबा के सामने फैलाने के लिये कहा जो पार्किन्सन रोग के कारण बुरी तरह काँप रहे थे। तब बाबा ने उनसे अच्छे से अच्छा

इलाज कराने के लिये कहा और बताया कि किसी भी इलाज से फ़ायदा नहीं होगा। बाबा के इस कथन की सत्यता को मैंने देखा। हर प्रकार के इलाज, एलोपैथिक, होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक आदि के बावजूद यह रोग पूरी तरह ठीक नहीं हो सका। बाबा के कथन की सत्यता के अनुसार, आर्थिक समस्याओं के बावजूद बाबू को अच्छे से अच्छा इलाज कराने का अवसर मिला। नवसारी के डा. एच.पी. भरुचा, अग्रिम रूप से दवायें भेजा करते थे जो बहुत मंहगी होती थीं। सत्तर के दशक में डा. बर्ट अपने आप बाबू को देखने आये और अमरीका लौटने पर ''सिनेमेट'' नाम की दवा भेजने लगे। लखनऊ की प्रसिद्ध न्यूरोपैथ डा. देविका नाग यह जानकर अचंभित रह गईं कि बाबू को भारत में ''सिनेमेट'' उपलब्ध है। डा. बर्ट बाबू की मृत्यु होने तक जरूरत से पहले ही ''सिनेमेट'' भेजते रहे।

बाबू ने अपने कष्ट को बाबा के प्रसाद (भेंट) के रूप में स्वीकार किया और जब भी मैं उनके स्वास्थ्य के बारे में चिंतित होती थी, वह मुझे सान्त्वना देते थे। एक बार मैंने देखा कि उनकी हालत बहुत खराब है और उनकी एक आँख बाहर को निकल रही थी। मैं परेशान होकर रोने लगी। मुझे सान्त्वना देते हुये, बाबू ने कहा, ''चिन्ता न करो; यह बाबा का प्रसाद है। तुम नहीं जानती हो कि मैं अन्दर से कितने आनन्द में हूँ। यह कष्ट कुछ नहीं है।''

बाबू के चरित्र की सबसे महत्त्वपूर्ण बात उनकी बाबा के प्रति आज्ञाकारिता और 'बाबा कार्य' के प्रति पूर्ण समर्पण था जो उनकी बीमारी के बावजूद भी कभी प्रभावित नहीं हुआ। पार्किन्सन रोग के बावजूद, बाबा ने उन्हें "God Speaks" का हिन्दी में अनुवाद और ''पथिक'' का संपादन करने की आज्ञा दी। रोग के कारण उनकी याददाश्त अत्यंत प्रभावित थी और उनके हाथ इतने अधिक काँपते थे कि वह पेन नहीं पकड़ सकते थे। उनकी बोली भी साफ नहीं थी अतः उनकी बात को समझना बहुत कठिन था। लिखने वाले को अत्यंत धैर्य रखने की आवश्यकता होती थी और इसमें बहुत समय लगता था। ऐसी दशा में, बाबू द्वारा "God Speaks" का हिन्दी में अनुवाद होना, प्रियतम बाबा के चमत्कार के अतिरिक्त कुछ नहीं है। बाबू की याददाश्त रोग से प्रभावित होने के बावजूद, जब भी उनसे मैं

बाबा से संबंधित कोई बात पूछती थी, उनकी याददाश्त आश्चर्यजनक रूप से कार्य करती थी और इसके साथ ही उनकी बोली भी एकदम साफ होती थी। अपनी अंतिम साँस तक वह बाबा के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे और उनके प्रबंधों में प्रेमियों का मार्गदर्शन करते रहे। जब वह पूर्ण रूप से अशक्त हो गये तो बाबा प्रेमी कार्यक्रमों के इन्तजाम में उनके निर्देशों का पालन करते थे। ९/१० फरवरी, १९५४ के ऐतिहासिक रात्रि जागरण की याद में, जब बाबा ने पहली बार मेहेरास्ताना (हमीरपुर, उ.प्र.) में अपने आपको इस युग का अवतार घोषित किया था, बाबू हर साल बाबा प्रेमियों के साथ उपरोक्त तिथि में रात्रि जागरण के लिए मेहेरास्ताना जाते थे। ८ फरवरी १९८७ को बाबू की मृत्यु के पश्चात, हम लोग एक किराये की बस में बाबू के शरीर को, भजन कीर्तन करते हुये मेहेरास्ताना ले गये। ९ फरवरी की शाम को उनके शरीर को समाधि में रखा गया और फिर रात्रि जागरण किया गया। इस प्रकार, अपनी मृत्यु के बाद भी, बाबू बाबा प्रेमियों के काफ़िले को रात्रि जागरण के लिये मेहेरास्ताना ले गये।

मेरी माँ, श्रीमती सुधा केशव निगम के बारे में कुछ लिखे बिना यह वर्णन पूरा नहीं होगा। उन्होंने बाबू के जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाबू को केवल अपने प्रियतम बाबा एवं बाबा कार्य में पूरी तरह ध्यान केन्द्रित करने में, उन्होंने हर संभव तरीके से बाबू की मदद की। मैंने उन्हें गरीबी के कारण होने वाले अपने कष्टों एवं अपमान की बाबू से शिकायत करते या झगड़ते हुये कभी नहीं देखा। वह हमारे प्रति सदैव प्रसन्नचित्त एवं प्रेमपूर्ण रहीं। वह हमें अपने अच्छे और बुरे दिनों की, स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में भाग लेने के कारण, बाबू के जेल जाने के बाद होने वाले कष्टों की बातें बताया करतीं थीं। बाबू के अन्तिम दिनों में मेरी माँ उनकी देखभाल अकेले ही करती थीं। उन्होंने पृष्ठभूमि में रहकर अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और बाबू इस बात को हमेशा स्वीकार करते थे।

इस पुस्तक की अंग्रेजी में मूल गाथा, My Life Story With Avatar Meher Baba" प्रियतम बाबा की आज्ञा से १९७० में आत्मकथा के रूप में लिखी गई थी। क्योंकि यह अंग्रेजी में थी और बाबू कभी अपना प्रचार नहीं

चाहते थे, इसलिये उनके जीवन काल में इसका प्रकाशन नहीं हो सका। बाबू की मृत्यु के पश्चात् (१९८७), मेरे चचेरे भाई, श्री प्रतापचन्द्र निगम ने इसका हिन्दी में अनुवाद किया और १९८८ में इसे प्रकाशित किया।

जब मेरे चचेरे भाई प्रतापचन्द्र निगम ने, अपनी पुस्तक ''अवतार मेहेरबाबा के साथ मेरी जीवन गाथा'' के लिये, एरच जसावाला से, जो बाबा के संकेतों की व्याख्या करते थे, एक पूर्वकथन एवं बाबा के साथ बाबू की फोटो के लिये प्रार्थना की, एरच ने निम्नलिखित उत्तर दिया :–

**मेहेराज़ाद**

४ अक्टूबर, १९८८

मेरे प्रिय प्रतापचन्द्र निगम,

''जय अवतार मेहेर बाबा।''

आपका २४ सितम्बर का प्रेमपूर्ण पत्र कल मिला और समस्त पुरुष और महिला मंडली को पढ़कर सुनाया गया।

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि प्रियतम बाबा की कृपा से हमारे प्रिय भाई केशव निगम द्वारा लिखित My Life Story With Avatar Meher Baba का हिन्दी अनुवाद छप रहा है।

मुझे आपको सूचित करते हुए दुख हो रहा है कि इस मूल्यवान प्रकाशन के लिये पूर्वकथन लिखने में मैं असमर्थ हूँ। मैं इसे लिखकर अत्यंत प्रसन्न होता किन्तु आपकी अत्यंत प्रेमपूर्ण प्रार्थना को पूरा करना मेरे लिये संभव नहीं है। ऐसा करने में मेरी शारीरिक एवं मानसिक अयोग्यता को कृपया क्षमा कीजिये।

बाल नातू को लिखे गये आपके पत्र के मिलने के बाद से, जिसमें आपने हमारे प्रिय केशव की बाबा के साथ फोटो के लिये प्रार्थना की है, हम लोग अपने सारे रिकार्ड ढूँढते रहे हैं और हमें ऐसी एक भी फोटो प्राप्त करने में अभी तक कोई सफलता नहीं मिली है। अगर हमें ऐसी कोई फोटो मिलती है तो मैं उसे निश्चित रूप से आपके पास तुरंत भेजूँगा।

हम जानते हैं कि हमारे प्रिय भाई केशव बाबू-बाबा के कार्य में एक दिग्गज-किस प्रकार सदैव पृष्ठभूमि में रहे और यही कारण है कि बाबा के साथ उनकी फोटो पाना इतना कठिन हो रहा है। बाबा की कृपा से, शायद हमें एक फोटो मिल जाये, लेकिन, अगर हमें नहीं मिलती, तो प्रिय भाई आप निराश न हों; क्योंकि बाबा के साथ केशव की फोटो का न होना, अवतार के कार्य में उनकी निःस्वार्थ सेवा का प्रमाण होगा।

आपको और आपके परिवार को मेहेराज़ाद की समस्त पुरुष एवं महिला मंडली की ओर से अत्यधिक प्रेम के साथ,

सप्रेम आपका,
एरच

इस प्रकार अंग्रेजी में लेखक की मूल गाथा लगभग ३३ वर्षों तक अप्रकाशित रही और २००३ में अंग्रेजी में इसका प्रकाशन संभव हो सका। इस बीच हिन्दी में जीवन गाथा की प्रतियाँ समाप्त हो जाने के कारण तथा प्रेमियों के बीच इसकी बढ़ती माँग को देखते हुये, इसका द्वितीय संशोधित संस्करण प्रस्तुत है।

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि प्रियतम बाबा ने अपने इस कार्य में मुझे माध्यम बनाया और मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे बाबू की अपने प्रियतम के साथ यह प्रेम गाथा, उन सभी बाबा प्रेमियों के हृदयों में दैवी प्रेम की आग प्रज्वलित करने में समर्थ होगी जो इसे पढ़ेंगे।

लखनऊ
१८ सितम्बर, २००७

मेहेर ज्योति
(डॉ. मेहेर ज्योति कुलश्रेष्ठ)
''जिज्ञासा'', बी–२४४८
इन्दिरा नगर, लखनऊ–२२६०१६

# आभार

सर्वप्रथम मैं अपने दैवी प्रियतम अवतार मेहेर बाबा को हार्दिक धन्यवाद देना चाहती हूँ जिनकी आन्तरिक सहायता एवं दैवी प्रेम ने इस कार्य को मेरे द्वारा सम्पन्न कराया। विभिन्न स्थानों में विभिन्न बाबा प्रेमियों की सहायता से इस प्रकाशन में असफल होने तथा मेरी वर्तमान परिस्थितियों में इसका प्रकाशन असंभव मालूम होने पर भी, मेरे प्रियतम बाबा ने एक बार पुनः असंभव को संभव कर दिया और मेरे पिताजी की "अवतार मेहेरबाबा के साथ मेरी जीवन गाथा" का द्वितीय संशोधित संस्करण बाबा प्रेमियों की सेवा में प्रस्तुत है।

मैं श्री समीर दिलजन की अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने शारीरिक रूप से अक्षम होने के बावजूद, नोएडा में रहते हुये, लखनऊ में इस पुस्तक की छपाई की व्यवस्था की और इस प्रकार, उनकी सहायता से और उन्हें इस छपाई का माध्यम बनाकर, प्रियतम बाबा की दैवी शक्ति "मूकं करोति वाचालं" का परिचय मिलता है।

आशा है मेहेर ब्रह्म परिवार के सभी प्रेमी इस प्रेम गाथा से लाभान्वित होकर प्रियतम बाबा के दैवी प्रेम की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

मेहेर ज्योति
(डा. मेहेर ज्योति कुलश्रेष्ठ)
"जिज्ञासा", बी. २४४८
इन्दिरा नगर
लखनऊ-२२६०१६

लखनऊ
१८ सितम्बर, २००७

# fo"k;-lwph


| विषय | ..... | पृष्ठ |
|---|---|---|
| **मेरे जीवन का संक्षिप्त इतिहास** | ..... | १ |
| बाल्यकाल एवं विद्यार्थी जीवन | ..... | १ |
| व्यवसायिक तथा सार्वजनिक जीवन | ..... | ८ |
| **अवतार मेहेरबाबा के साथ मेरी जीवन गाथा** | ..... | १३ |
| **१९४२ से १९४७ ई० तक** | ..... | १३ |
| **वर्ष १९४८** | ..... | १५ |
| बाबा की दैवी पुकार | ..... | १८ |
| मौन चेतावनी के साथ प्रारम्भ | ..... | १९ |
| दैवी उपहार | ..... | २१ |
| नया अध्याय | ..... | २३ |
| अवतार ग्रन्थ का अनुवाद | ..... | २६ |
| बाबा प्रेम का प्रसार | ..... | २६ |
| रीवा यात्रा | ..... | २७ |
| बाबा की नज़र | ..... | २८ |
| मेहेर ब्रह्म परिवार | ..... | ३० |
| वापिस खींचने का प्रयास | ..... | ३१ |
| बाबा की स्पष्ट मर्ज़ी | ..... | ३२ |
| **वर्ष १९४९** | ..... | ३६ |
| ईश्वर के अवतार का मेरा प्रथम दर्शन | ..... | ४५ |
| अद्वितीय तिथि ३० अगस्त १९४९ | ..... | ४७ |
| पुनः हमीरपुर आगमन | ..... | ४९ |

**वर्ष १९५० तथा १९५१** ..... ५१
प्रेम प्रवाह ..... ५३
द्वितीय दर्शन ..... ५४
प्रथम आलिंगन, प्रथम मुस्कान, प्रथम प्रसाद ..... ५५
हैदराबाद में बाबा से पुनर्मिलन जून १९५६ ..... ५७
मेरे लिये प्रथम कार्य ..... ६०

**वर्ष १९५२** ..... ६२
संकट काल से आपदा की ओर ..... ६२
घटना के अनुकूल परिणाम ..... ६५
यथार्थ पुनः प्रतिष्ठापन का प्रारम्भ ..... ६७
बाबा के आगमन की भूमिका ..... ६९
मेहेराबाद में बाबा के साथ ..... ७२
हमीरपुर हृदय में बाबा के प्रथम चरण ..... ७२
दिल्ली में बाबा के साथ ..... ७४
हमीरपुर में कार्यालय की स्थापना ..... ७५
बाबादास की अन्तिम कुटिल चाल ..... ७५

**वर्ष १९५३** ..... ७७
संगठनात्मक कार्य का प्रारम्भ ..... ७८
अवतार से अधिकार पत्र ..... ७९
बाबा कार्य की रूप रेखा ..... ८१
बाबादास का बाबा से दूर चले जाना ..... ८१
एक मस्त के साथ मेरे अनुभव ..... ८२
दैवी कार्य का शुभारम्भ ..... ८५
दूसरा चरण ..... ८९
मेहेर वीणा पर बाबा की कृपा वर्षा ..... ९०
बाबा के लिये ही जियो ..... ९१

**वर्ष १९५४** ..... ९३
हमीरपुर जिले में बाबा का द्वितीय दर्शन ..... ९३

बाबा मेहेर ब्रह्म परिवार के कार्यालय में ..... ९६
मेहेर मन्दिर और मेहेर पुकार ..... ९७
मेहेरास्ताना महेवा में अवतारत्व की घोषणा ..... ९८
बाबा द्वारा जीवनदान ..... ९९
आन्ध्र के द्वितीय दर्शन कार्यक्रमों में ..... १००
बाबा के साथ
असली कार्य ..... १०१
जगाने वाले के लिए जगो ..... १०२
बाबा के साथ उपवास ..... १०२
कार्य का विस्तार ..... १०३
भाई परमेश्वरीदयाल के साथ शक्ति परीक्षण ..... १०४
मेहेराबाद सम्मेलन ..... १०६

**वर्ष १९५५–** ..... ११०

**वर्ष १९५६–** ..... ११३

**वर्ष १९५७–** ..... ११५

**वर्ष १९५८–** ..... १२२

**वर्ष १९५९–** ..... १२५
तीन माह का अखण्ड बाबा नाम जप ..... १३५

**वर्ष १९६०** ..... १३७

**वर्ष १९६१ से १९६९ ई. तक** ..... १४१

**पूरक** ..... १५४

**मेहेर ब्रह्म परिवार का विनय पत्र** ..... १५४

**अधिकार पत्र** ..... १५८

''मैं सद्गुरु का गुलाम हूँ जिसने मुझे अज्ञान से मुक्त कर दिया है; जो कुछ मेरा गुरुदेव करता है वह सभी सम्बन्धित जनों के लिये सबसे अधिक कल्याणकारी होता है।''

''एक भाग्यशाली दास के उपयुक्त, सद्गुरु की प्रत्येक आज्ञा का पालन 'क्यों' और 'क्या' के प्रश्न के बगैर करो।''

''तुम सद्गुरु से जो कुछ सुनो उसके विषय में यह कभी न कहो कि यह गलत है, क्योंकि मेरे प्यारे, यह तुम्हारी ही अयोग्यता का दोष है कि तुम सद्गुरु की बात नहीं समझ पाते।''

—हाफ़िज़

# t; vorkj egjckck
# ej thou dk lf{kIr bfrgkl

## बाल्यकाल एवं विद्यार्थी जीवन

मैं, केशव नारायण निगम, एक छोटे से गाँव महेवा (कबरई), तहसील महोबा, जिला हमीरपुर (उत्तर प्रदेश-भारत) में पैदा हुआ था। महेवा अब ''मेहेर-आस्ताना महेवा'' के नाम से जाना जाता है, क्योंकि अवतार मेहेरबाबा मेहेर-आस्ताना नाम की कुटी में दो बार, नवम्बर १९५२ ई. में तथा फरवरी १९५४ ई. में ठहरे थे। इसी कुटी में उन्होंने ९ फरवरी १९५४ ई. की रात्रि में अपनी मण्डली तथा इस जिले के अपने प्रेमियों एवं कार्यकर्त्ताओं के साथ रात्रि जागरण किया था। उस रात्रि जागरण के मध्य ००.५० बजे, बाबा अचानक अत्यधिक प्रसन्न मुद्रा में हो गये और उन्होंने स्वयं को इस युग का अवतार होने की खुली घोषणा की। अपने अवतार होने की यह खुली घोषणा उन्होंने इस अवतारकाल में प्रथम बार मेहेर-आस्ताना में की थी, और अवतार की इस घोषणा ने मेहेर-आस्ताना महेवा ग्राम को एक अनोखा विश्वव्यापी महत्त्व दिया।

मेरा जन्म बुधवार, १६ जून १९०९ ई. को प्रातः ३ बजे के लगभग हुआ था। (१५ जून की रात्रि की समाप्ति तथा १६ जून की रात्रि के प्रारम्भ के मध्य)।

मेरे पिता का नाम नन्दलाल निगम था, जिनका निधन १९४५ ई. के लगभग हो गया था। मेरी माँ का नाम मथुराबाई है जो अब भी जीवित हैं (अब स्वर्गीय)।

मेरे माता-पिता गरीब थे, इसलिये वे अपने बच्चों के पालन पोषण और उनके स्वस्थ जीवन के लिये अनिवार्य अच्छा भोजन, उचित वस्त्र तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकते थे। हम लोग कई भाई-बहिन

थे लेकिन उनमें से सात भाई और दो बहिनें अब भी जीवित हैं। इस प्रकार मैंने अपना बाल्यकाल निरा गरीबी, अति सामान्य वस्त्र, नंगे पाँव एवं दैनिक जीवन की सभी आवश्यकताओं के अभाव में व्यतीत किया।

मेरा भाग्य भी इस जीवन के लिये दुनियावी धन-दौलत नहीं लाया था, जिसका स्पष्टीकरण एकबार प्रियतम अवतार मेहेरबाबा ने किया था। एकबार वह अपने शिष्यों एवं प्रेमियों के बीच में बैठे हुए थे और उनको कुछ प्रवचन दे रहे थे। उस प्रवचन के दौरान उन्होंने कहा, ''कुछ लोग धन-वैभव से सम्पन्न पैदा हुये हैं और कुछ लोग (मेरी ओर इशारा करते हुए) अति निर्धन पैदा हुये हैं''। इस प्रकार, अपने वर्तमान जीवन की अवधि में एक-दो अवसरों के अतिरिक्त मैंने स्वयं को अपने सम्पूर्ण जीवन में निर्धन पाया एवं अनुभव किया है। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब कभी मैंने अपने बाल्यकाल में एक पैसा भी पाया तो मैंने महसूस किया कि मानो मुझे एक बड़ा खजाना प्राप्त हो गया हो, और जब कभी मैं कुछ आने इकट्ठे कर सका तो मैं अपने को एक धनी व्यक्ति जैसा महसूस करता था। मैं न तो शृंगार, न विलासिता और न सुख जानता था। हमने गरीबी का इस सीमा तक सामना किया कि एक बार हमारे माता-पिता के पास भोजन के लिये अनाज तक नहीं था, न ही वे गाँव में किसी से अनाज कर्ज में ले सकते थे। इसलिये हम अपने खेतों की अधपकी चने की खड़ी फसल लाते थे, उसको भूनते थे, और उससे खुद का पोषण करते थे। ऐसा हमने एक दो दिनों तक किया।

मेरी शिक्षा मेरे पैतृक गाँव महेवा की प्राइमरी पाठशाला से प्रारम्भ हुई। मैं सभी प्राइमरी कक्षाओं में अग्रणी छात्र रहा, और मेरे अध्यापक मुझसे एक बुद्धिमान एवं होनहार छात्र के रूप में स्नेह करते थे। प्राइमरी कक्षा ४ उत्तीर्ण करने के पश्चात्, मैं छात्रवृत्ति परीक्षा में सम्मिलित हुआ और उसमें सफल हो गया। यह वर्ष १९२२ की बात थी। मैंने ३ वर्ष तक छात्रवृत्ति प्राप्त की।

जुलाई १९२२ में, मैं महोबा (जिला हमीरपुर) के टाऊन स्कूल में कक्षा ५ में भर्ती हुआ, और वहाँ से १९२५ ई. में वर्नाक्यूलर परीक्षा उत्तीर्ण की।

मैंने वर्नाक्यूलर परीक्षा सम्मान सहित उत्तीर्ण की, जिसके लिये मुझे कक्षा १० तक ५ वर्ष के लिए छात्रवृत्ति मिली। टाऊन स्कूल महोबा में मैं प्रत्येक कक्षा में अग्रणी छात्र तथा मानीटर रहा। मैं जुलाई १९२५ में, गवर्नमेन्ट हाई स्कूल बाँदा (उ.प्र.) में कक्षा स्पेशल 'ए' में भर्ती हुआ जोकि कक्षा ६ के बराबर थी और वहां से मैंने वर्ष १९३० में हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की। ५ वर्ष के हाई स्कूल के अध्ययनकाल के दौरान मैंने ग़रीबी की पकड़ से अपने को विशेषरूप से मुक्त महसूस किया, क्योंकि मुझे छात्रवृत्ति तथा अपने माता-पिता से आर्थिक सहायता भी मिलती थी। यह मेरे जीवन में प्रथम अन्तराल था जिसमें मुझे निर्धनता से राहत मिली। कक्षा स्पेशल 'ए' से १० तक मैं एक सुयोग्य छात्र तथा प्रत्येक कक्षा में मानीटर रहा। मैं गवर्नमेन्ट हाई स्कूल छात्रावास, बाँदा में रहता था, और कक्षा १० में मैं छात्रावास का मानीटर भी था। मैं अपनी ईमानदारी एवं सही हिसाब रखने के कारण छात्रावास में कई बार भोजनालय का मैनेजर बनाया गया था।

स्कूल और छात्रावास में मेरे अध्यापक, सहपाठी एवं छात्रावास के साथी मुझसे प्रेम करते थे, तथा हाईस्कूल तक की शिक्षा के दौरान मैं स्कूल का एक लोकप्रिय छात्र हो गया था।

हाई स्कूल तक की शिक्षा के दौरान, मैं एक अच्छा खिलाड़ी, स्पोर्ट्समैन तथा एथलीट हो गया था, और अपने जीवन में पहली बार मैंने सर्वश्रेष्ठ स्वास्थ्य की देन का आनन्द लिया। हाई स्कूल तक की शिक्षा के दौरान मैं स्कूल की प्रथम श्रेणी की हॉकी तथा फुटबाल टीम का खिलाड़ी था, और वालीबाल टीम का कैप्टेन था। खेलकूदों में मैंने वरिष्ठ (सीनियर) ऊँचीकूद व लम्बीकूद में प्रथम पुरस्कार, तीन टाँग की दौड़ में द्वितीय पुरस्कार, क्रिकेट की गेंद फेंकने में द्वितीय पुरस्कार तथा क्रास कन्ट्री दौड़ में विशेष पुरस्कार जीता था। मैं स्कूल का एक प्रमुख स्काऊट भी था। मैंने संकेत करने (Signalling) में प्रथम पुरस्कार तथा स्काऊटों का भोजन बनाने की प्रतियोगिता में रजत पदक प्राप्त किया था। इस प्रकार मैंने हाई स्कूल में हर प्रकार से उज्ज्वल छात्र जीवन का आनन्द लिया।

अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में मैं अपने खेतों में बुआई करने, फसल काटने, लाँक इकट्ठा करने, लाँक को सिर पर रखकर खलिहान

लाने, आदि में कठोर श्रम किया करता था। संक्षेप में, मैं घर पर तथा खेतों में सभी प्रकार के कठोर कृषि कार्य किया करता था। जब मैं टाऊन स्कूल तथा गवर्नमेन्ट हाई स्कूल में छात्र था और जब कभी मैं छुट्टियों में घर आता था तब तक मैंने यह काम करना जारी रखा। इस प्रकार यह कहना उचित होगा कि अपने प्रारम्भिक दिनों में मैंने एक निर्धन, कठोर परिश्रमी कृषक का जीवन व्यतीत किया जिसकी याद मुझे अब एक सुखद ताजगी देती है।

जून १९३० ई. में मेरा विवाह हुआ था। मेरी पत्नी का नाम सुधादेवी है। हमसे चार पुत्रों तथा पाँच पुत्रियों ने जन्म लिया। उनमें से केवल तीन पुत्रियाँ– मेहेर प्रभा, मेहेर ज्योति तथा मेहेर मनी–जीवित हैं। वे अब बड़ी और युवा हैं तथा उच्च शिक्षा प्राप्त हैं।

मैंने इण्टरमीडिएट बी.एन.एस.डी. इण्टर कालेज, कानपुर, उ.प्र. से उत्तीर्ण किया था, और कक्षा का श्रेष्ठ छात्र रहा था। हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् मैं पुनः निर्धनता की पकड़ में आ गया था। मुझे छात्रवृत्ति नहीं मिलती थी और मेरे माता-पिता मुझे मासिक खर्चे के लिये थोड़ी सी आर्थिक सहायता दे सकते थे। इसलिये मुझे अपने अध्ययन को जारी रखने के लिये गरीबी से कड़ा संघर्ष करना पड़ता था तथा सहायता के लिये अपने मित्रों एवं शुभचिन्तकों पर निर्भर रहना पड़ता था। मेरे पिता की मुझे उच्च शिक्षा दिलाने की प्रबल इच्छा थी, लेकिन गरीबी के कारण वह मेरे लिये कुछ भी करने में असहाय थे। वह उन दिनों गरीबी तथा पारिवारिक परिस्थितियों के कारण इतना अधिक दुखी हुये कि उन्होंने अपना मानसिक सन्तुलन खो दिया और पागल हो गये। वह अपने निधन के पूर्व तक उस असामान्य मानसिक स्थिति से चंगे नहीं हुये।

मेरी याददाश्त बहुत अच्छी थी। यदि मैं पूरे ध्यान से किसी चीज को दो या तीन बार पढ़ लेता था तो वह मुझे पूर्णरूप से याद हो जाती थी और मैं उसे अक्षरशः सुना सकता था। इस प्रकार की एक सुखद घटना उस समय घटित हुई जबकि मैं इण्टर का छात्र था। मेरे तर्कशास्त्र के प्रोफेसर ने तर्कशास्त्र की परीक्षा में मेरी उत्तर पुस्तिका जाँची और मेरे उत्तरों को

पाठ्य पुस्तक से अक्षरशः लिखा हुआ पाया। अतः जब वह कक्षा में परीक्षा का परिणाम घोषित कर रहे थे तो उन्होंने मुझसे पूछा, ''मिस्टर निगम, क्या तुमने पाठ्य पुस्तक से उत्तरों की नकल की है ?'' मैंने उत्तर दिया, ''नहीं श्रीमानजी, मैंने अपने सभी उत्तर ईमानदारी से अपनी याद से लिखे हैं।'' उन्होंने बड़े आश्चर्य के साथ मुझ पर विश्वास किया और बोले, ''तब तो तुमने बहुत आश्चर्यजनक याददाश्त पाई है। तुमने अर्धविराम तथा पूर्णविराम तक की गल्ती किये बिना पाठ्य पुस्तक से अक्षरशः उत्तर लिखे हैं।'' उनसे यह सुनकर पूरी कक्षा जोर से हँस पड़ी और कुछ छात्रों ने व्यंगपूर्ण आक्षेप किये। इस प्रकार मैंने वर्ष १९३२ में इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण किया।

अब मेरे अन्दर, किसी विश्वविद्यालय में उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने की उत्कट इच्छा का उदय हुआ, लेकिन इसके लिये मेरे पास कोई साधन नहीं थे। निर्धनता की पकड़ मेरे ऊपर हमेशा की तरह मजबूत थी। इसलिये मैंने सिलाई सीखने का निर्णय लिया और फिर धन की प्राप्ति के लिये शहर में एक सिलाई की दुकान में सिलाई का काम सीखना प्रारम्भ किया और साथ-साथ विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया। लेकिन, मेरी यह योजना विफल हो गई और उच्च शिक्षा की मेरी बलवती आकांक्षा पथ प्रदर्शन के लिये मुझे एक घनिष्ठ मित्र के पास ले गईं। उस समय वह लखनऊ विश्वविद्यालय का एक छात्र था, और मेरे हाई स्कूल के अध्ययनकाल से मेरा मित्र तथा शुभचिन्तक था। वह एक सम्पन्न परिवार का था। उसने मुझे लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने की सलाह दी और विश्वविद्यालय में मेरे शिक्षण शुल्क तथा अन्य आवश्यक खर्च को खुशी से अदा करने का प्रस्ताव रक्खा। तदनुसार वह मुझे अपने साथ लखनऊ ले गया और लखनऊ विश्वविद्यालय की बी.ए. कक्षा में अपने खर्चे पर मुझे प्रवेश दिलाया, जबकि मेरे एक दूर के रिश्तेदार से मेरे लिये मुफ्त आवास एवं भोजन का प्रस्ताव रक्खा। इस प्रकार मैं अगस्त १९३२ ई. में विश्वविद्यालय का छात्र हो गया।

विश्वविद्यालय में मैं अत्यन्त साधारण कपड़े पहिनकर कक्षा के एक कोने में बिल्कुल शान्त बैठा करता था। मेरे सहपाठी मुझसे आकर्षित नहीं मालूम पड़ते थे, क्योंकि उनमें से लगभग सभी धनी और ऊँचे परिवारों के

थे। लेकिन शीघ्र त्रैमासिक परीक्षा सम्पन्न हुई और उसका परिणाम कक्षा में सुनाया गया। मैंने हिन्दी में सर्वाधिक अंक तथा अंग्रेजी में और दर्शनशास्त्र में ६०% के लगभग अंक प्राप्त किये थे। इन परिणामों ने सम्पूर्ण कक्षा का तथा प्रोफेसरों का ध्यान मेरी ओर आकर्षित किया और मैं कक्षा में प्रमुख छात्रों में से एक हो गया। और आगे भी मैंने अपनी यह श्रेष्ठता बनाये रखी। मैंने वर्ष १९३४ में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की, और हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये जिसके लिये विश्वविद्यालय ने मुझे ''सर जार्ज लैम्बर्ट हिन्दी स्वर्ण पदक'' से पुरस्कृत किया।

मेरे विश्वविद्यालय के विद्यार्थी जीवन की एक घटना विशेष महत्व रखती है। जबकि मैं उन दिनों तक निर्धनता से संघर्ष कर रहा था, मैं अपने अन्दर अन्तरात्मा की आवाज इस आशय के लिये सुना करता था कि भविष्य में मैं असाधारण रूप से महान व्यक्ति बनूँगा और मेरे द्वारा सारपूर्ण महान कार्य होंगे। मैंने अन्तरात्मा की उस आवाज पर, यह सोचकर, कि महानता मेरे जैसे निर्धन व्यक्ति के पास कभी नहीं आ सकती, विश्वास नहीं किया। तिस पर भी, वह अन्तरात्मा की आवाज इतनी निश्चितरूप से और स्पष्ट थी कि मैं उसकी उपेक्षा नहीं कर सका। वह मुझमें दृढ़ रही और मेरे मस्तिष्क में अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न कर दिया। ठीक उसी अवधि के दौरान महात्मा गाँधी अपने हरिजनोद्धार कार्य के सम्बन्ध में कानपुर आये। इसलिये मैं उनसे अपनी अन्तरात्मा की आवाज का स्पष्टीकरण और उस पर राय जानने के लिये कानपुर गया, लेकिन महात्मा गाँधी के सचिवों ने मुझे अथवा मेरे लिखित विचार भी उनके पास तक पहुँचाने की अनुमति नहीं दी। मैं कानपुर से निराश वापिस लौट आया।

मुझे याद नहीं कि कब और कैसे वह अन्तरात्मा की आवाज शान्त हो गई, लेकिन उसकी सत्यता अब मुझको पर्याप्तरूप से स्पष्ट हो गई है। वह अन्तरात्मा की आवाज दुर्लभ सौभाग्य की एक निश्चित सूचना थी जिसको मुझे बाद में दैवी प्रियतम मेहेरबाबा के हाथों पाना था। उन्होंने दयालुता से अपने खुद के रूप में मुझे स्वीकार कर लिया और मुझे पूरे समय के लिये अपनी आफ़िस ड्यूटी तथा दैवी कार्य भी दिया। मेरे लिये प्रियतम अवतार मेहेरबाबा का एकमात्र दास होने से बढ़कर और क्या हो

सकता है ? और, जीवन पर्यन्त ईश पुरुष की दैवी विश्वव्यापी सेवा की तुलना में कौन सा कार्य महानतर एवं और अधिक सारभूत हो सकता है?

एक स्नातक होते हुए, मैं अब कोई व्यवसायिक शिक्षा ग्रहण करने की सोचता था। मैंने वकालत को चुना। इसलिये मैंने वर्ष १९३४ में आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध डी.ए.वी. कालेज कानपुर में एलएल.बी. में प्रवेश ले लिया। मेरा छोटा भाई मकुन्दलाल निगम, जोकि सन् १९५२ से बाबा के आदेश से मेहेर आस्ताना महेवा में रह रहा है, उस समय कानपुर से ११ मील दूर उन्नाव, उ.प्र. के एक पेट्रोल पम्प में नौकरी करता था। मैं उसके साथ रहता था और रोज शाम को एलएल.बी. कक्षायें पढ़ने के लिये कानपुर आया करता था। दिन के खाली समय में मैं अपने खर्चे हेतु पैसा कमाने के लिये छात्रों को ट्यूशन पढ़ाया करता था क्योंकि निर्धनता से मेरे संघर्ष का अब भी कोई अन्त नहीं था। मैं कठोर जीवन व्यतीत करता था। उस अवधि में निर्धनता से मेरा संघर्ष इतना बढ़ चुका था कि मैं एलएल.बी. प्रथम वर्ष का कोर्स तैयार नहीं कर सका और मैंने परीक्षा में उत्तीर्ण होने की आशा छोड़ दी। इसलिये अनुत्तीर्ण होने के कलंक से बचने के लिये मैं परीक्षा में सम्मिलित नहीं हुआ, और इस प्रकार वर्ष १९३४-३५ व्यर्थ गया। जीवन के कीमती समय का व्यर्थ जाना मेरे हृदय को अत्यधिक चुभता था और मैंने वकालत की पढ़ाई जारी रखने का अपना पूरा साहस एकत्र किया, और मैं एलएल.बी. की प्रथम वर्ष तथा अन्तिम वर्ष की परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। इस प्रकार मैं वर्ष १९३७ में वकालत में स्नातक हो गया।

अपने विद्यार्थी जीवन के इन अन्तिम वर्षों के दौरान मैंने अपने को ईश्वरोन्मुख तथा अधिक सुन्दर जीवन की ओर आकृष्ट महसूस किया। मैं महात्मा गाँधी के सत्य, अहिंसा और उनके निःस्वार्थ परोपकारी जीवन से प्रभावित हुआ था। मैंने अपने जीवन में सत्य और अहिंसा का आचरण प्रारम्भ किया। मैंने अपने ढँग से ध्यान के द्वारा कुछ मिनट के लिये नियमितरूप से प्रतिदिन वैदिक संध्या करना भी प्रारम्भ किया। मैं अपना ध्यान किसी स्थूल चीज पर केन्द्रित न करता था बल्कि सकल ब्रह्माण्ड के दृश्य पर केन्द्रित करने का प्रयास करता था। मैंने इसके लिये शान्ति और

आनन्द के लिये प्रार्थना की। इन आचरणों का परिणाम यह हुआ कि उन दिनों मुझमें क्रोध पूर्णतया लुप्त हो गया था। मैं पूरे समय आनन्ददायी शान्ति तथा सुख का–हमेशा प्रसन्न, मुस्कराता हुआ और प्रसन्नता से हँसता हुआ–रसास्वादन करता था। संघर्षपूर्ण जीवन के बावजूद, वह अल्प अवधि मेरे जीवन की बहुत सुखद अवधि थी।

## व्यवसायिक तथा सार्वजनिक जीवन

बी.ए., एलएल.बी. हो जाने के बाद मैं वकालत प्रारम्भ करने के लिये अपने जनपद हमीरपुर आया। और इसलिये मैं जुलाई १९३७ ई. में अपने परिवार के साथ हमीरपुर नगर (उ.प्र.) में रहने लगा। मैंने एक वरिष्ठ ऐडवोकेट के अधीन ६ माह का प्रशिक्षण पूरा किया और अप्रैल १९३८ ई. से मैंने एक वकील के रूप में वकालत प्रारम्भ कर दी। मैं इलाहाबाद हाई कोर्ट द्वारा एक वकील के रूप में पंजीकृत हो गया।

अपनी वकालत प्रारम्भ करने के समय मेरे पास धन नहीं था, न ही राजस्व कानून की आठ आने की एक छोटी सी पुस्तक के अतिरिक्त कानून की कोई किताबें थीं। अपनी वकालत के पहले महीने में मैंने ५ रु. या १० रु. कमाये और मैंने उस प्रथम धनोपार्जन से खुशी का अनुभव किया। अगले महीने मैंने कुछ अधिक रुपये कमाये, और मेरी आय का प्रत्येक महीने धीरे-धीरे नियमितरूप से बढ़ना जारी रहा। लगभग दो वर्ष में मैंने अपने परिवार का सुख से निर्वाह करने तथा कानून की आवश्यक पुस्तकें धीरे धीरे खरीद लेने के लिये पर्याप्त धन कमाना प्रारम्भ कर दिया।

यह ऊपर ही कहा जा चुका है कि मैं अपने विद्यार्थी जीवन के दौरान महात्मा गाँधी के जीवन तथा आदर्शों से प्रभावित हो गया था और मुझमें अपने देश की सेवा करने की इच्छा उत्पन्न हो गई थी। जब मैं वकालत पढ़ता था तो मेरा सम्पर्क उन्नाव, उ.प्र. के एक प्रमुख राजनैतिक नेता से हो गया था और मैंने वहाँ राजनीति में सक्रिय भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। इसलिये हमीरपुर में स्थायीरूप से जम जाने के तुरन्त बाद मैं स्थानीय काँग्रेस में शामिल हो गया और जिले की काँग्रेस की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेने लगा। मैंने काँग्रेस में महात्मा गाँधी के निष्ठावान अनुयायी के

रूप में कार्य किया। मेरा कार्य निःस्वार्थ था और यह देश के प्रति अपने विशुद्ध प्रेम के द्वारा प्रेरित था। मैंने इसकी प्रेरणा महात्मा गाँधी से प्राप्त की थी। अपनी वकालत में भी मैं गाँधीजी के सिद्धान्तों को आचरण में लाने का प्रयास करता था और सत्य के प्रति कठोरता से दृढ़ रहता था। मैंने झूठे मुकदमें लेने से इंकार कर दिया। तदनुसार अदालतों में और राजनैतिक क्षेत्र में मैं अपनी ईमानदारी और सच्चाई के लिये जाना जाने लगा।

अपने मुवक्किलों तथा अपने राजनैतिक कार्य से मेरा नाम जनपद में फैलने लगा और मैंने अनेक लोगों का विश्वास पाना प्रारम्भ कर दिया। शीघ्र १९४० ई. का स्वतन्त्रता आन्दोलन आ गया। उस स्वतन्त्रता आन्दोलन में मैं जिला सत्याग्रह का संचालक बनाया गया था। मैंने उस अवधि में वह कर्तव्य अपनी वकालत को छोड़कर निभाया और पूरे समय जिला काँग्रेस कार्यालय में जोकि जिले के एक सिरे पर स्थित था, कार्य किया। उस स्वतन्त्रता आन्दोलन में काम करने के कारण मुझे अप्रैल १९४१ ई. में न्यायालय द्वारा तीन माह का कठोर कारावास और २०० रु. जुर्माने का दण्ड दिया गया था। वह दण्ड भुगतने के बाद मैं अगस्त १९४१ ई. में कारागार से मुक्त कर दिया गया था।

मुझे भगवद् गीता पढ़ने से प्रेम था, और इसका प्रेम मेरे हृदय को स्पर्श करता था। भगवद् गीता के लिये उस प्रेम के कारण मैंने अपने कारावास के दौरान उसके पाँच या छः अध्याय कण्ठस्थ कर लिये थे। और अब भी मुझे भगवद् गीता से महान प्रेम है। उस समय अपने आध्यात्मिक जीवन में मैं भगवान कृष्ण का अपने एकमात्र गुरु एवं सर्वस्व के रूप में सम्मान किया करता था। बाद में मेरे जीवन में भगवान कृष्ण प्रियतम अवतार मेहेरबाबा के रूप में आ गये।

कारागार से मुक्त होने के बाद मैंने अपनी वकालत पुनः प्रारम्भ कर दी। राजनैतिक आन्दोलन में भाग लेने तथा कारावास भोगने के फलस्वरूप, मेरी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई और मैं हमीरपुर जिले का एक प्रमुख सार्वजनिक व्यक्ति हो गया। मेरे मुवक्किलों की संख्या व आमदनी तथा उसी के समानान्तर मेरे सार्वजनिक कर्तव्य भी बढ़ गये। मैं अनेक राजनैतिक अथवा

सामाजिक संगठनों और संस्थाओं के सदस्य अथवा कार्यालय सहायक के रूप में निर्वाचित हुआ। इस प्रकार मैंने जिले में अत्यधिक लोकप्रियता तथा सम्मान का अधिकार पाया।

समय बीतता गया और १९४२ ई. का राजनैतिक आन्दोलन पुनः आ गया। यह एक हिंसात्मक आन्दोलन था इसलिये मैंने इसमें सक्रिय भाग नहीं लिया। तो भी मुझे जनवरी १९४३ ई. में इस आन्दोलन के सिलसिले में सुरक्षा बन्दी के रूप में गिरफ्तार कर लिया गया और जिला कारागार हमीरपुर में रक्खा गया। मैं मई १९४३ ई. में कारागार से मुक्त किया गया।

उन दिनों मैं एक राजनैतिक साप्ताहिक हिन्दी समाचार पत्र ''पुकार'' का सह-सम्पादक भी हो गया जोकि नारायण प्रेस हमीरपुर से प्रकाशित होता था। मेरे सम्पादन ने समाचार पत्र को एक ऊँचे स्तर का कर दिया। समाचार पत्र ने राजनैतिक आन्दोलनों में उत्कृष्ट सेवायें दीं और इसलिये यह सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड तथा इसके पड़ोस में सुपरिचित तथा लोकप्रिय हो गया। इसके द्वारा मेरा प्रभाव दूर-दूर तक पहुँच गया।

अब मेरा व्यवसायिक कार्य, राजनैतिक गतिविधियाँ और मेरा सार्वजनिक सम्पर्क सुबह से शाम तक अत्यधिक व्यस्तता की ओर बढ़ते ही गये। मुझे प्रतिदिन सन्ध्या करने तथा भगवद् गीता पढ़ने अथवा दूसरी ईश प्रार्थनायें करने का भी समय नहीं मिलता था। यह मेरे हृदय को कष्ट दिया करता था और यद्यपि मेरी सामाजिक स्थिति और सम्मान सांसारिक क्षेत्र में विशेषरूप से बढ़ रहे थे, फिर भी मैं आध्यात्मिक रूप से उस जीवन से आन्तरिक असन्तोष अनुभव करता था। वह असन्तोष बढ़ता ही गया। वकालत मुझे बोझ के समान लगने लगी। मैं शान्तिपूर्ण जीवन के लिये आकांक्षा करने लगा। मैं ईश्वर तथा ईश भक्त जीवन से प्रेम करता था और राजनीतिक सभाओं में भी लोगों को उसी की शिक्षा दिया करता था। मैं एक अच्छा वक्ता था और श्रोताओं को अपने भाषण से प्रभावित कर सकता था। राजनीतिक सभाओं में मेरी इस प्रकार की शिक्षायें मेरे कई राजनीतिक साथियों को अच्छी नहीं लगती थीं। फिर भी, मैं अपने पथ पर आरूढ़ रहा।

अगस्त १९४७ ई. में हमारे देश ने राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली

जिसके लिये कड़ा संघर्ष किया जा रहा था, और उसकी प्राप्ति के साथ मेरी राजनीतिक आकांक्षायें समाप्त हो गईं। राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली गई थी, आगे क्या होना बाकी था ? १९४२ ई. के राजनैतिक आन्दोलन के दौरान मैंने सर्वप्रथम अवतार मेहेरबाबा का नाम सुना था। उस समय मैंने उनके प्रति आकर्षण नहीं महसूस किया था। लेकिन अत्यन्त निश्चित रूप से उनका आन्तरिक दिव्य कार्य मेरे अन्दर अज्ञातरूप से प्रारम्भ हो गया था। वह दिव्य कार्य मुझे उत्तरोत्तर राजनीतिक जीवन से खींचता रहा और उसने वर्ष १९४८ में मेहेरबाबा के साथ मेरा सीधा सम्बन्ध स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया जिनमें मैंने जीवन के सर्वोच्च आदर्शों एवं सर्वोच्च उद्देश्यों को पाया।

मैंने अपने को सम्पूर्णरूप से दैवी प्रियतम मेहेरबाबा को समर्पित कर दिया। उन्होंने दयालुतापूर्वक मेरा जीवन अपने में ले लिया और इसको वास्तव में जीने योग्य बना दिया। मैं बाबा के आदेशों से पहले ही विस्तार में अवतार मेहेरबाबा के साथ अपनी जीवन गाथा लिख चुका हूँ और उसको आस्ट्रेलिया के उनके प्रिय शिष्य फ्रान्सिस ब्रैबेजोन को भेज चुका हूँ। मैंने उसकी एक प्रति अवतार मेहेरबाबा के सेक्रेटरी श्री आदि के. ईरानी, किंग्स रोड, अहमदनगर, महाराष्ट्र को भी भेज दी है।

**केशव नारायण निगम**
अवतार मेहेरबाबा हमीरपुर केन्द्र
२१–१०–१९७० हमीरपुर–उत्तरप्रदेश।

जो अपना सर्वस्व मुझमें खो देते हैं
वे अपना सर्वस्व सदैव मुझमें पाते हैं।

— मेहेरबाबा

# vorkj egjckck d lkFk ejh thou xkFkk

## १९४२ ई. से १९४७ ई. तक

मैंने १९४२ ई. में प्रथम बार मेहेरबाबा तथा उनके अवतारत्व को उनके जन बाबादास से सुना था जो लोगों से सम्पर्क करते तथा मेहेरबाबा के बारे में बतलाते हुये देश में इधर-उधर घूमते-फिरते थे। वह हमीरपुर आये और बहुत से अन्य लोगों के साथ मुझसे भी सम्पर्क किया। मैं उस समय यहाँ एक वकील था और महात्मा गाँधी के निष्ठावान अनुयायी के रूप में इस जिले का एक उन्नतिशील लोकप्रिय राजनैतिक नेता था। दुनियावी जगत में महात्मा गाँधी मेरे पूज्य देव एवं नेता थे, जबकि मेरे अन्तःकरण में भगवान कृष्ण मेरे पूर्णरूपेण पूज्य गुरु अथवा ईश के रूप में – मेरी आत्मा के एकमात्र प्रियतम थे। स्वभाव से मैं अहिंसा, न्याय, ईमानदारी तथा सत्य से प्रेम करता था और मैं गम्भीरता से उनको अपनी वकालत और राजनैतिक जीवन में भी आचरित करने का प्रयास करता था।

मुझसे मेरे एकमेव पूज्य ईश्वर भगवान कृष्ण को सुनकर, बाबादास ने मुझे मेहेरबाबा का एक चित्र दिखलाया और मुझसे कहा–वह भगवान कृष्ण हैं जो अब मेहेरबाबा के इस मौजूदा स्वरूप में पृथ्वी पर अवतरित हुये हैं। मैं बाबादास की इस घोषणा से कठोरता के साथ मुस्कराया और घृणापूर्वक इसे अनसुना कर दिया, क्योंकि मेरी अज्ञानता ने उस समय मुझे मेहेरबाबा में मेरे प्रियतम भगवान कृष्ण की दिव्यता को पहिचानने नहीं दिया होगा। यही नहीं बल्कि मेरी समग्र चेतना इस घोषणा के विरुद्ध भड़क उठी और मैं अत्यधिक उत्तेजित हो गया।

बाबादास ने मुझे मेहेरबाबा के कुछ सुन्दर चित्र और किताबें दीं। मैंने उन किताबों को अपने घर में उदासीनतापूर्वक एक ओर रख दिया और उनको पलटने का प्रयास भी नहीं किया। और, चूँकि मेरे चिन्तन में अवतार

के आदर्श, बाह्यरूप में महात्मा गाँधी और आन्तरिक रूप में भगवान कृष्ण थे इसलिये मेरा हृदय किसी तीसरे अवतार को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। मेहेरबाबा के अवतारत्व के बारे में बाबादास की घोषणा ने मेरे अन्दर एक इतनी बड़ी प्रतिक्रिया उत्पन्न कर दी कि उस आक्रोश में मैंने एक दिन शाम को मेहेरबाबा के उन सुन्दर चित्रों को लोगों द्वारा पैरों से कुचले जाने के लिये आम सड़क पर फेंक दिया। यह ऐसी बुरी भावना थी जिससे मैंने पहली बार सभी प्रियतमों के प्रियतम मेहेरबाबा को अपने जीवन में स्वीकार किया।

मैं उस समय नहीं जानता था कि बाबा के चित्रों का मेरे द्वारा पैरों से कुचला जाना एक ऐसा पागलपूर्ण कार्य था जिसका कोई प्रभाव उनके अनन्त प्रेम एवं दयालुता पर नहीं पड़ेगा। तिस पर भी उन्होंने मुझे शीघ्र ही अपना प्रेमपूर्ण दैवी आलिंगन देने के लिये अपने हृदय की ओर खींच लिया और मुझे दैवी कार्य हेतु एक साधन के रूप में स्वीकार कर लिया।

आखिरकार समय बीतता गया। १० जनवरी १९४३ ई. को मैं भारत सुरक्षा अधिनियम २६ के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया और सुरक्षा बन्दी के रूप में हमीरपुर, उ.प्र. के जिला कारागार में रखा गया। मैं भारत के राजनैतिक आन्दोलन के सम्बन्ध में कारागार में रखा गया था। जेल में मेरे कैद रहने के दौरान हमारे जिले (हमीरपुर) के वरिष्ठ राजनैतिक नेता श्रीपति सहाय रावत भी जेल में बन्द थे। वह अगस्त १९४२ ई. से हिंसात्मक राजनैतिक आन्दोलन के सिलसिले में फरार थे जो आन्दोलन उस समय भारत में चल रहा था। फरार रहने के दौरान उन्होंने मेहेराबाद में मेहेरबाबा का दर्शन किया था। बाबा ने उनको जिले के अधिकारियों के सम्मुख आत्मसमर्पण करने के लिये आदेश दिया था और अपने कुछ निर्देशों का अनुसरण करने के लिये कहा था। इस प्रकार हम लोग १९४३ ई. में हमीरपुर की जिला जेल में एक साथ सुरक्षा बन्दी के रूप में रखे गये थे।

मेहेराबाद में मेहेरबाबा से मिलने के पश्चात् श्रीपति सहाय रावत वहाँ से इस दृढ़ विश्वास के साथ वापिस लौटे थे कि मेहेरबाबा मानवरूप में ईश्वर के अवतार हैं। वह मुझसे ईश-पुरुष मेहेरबाबा के साथ अपने मिलन

की कहानी का वर्णन सुनाया करते थे। मैं श्रीपति सहाय रावत के इस कथन से उत्तेजित हो जाया करता था कि मेहेरबाबा ईश्वर के अवतार हैं और मैं उनसे कहा करता था, ''मेहेरबाबा अवतार नहीं हैं। वह निठल्ले हैं और अपने को अवतार कहते हैं ताकि लोगों द्वारा इस प्रकार उनकी पूजा हो। महात्मा गाँधी अवतार हैं जो देश के लिये मर रहे हैं और उसके लिये सब कुछ त्यागकर कष्ट सह रहे हैं''।

मैंने ३१ मई १९४३ ई. को जेल से मुक्त होने के बाद अपना राजनीतिक और वकालत का जीवन पुनः प्रारम्भ कर दिया। मेरा राजनीतिक नेतृत्व जोर पकड़ रहा था और मेरी वकालत लगातार चमकती जा रही थी। बाबादास ने मेरा पता बाबा के आफ़िस अहमदनगर (महाराष्ट्र) भेज दिया था इसलिये मुझे वहां से समय-समय पर बाबा के गश्ती पत्र मिलते रहते थे। लेकिन मैं मेहेरबाबा के विरुद्ध इतना दुर्भावना से ग्रसित था कि लिफाफे पर अहमदनगर पोस्ट आफ़िस की मुहर देखकर मैं पत्र को पढ़ने की परवाह किये बिना लिफाफे को तुरन्त रद्दी कागजों में फेंक दिया करता था। आखिरकार, मैंने अपने राजनीतिक तथा वकालत के जीवन से एकसाथ असन्तोष महसूस करना प्रारम्भ कर दिया क्योंकि मौजूदा कानून और न्याय की व्यवस्था में मैंने सच्चाई और ईमानदारी का पूर्णरूप से आचरण कर पाना असम्भव पाया जबकि मौजूदा राजनीति ईमानदारी और सच्चाई को कोई मान्यता नहीं देती। इस प्रकार बढ़ते हुये मेरे राजनीतिक एवं वकालत के जीवन के साथ-साथ मेरे अन्दर असन्तोष तथा अन्तर्द्वन्द्व भी १९४७ ई. तक लगातार बढ़ता ही रहा। मैं अपनी शान्ति कायम नहीं रख सका।

## वर्ष १९४८ :

मेहेरबाबा के साथ मेरी जीवन गाथा में वर्ष १९४८ पहला सचमुच भाग्यशाली तथा अत्यधिक महत्वपूर्ण वर्ष था जब मेहेरबाबा ने मुझे अपने भौतिक स्वरूप के दर्शन दिये बिना अपने बाह्य एवं आन्तरिक सम्पर्क में खींचा था।

राजनीति के क्षेत्र में परमेश्वरी दयाल निगम, जो बाबा द्वारा अब 'पुकार' कहे जाते थे, मेरे घनिष्ठ साथी थे। हम लोग जिले की राजनीति

में अभिन्न जोड़ी के रूप में जाने जाते थे। हम लोग सम्मिलित रूप से ''पुकार'' नाम के एक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन करते थे। परमेश्वरी दयाल क्रान्तिकारी साम्यवादी विचारधारा के एक राजनैतिक कार्यकर्ता थे जबकि मैं महात्मा गाँधी का एक निष्ठावान अनुयायी था। अतः यह स्वाभाविक था कि हम लोग केवल एक निश्चित सीमा तक ही साथ-साथ काम कर सकते थे जब तक कि हमारे मूल सिद्धान्त न टकरायें। मैं अपने विचारों के साथ पुकार से समझौता नहीं कर सका। काँग्रेस जनों के साथ मेरे सम्बन्ध मेरी निष्कपट तथा स्वतन्त्र प्रकृति होने के कारण शिथिल होने लगे। इसलिये मेरे मित्र परमेश्वरी दयाल मुझे अपने वामपंथी क्रांतिकारी बन्धन में शामिल करने का प्रयास करने लगे जोकि मेरे स्वभाव के प्रतिकूल था। दोनों के इन बन्धनों से मुझे पृथक करने का समय तेजी से निकट आ रहा था। १९४८ ई. के प्रारम्भ में मैंने साप्ताहिक ''पुकार'' पत्रिका के सम्पादन कार्य से अपने को अलग कर लिया क्योंकि परमेश्वरी दयाल के तथा मेरे विचार और नीति सम्बन्धी मतभेद और अधिक समय नहीं बने रह सकते थे। परमेश्वरी दयाल को मेरे इस अचानक सम्बन्ध विच्छेद से धक्का लगा लेकिन मैं अपने स्थान पर दृढ़ रहा और वह पुनः मुझ पर विजय नहीं पा सके। इस प्रकार ''पुकार'' पत्रिका के साथ मेरे सम्बन्ध सदैव के लिये समाप्त हो गये।

अप्रैल-मई १९४८ ई. में, हमारे जिले में जिला परिषद के चुनाव होने थे। मेरे मित्र परमेश्वरी दयाल ने काँग्रेस के टिकट पर जिला परिषद की सदस्यता के लिए मुझे खड़े होने को इस आशा के साथ प्रेरित किया कि मैं जिला परिषद में काँग्रेस सदस्य के रूप में भी उनकी साम्यवादी नीति को अमल में लाऊँगा। यद्यपि मैंने पुकार से स्पष्ट रूप से कह दिया था कि यदि मैं जिला परिषद की सदस्यता के लिये काँग्रेस प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कर दूंगा तो १००% इसका निर्वाह करूँगा। इस पर परमेश्वरी दयाल बाह्यरूप से राजी हो गये थे। मैं जिला परिषद के सदस्य के रूप में निर्विरोध चुन लिया गया। मैंने वहाँ पूर्ण मनोयोग से काँग्रेस प्रतिज्ञा के लिए कार्य करना प्रारम्भ किया और मेरा प्रभाव निरन्तर बढ़ता ही रहा। इस प्रभाव ने परमेश्वरी दयाल को, राजनीति के क्षेत्र से मुझे अलग देखने के

लिये, जिस पर मेरा आधिपत्य था, व्याकुल कर दिया ताकि वह मेरे प्रभाव और उपस्थिति के द्वारा अपने राजनैतिक कार्य को अबाधित रूप से कर सकें।

११ मई १९४८ ई. को मुझे बाबा का गश्तीपत्र दिनांक ४ मई १९४८ मिला। आन्तरिक प्रेरणा से मैंने पहली बार उस लिफाफे को खोला और उस गश्तीपत्र को पढ़ा। उस गश्तीपत्र में बाबा ने पाँच आदेश दिये थे और उनके शिष्यों, भक्तों तथा अनुयायियों द्वारा २१ जून से २० जुलाई १९४८ ई. तक पाँच आदेशों में से किसी एक आदेश का पालन किया जाना था। इस अवधि को बाबा ने आध्यात्मिक संकट की अवधि घोषित किया था। मैं उस गश्तीपत्र के सभी पाँचों आदेशों से अत्यधिक प्रभावित हुआ और मैंने सोचा, ''मेहेरबाबा अवतार हों या न हों लेकिन उनके ये पाँचों आदेश सचमुच हितकर हैं और इनका पालन करना निश्चित रूप से कल्याणकारी होगा।'' इसलिये मेरी अन्तरात्मा ने स्वेच्छा से पाँचवें आदेश का पालन करना स्वीकार कर लिया जिसमें निम्नलिखित चार बातें थीं :–

(अ) पैसा मत छुओ। इसे अपने साथ भी न ले जाओ।

(ब) विपरीत लिंग के सदस्यों को मत छुओ। इसे ७ वर्ष से कम आयु के बच्चों पर लागू करने की आवश्यकता नहीं है।

(स) किन्हीं परिस्थितियों में किसी को मत मारो, यहाँ तक कि हँसी में भी नहीं।

(द) उत्तेजित किये जाने पर भी, किसी को अपमानित अथवा गाली मत दो।

मैंने स्वीकृतिपत्र को, जो उस गश्तीपत्र में संलग्न था, पाँचवें आदेश का पालन करने के लिये भरा और एक संक्षिप्त अग्रसारणपत्र (forwarding letter) के साथ मेहेरबाबा को भेज दिया, जो निम्नलिखित है :–

महामान्यवर श्री मेहेरबाबाजी,

अन्ततः आपका प्रकाश मुझे खींचता हुआ प्रतीत होता है। इसके पूर्व मैंने आपके गश्तीपत्रों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। लेकिन अब मैं

आपके मौजूदा गश्तीपत्र दिनांक ४-५-१९४८ के पाँचवें आदेश पर अत्यन्त स्वेच्छापूर्वक हस्ताक्षर करता हूँ और उपर्युक्त आदेश का पालन मैं शब्दशः, अत्यधिक ईमानदारी से तथा बिना किसी समझौते के करूँगा। मेरे लगभग ८ वर्ष की एक पुत्री है। मैं नहीं जानता कि मैं किस प्रकार उसको बिना छुये रह पाऊँगा क्योंकि वह मेरे साथ सोती है और जब मैं घर में रहता हूँ तो दिन के अधिकांश समय वह मेरे साथ रहती है। मैं इसमें आपकी मदद पर भरोसा रखता हूँ।

सर्वव्यापी आत्मा का अंश,
(हस्ता.) के.एन. निगम

इतना करने के बाद, मैं पहले की तरह अपने जीवन में निमग्न हो गया।

## बाबा की दैवी पुकार

अब इस प्रकार बाबा के गश्तीपत्र दिनांक ४-५-१९४८ के आदेश सं. ५ को पालन करने की स्वीकृति द्वारा मेरा अज्ञातरूप से मेहेरबाबा के साथ सम्बन्ध स्थापित हो गया था और १२ मई १९४८ के मेरे प्रथम पत्र द्वारा उन्होंने मेरे जीवन में सक्रिय रूप से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया हालांकि मैं अभी भी इससे अनजान था। बाबा के गश्तीपत्र दिनांक ४-५-१९४८ में उल्लिखित ३० दिन की अवधि प्रारम्भ होने के कुछ दिनों पूर्व मुझे बुन्देलखण्ड सम्भाग के नवनिर्मित विन्ध्य प्रदेश सरकार का ''सार्वजनिक सूचना निदेशक'' के पद का आमंत्रण प्राप्त हुआ। यह आमंत्रण मुझे विन्ध्य प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव ने तार द्वारा भेजा था। उस आमंत्रण को पाकर मैं पूर्णरूप से आश्चर्यचकित था क्योंकि न तो मैंने उसके लिये आवेदन पत्र दिया था और न उसके लिये किसी से अपनी इच्छा व्यक्त की थी। केवल इतना ही नहीं बल्कि मुझे उस पद की कुछ जानकारी नहीं थी और मेरा उस समय का राजनैतिक नेतृत्व एवं चमकती हुई वकालत इतनी उन्नति पर थी कि वह पद मुझे अपमानजनक प्रतीत होता था। इसलिये मैं उस दैवी आमंत्रण को स्वीकार करने में कोई आकर्षण महसूस करने की बजाय उसे अस्वीकार करने में अपना रुझान महसूस कर रहा था। किन्तु,

चूँकि बाबा की मौन मर्ज़ी इसके पीछे कार्य कर रही थी इसलिये परिस्थितियाँ मुझे विन्ध्य प्रदेश की राजधानी नौगाँव ले गईं जहाँ मैंने ठीक २१ जून १९४८ को उस पद के नियुक्ति आदेश को स्वीकार करने के लिये अपने को सफलतापूर्वक प्रवृत्त पाया। यह वही तारीख थी जिससे बाबा के पाँचवे आदेश का पालन प्रारम्भ करना था। मैंने उस तारीख के नियुक्ति पत्र को लिया और १ जुलाई १९४८ ई. को सार्वजनिक सूचना निदेशक के पद का कार्यभार ग्रहण कर लिया।

कुछ समय बाद मुझे मालूम हुआ कि इस पद के आमंत्रण के पीछे मेरे मित्र परमेश्वरी दयाल का हाथ था क्योंकि वह अपने राजनीतिक उद्देश्य के लिए मुझे जिले से दूर करना चाहते थे। उस पद को स्वीकार करने से मेरे राजनीति तथा परमेश्वरी दयाल के साथ राजनैतिक गठबन्धन के लगाव अच्छाई के लिये टूट गये। यह मेरे जीवन में एक आकस्मिक और पूर्ण परिवर्तन था।

२१ जून १९४८ ई. मेरे जीवन की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तारीख थी। मैंने उसी तारीख से बाबा के आदेश का पालन करना प्रारम्भ किया और उसी तारीख को मुझे दैवी प्रदत्त पद का नियुक्ति पत्र मिला। वह मेरी पुरानी ज़िन्दगी तथा बाबा के साथ मौजूदा ज़िन्दगी के बीच का भाग्यशाली सीमाचिन्ह था। यह मेरे जीवन में मोड़ बिन्दु था।

## मौन चेतावनी के साथ प्रारम्भ

इस प्रकार मेहेरबाबा के साथ मेरा सक्रिय सम्पर्क प्रारम्भ हुआ। जब मैं पूर्व उल्लिखित नियुक्ति पत्र के साथ नौगाँव से हमीरपुर वापिस लौटा तो मेरी पत्नी ने विशेषरूप से प्रसन्नता महसूस की क्योंकि वह हमीरपुर में मेरे वकालत तथा राजनीति में अत्यधिक तल्लीन रहने के कारण ऊब गई थी। मैंने अपने नये धन्धे का कार्यभार ग्रहण करने हेतु नौगाँव जाने के लिये हमीरपुर में अपने धन्धों को शीघ्रता से समाप्त करना प्रारम्भ कर दिया। मेरी पत्नी बच्चों के साथ तुरन्त मेरे गाँव महेवा चली गई ताकि नौगाँव में मेरे सुव्यवस्थित होने पर वह सीधे वहीं पहुँच जाय। मेरे भरपूर प्रयास करने के बावजूद वे लोग बाबा के गश्तीपत्र दिनांक ४ मई १९४८

में दी गई ३० दिन की अवधि की समाप्ति तक नौगाँव नहीं आ सके। बाबा ७ वर्ष से अधिक उम्र की मेरी सबसे बड़ी लड़की को, उस अवधि के दौरान मुझसे दूर रखकर, उसे न छूने में निश्चितरूप से मेरी मदद कर रहे थे, जिसके लिए मैंने अपने दिनांक १२ मई १९४८ के पत्र में उन पर अपना विश्वास प्रकट किया था। जैसा मैंने बाबा से चाहा था उन्होंने मेरी सहायता की।

इस प्रकार, मेहेरबाबा ने अपने दि. ४ मई के गश्तीपत्र के पाँचवें आदेश का पालन करने में उनकी ओर से जो सहायता सम्भव थी वह उन्होंने मुझे प्रदान की। किन्तु मैंने अपनी ओर से जानबूझ कर दो बार वादा तोड़ा जो वादा मैंने बाबा से उनके पाँचवें आदेश का शब्दशः, अत्यन्त विश्वसनीयता एवं बिना किसी शर्त के पालन करने का किया था। क्योंकि अपने जीवन की उस अवस्था में मैं अपने वादे को शत प्रतिशत निभाने की कीमत नहीं जानता था जिसे मैंने बाद में मेहेरबाबा के साथ अपने निरन्तर सम्पर्क से सीखा। नौगाँव के लिये प्रस्थान करते समय मैंने जानबूझ कर १४ वर्ष की उम्र की एक लड़की से प्रेमपूर्ण नमस्ते के प्रतीक स्वरूप अपने मस्तक पर तिलक लगवाया और फिर उस पर स्नेहपूर्वक हाथ फेरा तथा नौगाँव की अपनी यात्रा के दौरान अपने साथ पैसा भी ले गया और अपने हाथ से उस पैसे को छुआ। मैंने ये दोनों काम यह भलीभांति जानते हुए किये कि यह बाबा के आदेश का उल्लंघन था जिसका शत प्रतिशत पालन करने का मैंने वादा किया था।

मेहेरबाबा से स्वेच्छापूर्वक किये गये वादे की दोनों बातों का मेरे द्वारा जानबूझ कर उल्लंघन करने के तुरन्त बाद मेरे दाहिने हाथ की हथेली में एक फोड़ा हो गया। यह फोड़ा उसी हाथ की हथेली में हुआ जिस हाथ से मैंने १४ वर्ष की लड़की के स्नेहपूर्वक हाथ फेरकर तथा पैसे को छूकर वादे का उल्लंघन किया था। भरसक इलाज के बावजूद वह फोड़ा ठीक नहीं हुआ तथा उससे मुझे रात दिन भयंकर पीड़ा होने लगी। अपने हाथ में उस फोड़े के होते हुये मैंने नौगाँव (बुन्देलखण्ड) में विन्ध्य प्रदेश सरकार के सार्वजनिक सूचना निदेशक के पद का कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। मेरा दाहिना हाथ फोड़े के कारण सूज गया था, और अन्ततः मुझे १२

जुलाई १९४८ को नौगाँव के सिविल अस्पताल में उस फोड़े का आपरेशन कराना पड़ा। बाबा के उक्त आदेश के पालन की अन्तिम तिथि २० जुलाई १९४८ के बीत जाने के बाद भी घाव भरता रहा।

## दैवी उपहार

मेहेरबाबा के गश्ती पत्र के पाँचवें आदेश के पालन की उसी भाग्यशाली अवधि के दौरान मुझे श्री आदि. के. ईरानी से उनके पत्र दिनांक ९-७-१९४८ के साथ जीन एड्रियल कृत 'अवतार' नामक ग्रन्थ का वी.पी. पार्सल प्राप्त हुआ। वह पत्र इस प्रकार था :–

''श्री बाबा के निर्देशानुसार, मैं आज आपको अमरीका में मुद्रित जीन एड्रियल कृत 'अवतार' नामक ग्रन्थ की एक प्रति ११ रु० (१० रु० मूल्य १ रु० डाक खर्च) मूल्य की वी.पी.पी. से भेज रहा हूँ।

''यह ग्रन्थ आपको बाबा की तीव्र इच्छा से भेजा जा रहा हैं। यह असामान्य बात है कि एक प्रभु अपनी ओर से अपने भक्त से एक ग्रन्थ खरीदने की चाह करता है और इसलिये उसकी यह चाह उस ग्रन्थ को केवल पढ़ने की अपेक्षा कहीं अधिक गूढ़ अर्थ रखती है। यह एक बहुमूल्य वस्तु है अतः वी.पी. पार्सल अवश्य स्वीकार करें।

''बाबा के आशीर्वाद के साथ....''

वी.पी. पार्सल तथा श्री आदि के. ईरानी के उपर्युक्त शब्दों ने मुझे अत्यधिक उत्तेजित कर दिया। मेहेरबाबा के प्रति दुर्भावना से ग्रसित होने के कारण मैंने सोचा कि वह और श्री आदी मुझसे पैसा कमाने का धन्धा कर रहे हैं और साथ-साथ मुझे यह भी सिद्ध करना चाहते हैं कि मेहेरबाबा अवतार हैं, और इस प्रकार वे मुझे दोतरफा बेवकूफ बनाना चाहते हैं। उत्तेजना के उसी क्षण में मैंने वी.पी. पार्सल को न लेने का प्रायः निर्णय सा कर लिया था किन्तु अगले ही क्षण मैंने अन्तःप्रेरणा से यह तय किया कि वी.पी.पी. का सूचना पत्र तो ले लूँ और पार्सल को लेने या न लेने का निर्णय बाद में शान्त चित्त से करूँ। बाद में, अपनी सामान्य अवस्था के दौरान २० जुलाई १९४८ ई. को वी.पी. पार्सल को ले लेने की अन्तःप्रेरणा हुई इसलिये

गश्तीपत्र की अन्तिम तिथि २० जुलाई १९४८ ई. मेरे द्वारा बाबा के आदेश पालन की प्रथम तिथि भी हो जाने के कारण मेरे लिये सदैव पुण्य स्मृति की तिथि मानी जा सकती है।

मैंने 'अवतार' ग्रन्थ को पढ़ना प्रारम्भ किया और अगस्त १९४८ ई. के प्रारम्भ तक इसको एकबार पढ़कर समाप्त कर दिया। इसके अध्ययन ने मेरे अहंकार को वेध दिया और मुझे पूर्णरूप से एक ऐसे नये जगत में प्रवेश कराया जिसमें ''मेरे अब तक के तिरस्कृत मेहेरबाबा'' मेरे जीवन के सर्वस्व के रूप में मेरे समक्ष गुलाब की तरह देदीप्यमान थे। मेरे एकमात्र दैवी प्रियतम, जो अभी तक मेरे जीवन के सभी क्रियाकलापों में अप्रकटरूप से रहे तथा अज्ञातरूप से मेरे जीवन का संचालन करते रहे। 'अवतार' के अध्ययन से मुझे मेहेरबाबा के अवतार होने में पूर्ण एवं दृढ़ विश्वास हो गया। मुझे आन्तरिक रूप से यह अटूट विश्वास हो गया कि मेरा पहली बार बाबा के गश्तीपत्र दि. ४-५-१९४८ को पढ़ना और स्वेच्छापूर्वक उसके पाँचवें आदेश के शत प्रतिशत पालन करने के वादे के साथ हस्ताक्षर करना, मेरी जानकारी के बिना विन्ध्य प्रदेश सरकार के सार्वजनिक सूचना निदेशक के रूप में मेरी अप्रत्याशित एवं आकस्मिक नियुक्ति, मेरे परिवार (विशेषकर मेरी ७ वर्ष से अधिक उम्र की पुत्री) का बाबा के गश्तीपत्र की ३० दिन की सम्पूर्ण अवधि में मुझसे दूर रहना, और स्वयं परमात्मा से अपने किये वादे के उल्लंघन के विरुद्ध दयापूर्ण चेतावनी के रूप में मेरी दाहिनी हथेली में फोड़ा होना, ये सब अस्त व्यस्त घटनायें नहीं थीं बल्कि मेहेरबाबा की दैवी योजना के अन्तर्गत थीं। मेरी सम्पूर्ण भक्ति और प्रेम तथा सर्वस्व अब ईश-पुरुष प्रियतम मेहेरबाबा के लिये समर्पित है, और वह मेरे जीवन तथा उसके क्रियाकलापों के एकमात्र केन्द्र बिन्दु हो गये क्योंकि उनमें मैंने पूरे विश्वास और स्वाभाविक रूप से अपने जीवन का लक्ष्य देखा है। मेरा आन्तरिक अहं स्वेच्छापूर्वक प्रेम में मेहेर बाबा को समर्पित हो गया और उस समर्पण में मैंने असली शान्ति का अनुभव किया। मेरा जीवन पूर्णरूप से मेहेरबाबा की ओर मुड़ गया।

मैं अब अत्यन्त पश्चाताप एवं दुख के साथ याद करने लगा कि मैंने किस प्रकार दुर्भावनाग्रस्त होकर १९४२ ई. में लोगों द्वारा पैरों से कुचले

जाने के लिये अपने प्रियतम के चित्रों को आम सड़क पर फेंक दिया था। मैंने उनको निर्दयतापूर्वक पैरों से कुचले जाने में कोई कसर नहीं उठा रखी थी, जबकि दूसरी ओर उन्होंने मुझ जैसे को अपना स्नेहपूर्ण दैवी आलिंगन देने के वास्ते तथा मुझको ऊँचा और ऊँचा उठाने के लिए स्वयं हर प्रकार के कष्ट को सहन किया। मेरा वह उन्मादपूर्ण कार्य मेरे हृदय को हमेशा कष्ट देता है और उसका वही प्रभाव आज भी है। इसके लिये मैं बाबा से क्षमायाचना करने का साहस करने में कभी समर्थ नहीं हो सका, यद्यपि वैसा करने की मैंने कई बार उत्कट इच्छा की। अब इस लेख के माध्यम से मैं अपने उस निर्दयतापूर्ण कार्य के लिये बाबा के चरण कमलों में अपना गहरा पश्चाताप व्यक्त करता हूँ तथा क्षमायाचना करता हूँ और मैं बाबा से उनकी स्नेहपूर्ण क्षमा चाहता हूँ ताकि मैं उस दीर्घकालीन कष्ट से मुक्ति पा सकूँ।

## नया अध्याय

इस प्रकार भगवान मेहेरबाबा के दिव्य जगत में मेरे जीवन का नया अध्याय अन्तिम अध्याय के रूप में प्रारम्भ हुआ जैसा मैंने इसको महसूस किया और अब भी महसूस करता हूँ। ३० दिनों की अवधि (२१ जून से २० जुलाई १९४८ ई. तक) की समाप्ति के पश्चात २६ जुलाई १९४८ ई. को मेरी पत्नी और बच्चे नौगाँव पहुँच गये, और उनके आने के बाद तुरन्त मेरी पत्नी गम्भीररूप से बीमार पड़ गईं। वह इतनी गम्भीर रूप से बीमार हो गईं कि सिविल अस्पताल के प्रसिद्ध डाक्टर उसके स्वस्थ होने की आशा ही छोड़ते से जान पड़े। मैंने अपने को असहाय अनुभव किया परन्तु प्रियतम मेहेरबाबा पर विश्वास और भरोसे के कारण अपने को उतना ही आश्वस्त भी अनुभव किया। असहायता के उस क्षण में मैंने अपनी पत्नी को ''अवतार'' ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर छपे बाबा के चित्र को दिखलाया और उससे कहा, ''देखो ! वह साक्षात् भगवान हैं जो अवतार के वेश में इस पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं। उनका दर्शन करो। जब कभी तुम अपनी बीमारी की हालत में गिरावट महसूस करना तो तुरन्त उनका दर्शन कर लेना।'' फिर मैंने ''अवतार'' ग्रन्थ उसकी तकिया के पास रख दिया। मेरे

अधीनस्थ एक समाचार पत्र के लेखक, शोभाचन्द्र जोशी ने जो होम्योपैथिक जानते थे, मेरी पत्नी का होम्योपैथिक इलाज प्रारम्भ किया, और ८-१० दिन में वह पूर्णरूप से अच्छी हो गईं। बाबा की दिव्य कृपा का ऐसा जादू था, जिसने प्रियतम मेहेरबाबा में मेरे नवजात विश्वास को मजबूत करने के अतिरिक्त, मेरी पत्नी के हृदय में भी उनके प्रति गहरा विश्वास जागृत कर दिया, ताकि एक ही दैवी मार्ग पर हमारे जीवन के दोनों पहिये बिलकुल प्रारम्भ से निर्विघ्नतापूर्वक एकसाथ चलना प्रारम्भ कर दें। हमारे जीवन की यह सुखमय यात्रा हम दोनों पर हमेशा बाबा के महान आशीर्वाद के रूप में सिद्ध हुई है।

''अवतार'' ग्रन्थ मेरे लिए अद्वितीय ''पूज्य धरोहर'' हो गया क्योंकि प्रियतम मेहेरबाबा ने खुद अपनी ओर से मुझे यह ग्रन्थ भेजकर अभी तक बिना अपना भौतिक दर्शन दिये अपनी यथार्थता के प्रति मुझे जागृत कर दिया। मैंने इसका हिन्दी अनुवाद करने की अन्तःप्रेरणा महसूस की। अतः मैंने बाबा को १९ अगस्त १९४८ ई. को रक्षाबन्धन के दिन अपनी भूतकाल की कहानी का संक्षेप में वर्णन करते हुए तथा उनकी दैवी सेवा में ''अवतार'' ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद करने की उनकी अनुमति मांगते हुये ६ पेज का टाईप किया हुआ लम्बा पत्र भेजा। मैंनें उस पत्र की एक प्रति जीन एड्रियल के लिये भी साथ में रख दी।

''अवतार'' ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद करने की बाबा की अनुमति मुझे विदर्भ महाविद्यालय अमरावती के दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर डा. सी.डी. देशमुख, एम.ए. पीएच.डी., के द्वारा प्राप्त हुई, जिन्हें बाबा ने मेरे हिन्दी अनुवाद की प्रगति पर ध्यान रखने के लिए कहा था। मैंने उस हिन्दी अनुवाद के लिये बाबा की अनुमति पाकर अत्यन्त आनन्द का अनुभव किया। डा. सी.डी. देशमुख ने मुझे अपने पत्र में लिखा था :

''मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि आपने अवतार की सेवा करने का निर्णय ले लिया है। प्रेम और सेवा के द्वारा आप उसे ईश्वर के अवतार के अलावा कोई दूसरा नहीं अनुभव करेंगे। यह हमारा निजी अनुभव रहा है।''

''रहस्यमय रीतियों द्वारा वह स्वयं हमसे सम्पर्क करता है और वह सम्पर्क हम पर उसकी कृपा है। आप निश्चितरूप से वर्णनातीत भाग्यशाली हैं।''

.....''मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आप एक उत्कृष्ट कड़ी के रूप में मानवजाति की सेवा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने जा रहे हैं जिसे आपने अब श्री मेहेरबाबा के प्रति आत्मसमर्पण के द्वारा स्थापित किया है। आपका विश्वास आपको आध्यात्मिकता के उच्च स्तरों तक ले जायगा।''

मुझे दि. २-६-१९४८ को मेहेराबाद से जीन एड्रियल का दि. २६ अगस्त १९४८ का पत्र मिला था, जिसमें उन्होंने लिखा था :

''अवतार'' ग्रन्थ के पढ़ने से आप में हुई प्रतिक्रिया एवं उसका हिन्दी में अनुवाद करने की आपकी इच्छा के सम्बन्ध में अभी हाल में प्रियतम बाबा को लिखा आपका पत्र पढ़कर मुझे बड़ा आनन्द मिला। कुछ समय पहले मुझे ज्ञात हुआ है कि बाबा ने इस ग्रन्थ का भारतीय भाषा में अनुवाद करने की इच्छा प्रकट की थी और मैं आपसे बहुत खुश हूँ क्योंकि आप उनमें से एक हैं जिसे इस कार्य के लिये उन्होंने आकर्षित किया है। मैं विश्वास कर सकती हूँ कि आपका यह अनुवाद कार्य आपको प्रियतम प्रभु के इतने निकट खींचने में समर्थ होगा जितना इस ग्रन्थ ने मेरे साथ किया था। इससे अधिक आकांक्षा मैं किसी के लिये नहीं कर सकती। और चूँकि आप एकमात्र ऐसे हैं जिसे उसने इस महत्वपूर्ण कार्य के लिये चुना है अतः मुझे विश्वास है कि आप इस कार्य को भली प्रकार कर सकेंगे।''

जीन एड्रियल उस समय मेहेराबाद में उपस्थित थीं।

६ सितम्बर १९४८ ई. को मुझे अपने पत्र दिनांक १९-८-१९४८ के उत्तर में श्री आदि के. ईरानी के द्वारा बाबा का पहला पत्र प्राप्त हुआ। आदीजी ने मुझे सूचित किया कि बाबा आपके पत्र की बातों को सुनकर बहुत प्रसन्न हुये। इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने आपको ''अवतार'' ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद करने की अनुमति दी और आपको अपना आशीर्वाद दिया। अहा! मैं अपने प्रियतम मेहेरबाबा के जगत के इन सभी सन्देशों को पाकर वर्णन से परे प्रसन्न था।

## 'अवतार' ग्रन्थ का अनुवाद

मैंने नौगाँव में १-६-१९४८ ई. को 'अवतार' ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद करना प्रारम्भ कर दिया। नवनिर्मित विन्ध्य प्रदेश राज्य के संगठन का कार्य अब भी जारी था अतः मुझे वहाँ करने के लिये अधिक कार्य नहीं था। मुझे अनुवाद कार्य करने के लिये अधिक समय मिला और मैंने उस महत्वपूर्ण कार्य के लिये इस समय को प्रामाणिकता से लगाया। विन्ध्य प्रदेश की बुन्देलखण्ड एवं बघेलखण्ड इकाइयाँ अपनी राजधानी रीवा के साथ शीघ्र संयुक्त होकर एक हो गईं। इसलिये मैं २५-६-१९४८ को अपने सम्पूर्ण कार्यालय के साथ रीवा चला गया। यहाँ भी मैंने उस अनुवाद कार्य को दिन रात जारी रखा, और उसे २६ मई १९४९ ई. को समाप्त कर दिया।

बाद में इसका अनुवाद मेरे द्वारा सितम्बर १९५५ से सितम्बर १९५६ ई. तक की अवधि में हिन्दी मासिक पत्रिका 'मेहेर पुकार' में श्रृंखला में प्रकाशित किया गया था। उस अनुवाद कार्य की समाप्ति पर मैंने जीन एड्रियल तथा डॉ. सी.डी. देशमुख के शब्दों में निहित सत्य को महसूस किया जिसे मैंने उन लोगों से १९४८ ई. में अनुवाद कार्य के बिलकुल प्रारम्भ में प्राप्त किया था।

## बाबा-प्रेम का प्रसार

१२-६-१९४८ ई. को मेरे अन्तरंग मित्र मदन मोहन लाल अग्रवाल मेरे पास नौगाँव आये थे। उन्होंने 'अवतार' ग्रन्थ को ध्यान से परखा और मेरी फाइल में बाबा तथा उनके प्रेमियों के साथ मेरे पत्र व्यवहार को पढ़ा तथा वह भी मेरे माध्यम से बाबा प्रेम से संक्रमित हो गये। उन्होंने तत्काल मेरे माध्यम से 'अवतार' ग्रन्थ की एक प्रति मँगाने का आदेश भेज दिया और बाबा के गहरे प्रेमी हो गये। आजकल वह आगरा (उ.प्र.) में बाबा के प्रमुख प्रेमी एवं कार्यकर्ता हैं और तभी से वह मुझसे नियमित सम्पर्क बनाये हुए हैं।

## रीवा-यात्रा

ऊपर वर्णन किया जा चुका है कि नवनिर्मित विन्ध्य प्रदेश राज्य की बुन्देलखण्ड एवं बघेलखण्ड इकाइयों को उनकी रीवा राजधानी के साथ संयुक्तरूप से एक में कर दिया गया था। अतः अब हमें नौगाँव राजधानी से नई राजधानी रीवा के लिये प्रस्थान करना था। मैंने अपना कार्यक्रम २५ सितम्बर १९४८ ई. को बड़े तड़के नौगाँव से रीवा जाने के लिये निश्चित कर लिया था। किन्तु हमारे प्रस्थान करने की सन्ध्या में बाबा ने मेरे सामने एक परीक्षा रखी क्योंकि २४ सितम्बर को मेरा छोटा पुत्र सुभाष गम्भीररूप से बीमार हो गया और यह स्वाभाविकरूप से हमारे लिये महान चिन्ता का कारण हो गया। मेरे मित्रों और शुभचिन्तकों ने मुझे मेरे पुत्र सुभाष की बीमारी की ऐसी हालत में २५ सितम्बर को नौगाँव से जाने की सलाह नहीं दी। लेकिन मैं अपना कार्यक्रम निरस्त करने के लिये तैयार नहीं था, क्योंकि मुझे बाबा की कृपा तथा आन्तरिक सहायता पर पूरा विश्वास था और इसलिये मैंने उनको जवाब दिया, ''मैं अपना कार्यक्रम निरस्त नहीं करूँगा। मुझे बाबा पर पूरा विश्वास है। वह हमारी प्रत्येक चीज़ पर ध्यान देंगे।'' बाबा पर इस विश्वास के साथ मैं २४ तारीख को बिस्तर पर चिन्तामुक्त सो गया। २५ सितम्बर को बड़े तड़के जबकि मैं उस समय भी जड़वत् निद्रा में था, प्रियतम बाबा मेरे सामने स्वप्न में प्रकट हुये। वह मुझसे अत्यन्त स्नेहपूर्वक मिले और मुझ पर बेहद प्रसन्नता प्रकट की। उन्होंने मुझे रीवा की यात्रा के लिये अत्यन्त स्नेहपूर्ण आशीर्वाद दिया और संकेत किया कि सब अच्छा होगा। स्वप्न लोक में अवतार मेहेरबाबा के साथ मेरी इस सर्वप्रथम मुलाकात से मेरा सर्वस्व अत्यन्त हर्ष से सराबोर हो गया। इस जीवन में मेरी यह प्रथम भाग्यशाली दैवी मुलाकात थी। उसी खुशी में मैं जागा और तुरन्त अपनी पत्नी से बताया, ''सुभाष के बारे में चिन्ता मत करना। उसके साथ कुछ भी कष्टदायी घटित नहीं होगा। बाबा अभी मुझे स्वप्न में मिले हैं और मुझे अपना प्रेम और आशीर्वाद दिया है।''

अतः मैंने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ट्रक में अपना निजी सामान तथा अपने कार्यालय का भी सब रिकार्ड लदवा दिया और बड़े तड़के रेलगाड़ी से जाने के लिये हरपालपुर पहुँच गया। मेरे परिवार में मेरी पत्नी,

८ वर्ष की बड़ी पुत्री मेहेर प्रभा, ४ वर्ष की पुत्री मेहेर ज्योति तथा बीमार पुत्र सुभाष थे। हम लोग हरपालपुर में सुभाष को उसी बीमारी की हालत में लेकर रेलगाड़ी में बैठ गये। हमें २६ सितम्बर की सुबह आंशिक रूप से रेल द्वारा तथा आंशिक रूप से बस द्वारा यात्रा करके रीवा पहुँचना था। बाबा का आशीर्वाद सत्य सिद्ध हुआ क्योंकि सुभाष रेलयात्रा के दौरान पूर्णरूप से चंगा हो गया। हम उसे एक होम्योपैथिक दवा दे रहे थे। हमने अन्तस्तल में भी महसूस किया कि पूरी यात्रा में बाबा हमारे साथ थे।

हम लोग २६ सितम्बर १९४८ ई. को सुबह रीवा पहुँच गये तथा अपना सामान स्थानीय धर्मशाला में रख दिया क्योंकि हमें अभी एक उपयुक्त मकान प्राप्त करना था। उस समय रीवा में मकान मिलना हमारे लिये एक समस्या थी, किन्तु इस कार्य में भी बाबा की कृपा ने हमारी सहायता की और हमें रहने के लिये घोघर नदी के किनारे, घोघर मार्ग के बगल में तथा घोघर मुहल्ले में एक महल सदृश इमारत मिल गई। इस मकान का गृहस्वामी इस मकान को किराये पर देने के लिये अनेक लोगों को इनकार कर चुका था, लेकिन मुझे उसने अपना मकान एक भी शब्द कहे बिना तुरन्त किराये पर दे दिया, मानो वह इस मकान को मेरे लिये सुरक्षित किये था ! वास्तव में यह हमारे लिये एक अत्यन्त सुविधापूर्ण एवं आरामदायक मकान था।

## बाबा की नज़र

बाबा के प्रेम की चिनगारी ने मेरे हृदय को गहराई से स्पर्श किया था, जिससे मैं उनके और निकट खिंच रहा था। बाबा की सेवा करने की महान अभिलाषा प्रत्येक क्षण मेरे हृदय में उमड़ रही थी। यद्यपि मैंने अभी तक बाबा के भौतिक शरीर का दर्शन नहीं किया था तो भी वह मेरे जीवन का सर्वस्व हो गये थे। मुझे बाबा का कार्य एकमात्र यथार्थ एवं महत्त्वपूर्ण कार्य प्रतीत हुआ तथा अन्य सभी कार्य मुझे मिथ्या एवं मायावी प्रतीत हुये। मुझे बाबा से भौतिक सम्पर्क करने की लालसा हुई जिसे मैंने रीवा पहुँचने के बाद रोज सुबह उनको एक पत्र लिखने के द्वारा व्यक्त करना प्रारम्भ किया। मैंने ऐसा २६ सितम्बर १९४८ ई. से १० अक्टूबर १९४८ ई. तक

किया। मुझे बाबा के सेक्रेटरी आदि के. ईरानी से अपने कुछ पत्रों के उत्तर में एक पत्र मिला जिसमें मेरे २६ सितम्बर से ४ अक्टूबर तक के पत्रों का उत्तर समाहित था। बाबा ने मेरे पत्रों की बातों पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की थी और मुझे उनको महीने में एक या दो बार पत्र लिखने की अनुमति दी थी। अपने पत्रों में आदि के. ईरानी ने मुझे सूचित किया था, ''बाबा कहते हैं कि आप और आपकी प्रिय पत्नी किसी चीज़ के बारे में चिन्ता न करें। वह अपनी 'नज़र' आप दोनों पर तथा आपके बच्चों पर रखते हैं।'' भगवान मेहेर बाबा से उनकी दैवी 'नज़र' प्राप्त करके हम कितना खुश थे! एक 'नज़र' – जिसे पाने के आकांक्षी इतनी उत्सुकतापूर्वक चिरकाल तक तथा उसी एक 'नज़र' के लिये ऋषि और योगी युगों युगों तक तपस्या करते हैं !

मुझे एक घटना द्वारा बाबा की 'नज़र' पर विश्वास हो गया था। १० अक्टूबर १९४८ ई. को डाकिया अन्य पत्रों के साथ आदि के. ईरानी का लिफाफा, जिस पर मेरा पता अंग्रेजी में लिखा था, दरवाजे से मेरे घर के अन्दर डाल गया था। मेरी ८ वर्ष की बड़ी पुत्री मेहेर प्रभा तथा ४ वर्ष की पुत्री मेहेर ज्योति उन सभी पत्रों को खुशी से चिल्लाते हुये मेरे पास लायीं, ''मेहेर बाबा का पत्र ! पापा, यह मेहेर बाबा का पत्र''। यद्यपि उनमें से कोई कुछ भी अंग्रेजी नहीं जानती थीं, फिर भी उन्होंने पत्रों के उस ढेर से आदीजी का पत्र अलग कर दिया, जिस पर अंग्रेजी में पता लिखा था। जब मैंने लिफाफा खोला तो पाया कि वास्तव में मेरी दोनों पुत्रियों ने बाबा का पत्र पहिचान कर अलग कर दिया था, और इस घटना ने मुझे महसूस कराया कि मेरे पूरे परिवार पर बाबा की 'नज़र' किस प्रकार से थी।

अपने ऊपर बाबा की दिव्य 'नज़र' की मुहर लिये हुये मैंने रीवा में अपने कार्यालय का कार्य तथा बाबा का कार्य साथ-साथ करना प्रारम्भ कर दिया। मेरे पास करने के लिये कार्यालय का अधिक काम नहीं था क्योंकि राज्य के रूप में विन्ध्य प्रदेश का पुनर्गठन अभी प्रारम्भिक अवस्था में ही था इसलिये मेरे पास फुरसत का पर्याप्त समय था। अतः मैं अपना अधिकांश समय अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों को मेहेर बाबा के बारे में बताने तथा उनको बाबा का साहित्य, जो कुछ मेरे पास उपलब्ध था, देने

में व्यतीत करता था। और, जब मैं घर में होता था तब जीन एड्रियल कृत ''अवतार'' ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद किया करता था जिसके लिये बाबा की दयापूर्ण पूर्व अनुमति मुझे नौगाँव में मिल गई थी। इस प्रकार मैं घर तथा कार्यालय दोनों जगह बाबा-कार्य में व्यस्त रहा करता था। मैं सचिवालय के अपने साथी अधिकारियों एवं अन्य कर्मचारियों को बाबा के बारे में तथा बाबा के साथ अपने सम्पर्क एवं उनके साथ हुये अपने अनुभवों के बारे में बताया करता था। मेरा उद्देश्य वहाँ बाबा-प्रेमी परिवारों को तैयार करना था और बाबा की कृपा से वर्ष १९४८ के अन्त तक मैं ४-५ परिवारों को बाबा-प्रेम के दायरे में लाने में सफल हो गया। मैंने इन परिवारों का आरम्भिक एकत्रीकरण महीने में एकबार किसी एक बाबा-प्रेमी के निवास पर करना प्रारम्भ किया। इन सभाओं में हम लोग बाबा की स्तुति में भजन गाया करते थे, उनके बारे में चर्चा किया करते थे तथा बिना किसी ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, इत्यादि के भेदभाव के एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक गले मिला करते थे। इन भजनों, चर्चाओं तथा मिलन के कार्यक्रम की समाप्ति पर हम लोग 'एक पिता मेहेर बाबा' के बच्चों के रूप में एक साथ सामूहिक भोजन करने का आनन्द लिया करते थे। हम लोग इन कार्यक्रमों में अन्य ईश्वर-प्रेमियों को भी आमन्त्रित किया करते थे। इस प्रकार बाबा-प्रेमियों की संख्या में वृद्धि होती गई।

## मेहेर ब्रह्म परिवार

बाबा-प्रेमियों के इन जमावों से मेरे मस्तिष्क में बाबा के दिव्य प्रेम में 'एक सार्वभौमिक मेहेर-परिवार' का विचार आया, ताकि लोग जाति, रंग, धर्म, राष्ट्रीयता, इत्यादि के भेदभाव से युक्त व्यक्तिगत छोटे परिवारों के सदस्य होने की संकुचित भावना को छोड़ दें तथा अवतार मेहेर बाबा के प्रेम में बिना किसी प्रकार के भेदभाव के केवल एक सार्वभौमिक परिवार का सदस्य होने की व्यापक भावना विकसित करें। मैंने इस प्रस्तावित सार्वभौमिक परिवार का नाम "COSMIC MEHER-FAMILY" अथवा 'मेहेर ब्रह्म परिवार' रखा। मैंने अपना यह विचार एक पत्र के माध्यम से प्रियतम बाबा के पास भेज दिया। इस पत्र के उत्तर में मुझे श्री आदि के. ईरानी का दिनांक २६ सितम्बर १९४८ ई. का पत्र मिला, जिसमें उन्होंने मुझे सूचित किया थाः

''आपका मेहेर ब्रह्म परिवार का विचार अति सुन्दर है। श्री बाबा इस विचार के बारे में सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुये। वह आप से चाहेंगे कि आप मेहेर ब्रह्म परिवार के गठन हेतु लोगों को आकर्षित करने की दिशा में कार्य करते रहें। किसी समुदाय के सदस्यों को एक परिवार कहने के विचार से बढ़कर कोई अच्छा विचार नहीं हो सकता।'' इस प्रकार रीवा में 'मेहेर ब्रह्म परिवार' का आविर्भाव हुआ और इसके सदस्यों की संख्या बढ़ती गई।

## वापिस खींचने का प्रयास

सार्वभौमिक मेहेर ब्रह्म परिवार के इस विचार के हमीरपुर जिले में अच्छे परिणाम हुये जिससे मैं सम्बन्धित था और जहां मैंने अपनी वकालत तथा राजनैतिक नेतृत्व के शानदार १० वर्ष व्यतीत किये थे। इसीलिये हमीरपुर जिले के मेरे सभी सहयोगियों और मित्रों ने मेहेर ब्रह्म परिवार के मेरे इस विचार का हार्दिक स्वागत किया। किन्तु, मेरे मित्र और राजनैतिक सहकर्मी परमेश्वरी दयाल 'पुकार' इसके अपवाद थे। उनके साम्यवादी एवं मेरे महात्मा गाँधी के निष्ठावान अनुयायी होने के बावजूद हम लोगों ने राजनैतिक क्षेत्र में कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया था। यद्यपि वह जून १९४८ ई. में हमीरपुर में मेरी चमकती हुई वकालत को छोड़ने तथा मेरे विन्ध्य प्रदेश आने के एकमात्र कारण रहे थे, तो भी अब उन्होंने मुझे हमीरपुर वापिस लाने तथा उनके साथ राजनैतिक कार्य करने के लिये खींचने का प्रयास किया। उन्होंने मुझे मेहेर बाबा के प्रेम जगत से खींचने का अपना भरसक प्रयास किया और इस निमित्त उन्होंने मुझे कई प्रेमपूर्ण एवं हृदयस्पर्शी पत्र लिखे। लेकिन अब उनके इस प्रकार के पत्रों ने मेरे हृदय को स्पर्श नहीं किया और मैंने उनके साथ पुनः राजनैतिक तथा सामाजिक जीवन में सम्मिलित होने में तनिक भी रुझान नहीं महसूस किया, क्योंकि मेरा हृदय बाबा में अपने जीवन का यथार्थ लक्ष्य पा लेने तथा अपने लिये अब उससे अधिक कुछ भी पाना शेष न रह जाने की दृढ़ भावना से भर गया था। बाबा के सम्पर्क में आने के पूर्व मैं अपने जीवन में जिस निरन्तर अशान्ति को महसूस किया करता था वह बाबा में पूर्णरूप से समाहित हो गई थी। मेरी आत्मा की खोज पूरी हो गई थी। बाबा तथा उनके कार्य के समक्ष मुझे राजनीति व अन्य सभी चीजें नितान्त व्यर्थ प्रतीत

होते थे। अतः अपनी इस मनःस्थिति के कारण मैं भाई पुकार के बुलावों पर इस प्रकार से उत्तर दिया करता था –

''मैंने बाबा में अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है, और उस लक्ष्य से मैं पूर्णतया प्रसन्न, सन्तुष्ट तथा अपने में शान्ति महसूस करता हूँ। अपने पुराने राजनीतिक जीवन में वापिस आना अब मेरे लिये नितान्त असम्भव है। आपको मेरे पुनः आपके साथ राजनैतिक कार्यों में हिस्सा लेने के लिये वापिस आने की सभी आशाओं को छोड़ देना चाहिये, क्योंकि यथार्थ बात तो यह है कि मैं अब उस मानव सेवा से बढ़कर अधिक व्यापक अर्थ में बाबा के प्रेम में मानवजाति की सेवा कर रहा हूँ। और मैं महसूस करता हूँ कि आप भी (मानव सेवा की सच्ची लगन होने के कारण) कुछ समय पश्चात् भविष्य में बाबा के प्रेम-जगत में मेरे साथ शामिल होंगे। अतः सावधान रहें ऐसा न हो कि आप स्वयं इस प्रेम-जगत में खिंच जायें। यह बिल्कुल सम्भव है कि मुझे उस दलदल में पुनः वापिस खींचने की बजाय भविष्य में आप स्वयं बाबा के प्रेम में खिचें।'' इस प्रकार पुकार बाबा से मुझे वापिस खींचने के अपने भरसक प्रयासों में असफल हो गये।

## बाबा की स्पष्ट-मर्ज़ी

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि विन्ध्य प्रदेश राज्य का गठन अब भी जारी था, अतः चीजें वहां तीव्रता से परिवर्तित हो रही थीं। राजनीतिक कारणों से बृहत्तर विन्ध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्री के लिये मैं ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसे वह खुशी से स्वीकार करते। वह सूचना विभाग के अध्यक्ष पद पर अपने खास व्यक्ति को रखना चाहते थे। अतः इस कारण से उन्होंने सूचना विभाग का पुनर्गठन प्रारम्भ कर दिया, और २२ नवम्बर १९४८ ई. को उन्होंने अपने एक मित्र श्री रामचन्द्र टण्डन को नियुक्त कर दिया तथा उसको सूचना निदेशक के रूप में निदेशालय का कार्यभार सौंप दिया। यह बाबा की कृपा थी कि मुख्य मन्त्री ने मुझे सेवा से मुक्त नहीं किया, बल्कि मुक्त करने की बजाय उन्होंने मुझे अपने मित्र के अधीन सहायक निदेशक के रूप में नियुक्त कर दिया।

इस परिवर्तन से, जो मेरे लिये बिल्कुल अन्यायपूर्ण था, मैंने अत्यन्त कष्ट तथा अपमान का अनुभव किया। मैंने इस परिवर्तन से इतना अधिक अपमान महसूस किया कि मैंने सोचा कि उस पद से त्यागपत्र दे दूँ, और मैंने बाबा को इस स्थिति की सूचना भेज दी। इसके उत्तर में मुझे श्री आदि के. ईरानी का दि. ३० नवम्बर १९४८ ई. का पत्र प्राप्त हुआ। आदी जी ने मुझे सूचित किया था, ''चूँकि यह बाबा की मर्ज़ी है कि आप जहाँ पर हैं वहीं रहना चाहिये, इसलिये यह सबसे अच्छा है कि उसकी मर्ज़ी से आप दृढ़ रहें तथा अपने कर्तव्यों का निर्वाह करें।'' प्रियतम मेहेर बाबा की इस स्पष्ट दैवी मर्ज़ी से मैं इतना अधिक खुश हो गया कि सब अन्याय तथा अपमान भूल गया और अपने लिये मैंने ईश्वर का आशीर्वाद, ईश्वर की 'नज़र' एवं ईश्वर की मर्ज़ी (प्रियतम मेहेर बाबा की मर्ज़ी ही मेरी मर्ज़ी हो गई थी) इन तीनों को तीव्र अनुक्रम में प्राप्त करने में अत्यन्त भाग्यशाली समझा। ईश्वर से ये सभी प्राप्त करके मुझे इस दुनियाँ में किसी चीज़ की परवाह नहीं रह गई, और मेरी एकमात्र उत्कण्ठा मेहेर बाबा के लिये ही जीवित रहना तथा मेहेर बाबा के लिये ही मरना हो गई।

इसलिये मैंने २५ नवम्बर १९४८ ई. से श्री टण्डन के अधीन सहायक सूचना निदेशक के रूप में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। मुख्य सचिव ने मुझे बताया कि श्री टण्डन केवल ६ माह के लिये रखे गये हैं, और ये ६ महीने मेरे लिये युगों के समान सिद्ध हुये, किन्तु दूसरी ओर उस अवधि की समाप्ति पर मैंने महसूस किया कि वे ६ माह मेरे लिये मेहेर बाबा से महान आध्यात्मिक कोष की एक दुर्लभ देन लाये थे। वह अवधि जो मुझे उस समय इतनी अधिक मर्मभेदी प्रतीत होती थी, अब मुझे बाबा के साथ अपने जीवन में सुखकर तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण अवधि प्रतीत होती है। मैं महसूस करता हूँ कि मैंने उस अवधि के दौरान जो कुछ आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया उसे मैं स्वयं के प्रयत्नों से हजारों जीवनों में भी नहीं प्राप्त कर सकता था।

श्री टण्डन एक नेक, कुलीन, दयालु हृदय तथा अत्यन्त सभ्य व्यक्ति थे, किन्तु वह आलोचना करने में अत्यन्त कठोर थे।

प्रारम्भ में ही श्री टण्डन ने मेरे विरुद्ध बहुत खराब धारणा बना रखी थी। २९ नवम्बर १९४८ ई. को उन्होंने मुख्यमंत्री से मेरे खिलाफ शिकायत कर दी– ''वह कोई कार्य नहीं करता है तथा एक अफीमची की तरह सुस्त मदोन्मस्त बैठा रहता है।'' यद्यपि मैं प्रियतम मेहेर बाबा के नाम में अपना कर्तव्य ईमानदारी एवं सच्चाई के साथ कर रहा था किन्तु फिर भी उन्होंने मेरी इस प्रकार की एक या दो और भी शिकायतें कीं। ये शिकायतें श्री गंगाप्रसाद जैन द्वारा मुख्यमंत्री के समक्ष रखी जानी थीं जो अत्यन्त नेक, धर्मभीरु (ईश्वर से डरने वाले) अधिकारी तथा मुख्यमंत्री के प्रिय थे। अतः श्री गंगाप्रसाद जैन ने हम दोनों को मुख्यमंत्री के पास ले जाने के पहले हमारी बातें सुनने के लिये अपने पास बुलाया। श्री जैन ने मुझसे विनोद के स्वर में पूछा, ''मैंने सुना है कि आप कार्यालय में अपने में खोये हुए सुस्त बैठे रहते हैं और कार्यालय का कोई काम नहीं करते हैं।'' मैंने उत्तर दिया, ''ऐसा नहीं है। मैं प्रतिदिन अपना काम ईमानदारी से पूरा करता हूँ, और यह अवश्य है कि जब मेरे पास कोई काम नहीं रहता है तब बजाए गपशप करने के मैं खामोशी से अपने प्रिय भगवान की याद करता हूँ।'' वह मेरे उत्तर के बाद के अन्श (खामोशी से अपने प्रिय भगवान की याद करता हूँ) से प्रभावित हुए और मुझसे पूछा, ''आपके भगवान! कौन हैं आपके भगवान, और वह कहां रहते हैं ?'' इस पर मैंने अपनी जेब से प्रियतम बाबा का चित्र निकाला और उसे जैन साहब को दिखलाया। जैन साहब बाबा के चित्र से इतना प्रभावित हुए कि वह मेरे खिलाफ शिकायतों को पूरी तरह से भूल गये और उन्होंने मेहेर बाबा के बारे में अधिकाधिक जानने तथा प्रियतम बाबा के सम्पर्क में आने के पश्चात् मेरे अनुभवों के बारे में पूछना प्रारम्भ कर दिया। मैंने उनको प्रत्येक चीज़ बतलायी, और इससे वह प्रसन्न एवं आन्तरिकरूप से बाबा की ओर आकृष्ट मालूम पड़े। तत्पश्चात उन्होंने मुझसे मेरी अन्य शिकायतों के उत्तर सुने, और देखिये! उन्होंने मेरे विरुद्ध सभी शिकायतों को निराधार पाया। श्री टण्डन का मुँह ऐसा बन्द हुआ कि वह एक भी शब्द नहीं कह सके, और मैं अपनी शिकायतों के विरुद्ध उत्तर देने के लिये मुख्यमन्त्री के समक्ष उपस्थित होने से बच गया।

इस घटना का परिणाम यह हुआ कि श्री गंगा प्रसाद जैन ने हमारे मेहेर ब्रह्म परिवार की सभाओं में आना तथा बाबा के प्रेम में हमारे साथ सभाओं में आनन्द लेना प्रारम्भ कर दिया। सचिवालय के कुछ अन्य उच्च अधिकारियों ने भी हमारी सभाओं में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया तथा इस प्रकार की सभाओं से एक अत्यन्त आनन्ददायी वातावरण उत्पन्न हो गया।

दिसम्बर १९४८ ई. के अन्त तक श्री टण्डन भी मेरे कार्य से पूर्णरूप से प्रसन्न हो गये थे किन्तु उनकी वाणी अब भी तीखी थी। हमारे कार्यालय सम्बन्धी कार्य तथा वार्ता के दौरान वह कुछ बातों पर उत्तेजित हो जाते थे तथा इस प्रकार की तीखी आलोचना करते थे जो मेरे दिल में गहराई से चुभती चली जाती थी। शायद ही कोई ऐसा दिन बीतता हो जब यह घटना न घटे। मैं उनकी इस प्रकार की आलोचनाओं पर इतना अधिक कष्ट महसूस करता था जिसे केवल मैं ही जानता हूँ। श्री टण्डन को उत्तर में एक भी शब्द कहे बिना मैं यह सब खामोशी से बर्दाश्त किया करता था। यहाँ यह ध्यान देना महत्वपूर्ण होगा कि इस नौकरी में आने के पहले मैं हमीरपुर में एक सफल वकील तथा प्रतिष्ठित राजनैतिक नेता के रूप में बिल्कुल स्वतन्त्र व्यक्ति था। मैं किसी प्रकार की परतन्त्रता नहीं जानता था। अतः मेरे महान आध्यात्मिक उत्थान के लिए यहाँ बाबा ने मुझे स्वतन्त्रता के नकारात्मक पहलू का भी अनुभव कराया। मुझे ऐसी परिस्थिति में भी निश्चिन्त रहना सीखना था।

बहरहाल इसमें बाबा की चाहे जो मर्ज़ी हो, किन्तु वास्तविकता यह है कि मेरे निदेशक की तीखी आलोचनाओं ने मुझे उनसे इतना अधिक भयभीत कर दिया था कि जब कभी वह मुझे अपने कार्यालय में बुलाते थे तो उनके सम्मुख होने के पूर्व मैं स्वयं को शान्त करने के लिये पहले पेशाब घर जाया करता था ! इस पेशाब करने के बहाने मैं जितना अधिक समय ले सकता था लिया करता था और तब अत्यन्त भय के साथ धीरे-धीरे उनके पास जाया करता था तथा पूरे समय बाबा से प्रार्थना करता था कि कम से कम उस दिन वह मुझे श्री टण्डन की मर्मभेदी आलोचनाओं से बचायें। यहाँ जिस स्थिति का मैं वर्णन कर रहा हूँ उसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है किन्तु यह एक नग्न सत्य है जिसे मैं बाबा के कार्य

करने की प्रणाली बताने के लिये उजागर कर रहा हूँ। आलोचना के उन क्षणों में, स्वाभाविकरूप से बाबा की मर्ज़ी मेरे लिये अत्यधिक निर्दयतापूर्ण एवं मर्मभेदी मालूम पड़ती थी, किन्तु बाद में मुझे ज्ञात हुआ कि श्री टण्डन के माध्यम से बाबा ने मेरे अहंकार को गहराई से वेध दिया तथा मुझे सहनशक्ति प्रदान की और दूसरे प्रकार से मुझे आध्यात्मिक रूप से उन्नत किया। वास्तव में वे ६ महीने बाबा के साथ मेरे जीवन के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दिन थे और वे दिन मेरे लिये अब अति प्रिय हो गये हैं। उन ६ महीनों के दौरान बाबा यथार्थतया मेरे अन्तःकरण में छा गये थे। बाबा ने मेरे हृदय से सत्ता एवं सम्पत्ति की आकांक्षा को निकाल बाहर कर दिया था जो मेरे अन्दर पहले से भरी थी तथा उस आकांक्षा को मेरे मस्तिष्क से भी अलग कर दिया था। मेहेर बाबा की सेवा की तुलना में उच्च पद व प्रतिष्ठा, मुझे तुच्छ प्रतीत होने लगे थे। मेरे हृदय से समस्त सांसारिक महानता के प्रति आकर्षण समाप्त हो गया था।

## वर्ष १९४९ :

वर्ष १९४९, बाबा के गश्तीपत्र दि. १ जनवरी १९४९, से प्रारम्भ हुआ। इस गश्तीपत्र में बाबा ने अपने प्रेमियों से कहा था कि यह वर्ष यथार्थ कसौटी तथा कठिनाइयों का सिद्ध होगा, और इसलिये उन्होंने अपने प्रेमियों तथा भक्तों को और अधिक समर्पित तथा अल्प स्वार्थी होने के लिये निर्देशित किया था, और उनसे यह भी कहा था कि ''उन्हें स्वयं माया की ओर खिंचने के बजाय ईश्वर की ओर खिंचना चाहिये। उन्हें राजनीतिक कार्यों तथा विवादों से दूर रहना चाहिये। उन्हें वर्ष १९४९ के पूरे जुलाई माह में पूर्ण मौन रखना चाहिये, तथा १ फरवरी १९४९ ई. से इस वर्ष के अन्त तक किसी व्यक्ति के साथ किसी प्रकार का पत्रव्यवहार नहीं करना चाहिए।''

बाबा का यह गश्तीपत्र मुझे ३ जनवरी १९४९ ई. को मिला, इसलिये मैंने तुरन्त गश्तीपत्र के निर्देशों का पालन करने के लिए स्वयं को तथा अन्य लोगों को तैयार करना प्रारम्भ कर दिया। उस अद्वितीय गश्तीपत्र ने बाबा-प्रेमियों के लिये सम्पूर्ण वातावरण उत्साह से भर दिया तथा उनके

लिये एक महान शक्ति प्रवाहित की। मैंने अपने लिये इस गश्तीपत्र को बाबा-कार्य का मुख्य आधार बनाया। इसका हिन्दी में अनुवाद किया तथा उसकी हिन्दी में सैकड़ों प्रतियाँ छपवाकर हमीरपुर जिले में एवं रीवा में सभी सम्बन्धित जनों में वितरित कर दीं।

श्री टण्डन जान गये थे कि मैं मेहेर बाबा का प्रेमी हूँ और उन्हें कदाचित् मेरे बाबा-सम्बन्धी क्रियाकलापों की भी जानकारी थी। जैसे-जैसे समय बीतता गया मेरे साथ उनके व्यवहार ने विचित्र ढंग से मोड़ ले लिया, और वह अपने मौजूदा कार्य से ऊबने लगे। २६ जनवरी १९४९ ई. को उन्होंने मुझसे पहली बार मेरे प्रियतम मेहेर बाबा के विषय में लगभग एक घण्टे तक बातचीत की। उन्होंने बहुत शान्तिपूर्वक मेहेर बाबा के बारे में मेरी बातें सुनीं, और फिर बाबा के दि. १ जनवरी १९४९ ई. के गश्तीपत्र को पढ़ने के लिए अपनी इच्छा प्रकट की। उन्होंने बाबा से पत्रव्यवहार करने की भी इच्छा व्यक्त की।

अब तक मेरे साथ उनका व्यवहार काफी मोड़ ले चुका था क्योंकि वह अपने कार्यालय के काम से इस सीमा तक ऊब चुके थे कि अक्सर वह उस काम से छुटकारा पाने के लिये मुझसे परामर्श किया करते थे। जिस समय वह मुझसे बात करते थे उस समय उनकी वाणी इतनी अधिक मृदु एंव कोमल हो जाती थी जितनी कि हमारे कार्यालय के प्रारम्भिक दिनों में तीखी रहती थी। मैं उनकी दशा पर द्रवित हो जाया करता था, और उस अत्यन्त अल्प अवधि में प्रियतम बाबा ने मुझे दिखलाया कि एक व्यक्ति जो मुझको प्रारम्भ में 'अफीमची' कहा करता था अब उसी ने मुझको अपना ऐसा सहानुभूति रखने वाला सलाहकार तथा शुभचिन्तक बनाया जिससे वह खुलकर अपने हृदय के उद्‌गार व्यक्त कर सकता था! मैं यथाशक्ति श्री टण्डन को ढाढस दिया करता था तथा उस अवधि के दौरान बाबा निश्चित रूप से श्री टण्डन को मेरे द्वारा निर्देश दिया करते थे। मेहेर बाबा के प्रति उनका लगाव इतना बढ़ता हुआ प्रतीत हुआ कि अन्त में एक दिन उन्होंने मुझसे पढ़ने के लिए 'अवतार' ग्रन्थ ले लिया। इस ग्रन्थ का पूर्णरूप से अध्ययन करने के पश्चात श्री टण्डन ने मेहेर बाबा के बारे में ये उद्‌गार व्यक्त किये, ''वह इतिहास में अमर रहेंगे''।

वर्ष १९४९ की अब दूसरी महत्त्वपूर्ण घटना घटित हुई –

२५ फरवरी १९४९ अवतार मेहेर बाबा का ५५वाँ जन्मदिवस था। मैंने स्वयं ही इस जन्मदिवस को वहाँ सार्वजनिक रूप से शानदार ढँग से मनाने का निर्णय लिया। मैंने इस भाग्यशाली दैवी उत्सव के मनाने में सहयोग देने के लिये सचिवालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को आमन्त्रित किया और इस आमन्त्रण पर मुझे सभी क्वार्टर्स से अत्यधिक सहयोग मिला। इस प्रकार बाबा का ५५वाँ जन्मदिवस समारोह पहली बार मेरे द्वारा स्थानीय वेंकट मेमोरियल हाल में सभी वर्ग के लोगों के जमाव के बीच मनाया गया। मैंने श्रोताओं को एक घण्टे तक मेहेर बाबा के बारे में बतलाया जिसका सभी के हृदयों पर जागृति प्रदान करने वाला प्रभाव मालूम पड़ा। उस उत्सव में मेरे अधिकारी श्री टण्डन ने भी भाग लिया और मेरे भाषण की अत्यधिक प्रशंसा की।

जैसाकि बाबा ने अपने १ जनवरी १९४९ ई. के गश्तीपत्र द्वारा १ फरवरी १९४९ ई. से वर्ष के अन्त तक सभी पत्र व्यवहार पर रोक लगा दी थी, अतः स्वाभाविकरूप से मेरा अधिकांश समय पत्र व्यवहार से बच गया और मैं बाबा का कार्य तथा उनकी याद करने में और अधिक ध्यान देने के लिये मजबूर हो गया। विन्ध्य प्रदेश के एकीकरण का काम अब भी पूर्ण नहीं हुआ था। अप्रैल १९४९ ई. में सूचना विभाग तोड़ दिया गया। परिणामस्वरूप श्री रामचन्द्र टण्डन ने २३ अप्रैल को बहुत खुशी से अपना चार्ज मुझे दे दिया और अत्यन्त राहत के साथ रीवा छोड़कर अपने घर इलाहाबाद चले गये। मैं भी इस कार्य से मुक्त होना चाहता था किन्तु सचिवालय के प्रभावशाली अधिकारियों श्री गंगाप्रसाद जैन तथा पंडित नरसिंह प्रसाद के भरसक प्रयासों के कारण मुझे सेवा से मुक्त नहीं किया गया। सेवा से मुक्त करने की बजाय वे मेरे लिये एक नये पद का सृजन करने में सफल हो गये तथा मुझे १ मई १९४९ ई. को एक अधिकारी के रूप में विन्ध्य प्रदेश सचिवालय में लाइब्रेरी, समाचार विभाग तथा सेन्ट्रल रिकार्ड का स्पेशल ड्यूटी इन्चार्ज नियुक्त कर दिया गया। इस पद का विशेषरूप से मेरे लिये सृजन किया गया था तथा यह पद मेरे लिये बाबा की दैवी मर्ज़ी का एक स्पष्ट प्रमाण था। सभी विपरीत परिस्थितियों, हिला

देने वाली कठिनाइयों तथा परिवर्तनों के बावजूद, मैंने तनिक सी ढिलाई किये बगैर उत्साहपूर्वक 'अवतार' ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद करना जारी रखा और अन्ततः मैंने बाबा की कृपा से रीवा में २६ मई १९४९ ई. को इसका अनुवाद कार्य पूरा कर डाला। मुझे इस अनुवाद कार्य में बाबा से वैसी ही आन्तरिक सहायता मिली, जिसका विश्वास मुझे प्रारम्भ में ही बहिन जीन एड्रियल तथा डाक्टर सी.डी. देशमुख ने दिलाया था।

महात्मा गाँधी के पद चिन्हों पर चलने के कारण मैं हमीरपुर जिले में एक प्रमुख एवं लोकप्रिय राजनैतिक नेता रह चुका था, इसीलिये मेरे बहुत से राजनैतिक साथी मुझसे मिलने के लिए हमीरपुर से रीवा आया करते थे और मेरे पास हमीरपुर जिला तथा उसके पड़ोसी स्थानों से ढेर सारे पत्र भी आया करते थे। अतः वर्ष १९४९ में बाबा द्वारा पत्र व्यवहार पर रोक लगाने का एक अत्यन्त स्वाभाविक प्रभाव मेरे ऊपर यह पड़ा कि मेरे सभी राजनैतिक साथियों का स्वतः मुझसे सम्पर्क टूट गया और उनके साथ मेरा राजनैतिक लगाव लगभग समाप्त हो गया। जो लोग मुझसे घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे उन्होंने मेरे साथ बाबा के दैवी प्रयोजन एवं काज में हाथ बँटाना प्रारम्भ कर दिया। मैंने महसूस किया कि बाबा ने गश्तीपत्र के माध्यम से पत्रव्यवहार पर रोक लगाकर मुझे अपने पवित्र दैवी कार्य का माध्यम बनाने के लिये स्पष्टरूप से दलदल से बाहर निकाल लिया था।

मैंने वर्ष १९४९ के दौरान भी अनेक परीक्षाओं तथा कसौटियों का सामना किया जिनके बारे में बाबा ने अपने १ जनवरी के गश्तीपत्र में पहले ही बता दिया था। गश्तीपत्र में दिये बाबा के निर्देशों के अनुसार, मैं, मेरी पत्नी तथा पिल्ले परिवार (रीवा में मेहेर ब्रह्म परिवार का प्रथम परिवार) ने १ जुलाई १९४९ ई. से एक महीने का मौन प्रारम्भ कर दिया। पिल्ले परिवार ही पहला परिवार था जिसके साथ मैंने रीवा में बाबा-कार्य प्रारम्भ किया और बाबा के उस प्रथम मेहेर ब्रह्म परिवार में डी.ए. पिल्ले, टी.आर. पिल्ले, मेहेर वीणा, मेहेर मीरा, मेहेर कान्ती इत्यादि थे। मुझे तथा मेरी पत्नी दोनों को मौन रहते हुये कठिनाइयों एवं परीक्षाओं का सामना करके परिवार के दैनिक कार्यों की व्यवस्था करनी पड़ती थी, किन्तु हमारा मौन पूरे महीने किसी भी परिस्थिति में खण्डित नहीं हुआ। बाबा की कृपा ने गश्तीपत्र के

माध्यम से हमारी पूर्ण सफलता के लिये मदद की। ३० जून १९४९ ई. की आधी रात से मौन प्रारम्भ करने के पहले मैंने अपने घर पर मेहेर परिवारों के परस्पर मिलन का आयोजन किया जिसमें भाग लेने के लिये हमीरपुर जिले के अवतार मेहेर बाबा के कार्यकर्ता श्रीपति सहाय रावत, बाबू रामप्रसाद तथा पंडित कुन्ज बिहारी वहाँ से विशेष रूप से आये। उस परस्पर मिलन के दौरान ठीक आधी रात को हम सभी ने जोर से ''अवतार मेहेर बाबा की जय !'' बोलकर अपने एक माह के मौन का शुभारम्भ किया।

इस एक माह के मौन के दौरान मेरे सामने अपने कार्यालय के काम की भी व्यवस्था करने की बड़ी समस्या थी, किन्तु इसके लिये भी मुझे बाबा की सहायता प्राप्त हुई। मेरे उच्च अधिकारी पण्डित नरसिंह प्रसाद ने स्वयं यह कहा कि वह मेरे विभाग की फाइलों को मुख्य सचिव के समक्ष मेरी ओर से किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किये जाने की व्यवस्था कर देंगे, जबकि मेरे कार्यालय के काम के दौरान दूसरे सभी अधिकारियों एवं सहकर्मियों ने मेरे मौन रहने में अपना पूरा सहयोग मुझे दिया। इस प्रकार मेरा यह एक माह का मौन पूरे सचिवालय में चर्चा का विषय बन गया। उन सभी के लिए यह एक विचित्र बात थी !

बाबा २२ जून १९४९ ई. से ४० दिन के लिये कठोर एकान्तवास में चले गये। उस एकान्तवास में बाबा को तार भेजने की भी किसी को अनुमति नहीं थी। इसलिये वर्ष १९४९ की परीक्षाओं तथा कसौटियों के अतिरिक्त मौन की उस अवधि के दौरान मेरी घर तथा कार्यालय में एक अत्यन्त विनोदपूर्ण परीक्षा हुई। ६ जुलाई १९४९ ई. को मुझे झाँसी के निकट दतिया के सेशन्स जज की अदालत में एक हत्या के मुकदमे में गवाही देने जाना था। इसलिये उक्त उद्देश्य के लिये मैं अपने अर्दली बृजमोहन के साथ ५ जुलाई को रीवा से दतिया के लिये चल दिया। बृजमोहन को रतौंधी आती थी जिसे मैं उस समय नहीं जानता था, और न ही उसने मुझसे रतौंधी के बारे में बतलाया था। शाम को हम लोग रेल द्वारा सतना से मानिकपुर के लिये चल दिये। गोधूलि के समय हम लोग मानिकपुर पहुँच गये। मानिकपुर में उस रेलगाड़ी को बहुत कम समय रुकना था।

इसलिये बृजमोहन बोगी के मुख्य दरवाजे से नीचे उतरने की बजाय बगल की खिड़की से प्लेटफार्म पर दूध बेचने वाले के बर्तन के ऊपर कूद पड़ा। कूदने से दूध का बर्तन लुढ़क गया और उसका सब दूध प्लेटफार्म पर फैल गया। इस पर दूध बेचने वाले ने क्रोधित होकर बृजमोहन की गर्दन पकड़ ली। यह देखकर मैं अत्यधिक व्यग्र हो गया, क्योंकि सामान को अभी भी रेलगाड़ी से नीचे उतारना शेष था, और बृजमोहन को दूध वाला पकड़े हुये था। चूँकि मैं मौन था इसलिये दूध वाले से कुछ भी नहीं कह सकता था। अतः मैंने शीघ्रता से सारा सामान बोगी से नीचे प्लेटफार्म पर फेंक दिया और फिर मैंने क्रोधभरी दृष्टि से दूधवाले की ओर घूरा और अपने हाथ से उसे बृजमोहन को छोड़ देने के लिए इशारा किया। यहाँ बाबा के जादू ने आश्चर्यजनक काम किया, क्योंकि दूधवाला मेरी क्रोधभरी त्योरी तथा मौन झिड़की से भयभीत होता प्रतीत हुआ, जिसके परिणामस्वरूप उसने बृजमोहन की गर्दन छोड़ दी और मुझसे अत्यन्त नम्रता एवं दीनतापूर्वक कहने लगा, ''बाबू जी, इस आदमी को देखिये ! इसने मेरा सारा दूध लुढ़का दिया है''। मैंने उसको शान्त करने वाले कुछ मौन संकेत किये। इस पर वह अब भी बृजमोहन पर गुस्से से बड़बड़ाता हुआ चला गया, ''चलो, मैं तुम्हें देखूँगा !'' मैं यह सोचकर व्याकुल हो रहा था कि अब आगे यह मौन और कौन सी मुसीबत हम लोगों पर ढावेगा, क्योंकि सभी क्रियात्मक दृष्टियों से ''मैं गूंगा'' था और बृजमोहन ''अन्धा'' था !

किसी प्रकार, बृजमोहन ने सामान उठाया और हम लोग झाँसी वाली रेलगाड़ी पर बैठने के लिए आगे बढ़े, किन्तु कुछ ही कदम के पश्चात् बृजमोहन एक वृद्ध महिला से टकरा गया जोकि दीनता से चिल्लाती हुई लड़खड़ा कर जमीन पर गिर पड़ी। इस घटना ने मुझे और व्याकुल कर दिया, क्योंकि मौन के कारण न तो मैं बृजमोहन से कुछ कह सकता था और न उस वृद्ध महिला से। मैंने अपने मूक इशारों से उसको ढाढस देने तथा शान्त करने का प्रयास किया।

हम लोग पुनः रेलगाड़ी की ओर चले। लेकिन जैसे ही हम लोग प्लेटफार्म पर टिकट जाँचकर्ता की बगल से गुजरे, उसने बृजमोहन से टिकट दिखाने के लिए कहा, लेकिन बृजमोहन ने उसके कहने पर कोई

ध्यान नहीं दिया। टिकट जाँचकर्ता ने उसको दुबारा पुकारा लेकिन बृजमोहन पूरी निश्चिन्तता के साथ चला गया। तब मेरे एक मित्र ने, जो यात्रा के समय रेलगाड़ी में मेरे साथ थे, आकर वस्तुस्थिति को स्पष्ट किया। वह बृजमोहन के पास गये और उससे टिकट जाँचकर्ता को टिकट दिखलाने के लिये कहा। उसने आकर टिकट दिखलाया और मैंने राहत की सांस ली। अब हम लोग दतिया जाने के लिये झाँसी-मानिकपुर पैंसेंजर रेलगाड़ी पर बैठ गये।

यात्रा के लिये मैंने अपना सारा पैसा बृजमोहन को सुरक्षित रखने के लिये तथा खर्च करने के लिये दे दिया था।

अब रात्रि के भोजन का समय था और मैं कुछ खाना चाहता था। बृजमोहन अपनी जेब में पैसा रखे हुए था, इसलिये मैंने उसकी जेब को दो बार थपथपाया, तथा साथ-साथ उस पैसे से अपने लिये कुछ खाने के लिये लाने का हाथ से इशारा किया। लेकिन 'अन्धे' बृजमोहन ने सोचा कि शायद कोई उसकी जेब से पैसा निकालने की कोशिश कर रहा है, अतः मेरे लिये खाना लाने की बजाय, उसने अपनी जेब मजबूती से पकड़ ली और बिल्कुल सचेत होकर बैठ गया। वह न तो मेरे संकेतों को समझ सका और न मैं उससे कुछ कह सका, इसलिये वह कुछ भी करने के लिये, वहाँ से हटने को तत्पर नहीं हुआ। ऐसी परिस्थिति में मेरे सामने यह समस्या थी कि मैं कोई भी व्यवस्था कैसे करूँ। किन्तु यहाँ पुनः मेरा वही मित्र मदद के लिये आ गया और वह मेरे लिये भोजन ले आया। अब तक मैं पूर्णतया व्याकुल तथा उद्विग्न हो चुका था। मेरे सामने निरन्तर यह विचार मंडरा रहा था कि जब यात्रा का आरम्भ ही ऐसी विचित्र घटनाओं से हो रहा है तब सम्पूर्ण यात्रा कैसे पूरी हो सकेगी ?

किन्तु, मेरी इस चरमसीमा की व्याकुलता तथा उद्विग्नता की स्थिति के दौरान बाबा ने मुझे कुछ अत्यन्त रोचक सुखद क्षण भी दिये। एक साधारण एवं सुन्दर युवा लड़की अपने वृद्ध पिता के साथ बोगी के अन्दर आयी और जहाँ मैं अपना बिस्तरबन्द फैलाये आराम कर रहा था उसके ठीक सामने की सीट पर बैठ गई। उसने मुझसे विनम्रता के साथ मेरे

सिरहाने की ओर अपने पिताजी के लिये बैठने की अनुमति माँगी जो मैंने सहर्ष दे दी। मेरे इस साधारण संकेत का यह प्रभाव पड़ा कि उस लड़की ने पूरी रात बैठकर मेरी चौकसी की तथा किसी यात्री को मेरे सोने में बाधा नहीं पहुँचाने दी। जिस समय कोई यात्री सीट में बैठने के लिये मुझे जगाने का प्रयास करता था तो मैं उस लड़की को अत्यन्त विनम्र स्वर में यात्रियों से यह कहते हुये सुनता था, ''भैया, उन्हें जगाकर तकलीफ मत दो। वह तीन दिनों की लम्बी यात्रा के पश्चात् आ रहे हैं। वह मौनी बाबा हैं।'' उसके वे अत्यन्त स्नेहपूर्ण शब्द अब भी मेरे कानों में गूँजते हैं। निश्चितरूप से वे अत्यन्त सुखद क्षण थे जो प्रियतम बाबा ने उस लड़की के रूप में मेरी यात्रा के दौरान भेजे थे।

अन्ततः हम लोग प्रातः ८ बजे झाँसी पहुँच गये जहाँ से हमें दतिया के लिये ट्रेन बदलनी थी। मैंने बृजमोहन को लिख कर दिया कि यदि टिकट खरीदने के लिये पर्याप्त समय हो तो दतिया के लिये टिकट ले आवे अन्यथा समयाभाव में टिकट लाने में खतरा नहीं उठाना चाहिये। प्रातः सूर्योदय के पश्चात् वह सामान्यरूप से चीजों को देख सकता था। मेरी उस लिखित पर्ची के साथ बृजमोहन टिकट लाने के लिए चला गया। मैंने पूरे समय उसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा की। दतिया जाने वाली रेलगाड़ी के छूटने का समय निकट आ गया और मैंने बृजमोहन को खिड़की से बाहर बार-बार देखना प्रारम्भ कर दिया, किन्तु व्यर्थ रहा। अन्ततः रेलगाड़ी ने सीटी बजाई और चल दी, तथा बृजमोहन मेरे पास अपना भी सामान छोड़कर झाँसी में ही रह गया। मैं मौनव्रत से बँधा हुआ था, मेरे पास एक भी पैसा नहीं था, तथा मुझे अपने सामान के अतिरिक्त बृजमोहन का भी सामान ले जाना था। बृजमोहन कहाँ तथा कैसे होगा इसकी भी चिन्ता मेरे मस्तिष्क को परेशान कर रही थी। मैं हर प्रकार से असहाय हो गया था।

किन्तु ठीक उसी क्षण मुझे पुनः बाबा की आकस्मिक सहायता प्राप्त हुई। एक पुलिस का सब-इन्सपेक्टर, जोकि हमीरपुर में कार्यरत था और मेरा घनिष्ठ मित्र था, मेरे रेल के उसी डिब्बे में आया। वह भी उसी मुकदमे में गवाही देने के लिए दतिया जा रहा था। मैं उससे मिलकर अत्यन्त खुश

हुआ। मैंने उससे अपनी झाँसी तक की यात्रा की सम्पूर्ण कहानी लिखकर बताई। उसने मुझे आश्वासन दिया कि वह मेरी सुख-सुविधाओं को ध्यान में रखेगा। इस प्रकार मैं उसके साथ दतिया पहुँच गया और उसके साथ वहाँ आराम से ठहरा। मैं दतिया के उस समय के पुलिस अधीक्षक राय साहब रघुनन्दन सिंह के पास गया जोकि हमीरपुर से सम्बन्धित थे तथा उनसे मेहेरबाबा के विषय में बातें कीं। उनकी पत्नी मेहेरबाबा के बारे में सुनकर इतना प्रभावित हुईं कि उन्होंने मुझसे बाबा के चित्र तथा गश्तीपत्र देने के लिये कहा और मैंने उनको वे दोनों दे दिये। उसी समय से उन्होंने बाबा से प्रेम करना प्रारम्भ कर दिया और बाद में वे मेहेराबाद में बाबा के सहवास में भी उपस्थित हुए।

बाबा के मौन का महानतर जादू, जिसे मैंने अनुभव किया, यह था कि उस अवधि में मैं जिस किसी व्यक्ति से बाबा के बारे में बताया करता था वह अनिवार्यरूप से उनकी ओर आकृष्ट हो जाता था।

दतिया के सेशन्स जज की अदालत में भी मेरे मौन ने एक अत्यन्त जागृति प्रदान करने वाला वातावरण उत्पन्न कर दिया। मैंने सेशन्स जज को लिखित दिया, ''चूँकि मैं एक माह का मौन धारण किये हूँ इसलिये मैं केवल उन्हीं प्रश्नों का उत्तर दूँगा जो मुकदमे से सम्बन्धित होंगे; और अन्य सभी प्रश्नों के मेरे उत्तर लिखित रूप में होंगे।'' यह मेरा स्वयं का निर्णय था, क्योंकि बाबा कठोर एकान्तवास में थे और मैं उनसे तार द्वारा भी इसके बारे में निर्देश नहीं ले सकता था। मेरे इस ढँग से गवाही देने से सेशन्स जज तथा अदालत में उपस्थित लोगों में मेरे तथा मेहेरबाबा के बारे में अधिक जानने की जिज्ञासा बढ़ गई, और अदालत भर में तथा उसके चारों ओर के लोगों ने मेहेरबाबा के बारे में चर्चा करना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार मैं, विन्ध्य प्रदेश सरकार के सचिवालय का मूक स्पेशल अधिकारी, वहाँ उपस्थित सभी लोगों के लिये आश्चर्य का विषय बन गया, तथा मैंने इस मौन खेल का भरपूर आनन्द उठाया।

वापिसी यात्रा में मैं उसी पुलिस सब-इन्स्पेक्टर के साथ झाँसी आया, क्योंकि बृजमोहन अब तक दतिया नहीं आया था। झाँसी से मुझे दूसरा

मित्र अगले स्टेशन तक के लिये मिल गया जिसने मुझे रीवा तक की मेरी यात्रा-खर्च के लिये पैसे दिये। अगले दो स्टेशनों के पश्चात् मेरा एक अधीनस्थ कर्मचारी मुझे मिला जो रीवा लौट रहा था। और मैं उसके साथ रीवा में अपने घर सकुशल पहुँच गया। यात्रा के दौरान मैंने बाबा के १ जनवरी के गश्तीपत्र की प्रतियाँ प्रत्येक स्टेशन पर लोगों में वितरित कीं तथा उनको इस गश्तीपत्र के संदर्भ के साथ बाबा के विषय में भी लिखकर बताया।

घर आकर मुझे मालूम हुआ कि बृजमोहन झाँसी से रीवा वापिस आ गया था। और मेरी मौन पत्नी से अपनी कहानी बताई थी जो मेरे बारे में यह सोचकर अत्यधिक विचलित हो गई थी कि मैं अपनी यात्रा के दौरान बिना 'बोले', बिना 'पैसे' के, तथा बिना 'मित्र' के किस प्रकार व्यवस्था करूँगा। लेकिन उस समय वह यह भूल गई कि प्रियतम भगवान मेहेरबाबा की कृपा अपने प्रिय जनों को कभी भी असफल नहीं होने देती। यात्रा की समाप्ति पर मुझे ज्ञात हुआ कि सभी परीक्षाओं, कसौटियों तथा विषम परिस्थितियों के बावजूद बाबा की कृपा ने पूरी यात्रा के दौरान मुझे कभी असहाय, अकेला, निराश्रित नहीं महसूस होने दिया। दूसरी ओर मैंने मौन में अपने हृदय में इस सम्पूर्ण खेल का भरपूर आनन्द उठाया।

## ईश्वर के अवतार का मेरा प्रथम दर्शन

१ अगस्त १९४९ ई. को प्रातः ७ बजे, मेहेर ब्रह्म परिवार के सदस्यों ने अवतार मेहेरबाबा की जय ! बोलकर अपना एक माह का लम्बा मौन तोड़ा तथा उनकी स्तुति में भजन गाये। मैंने मौन की उस अवधि के दौरान निरन्तर यह महसूस किया कि मेरे ऊपर बाबा की दैवी कृपा की प्रचुर वर्षा होती रही। वास्तव में यह अत्यन्त आनन्द एवं अनमोल अनुभवों की अवधि थी !

और तदनन्तर परिस्थितियों ने बाबा के मेरे प्रथम भौतिक दर्शन के मार्ग को आसान करना प्रारम्भ कर दिया। ८ अगस्त १९४९ ई. को, रक्षाबन्धन पर्व के दिन, मुझे हमीरपुर जिले के ग्राम जराखर के श्रीपति सहाय रावत का अपने घर आमंत्रित करने तथा हमीरपुर जिले में बाबा के

आगामी दर्शन प्रोग्रामों के बारे में तय करने के सम्बन्ध का तार मिला। इस तार को पाकर मैंने ६ अगस्त को अपने परिवार के साथ रीवा से प्रस्थान कर दिया, और १० अगस्त को राठ पहुँच गया। दोपहर बाद मैं एक टट्टू पर राठ से जराखर के लिये चल दिया। मैं मुश्किल से डेढ़ मील चला था कि स्वच्छ आकाश में अचानक घने बरसाती बादल इकट्ठे हो गये और अत्यन्त भारी वर्षा होने लगी। एक पेड़ के नीचे रुककर मैं वर्षा बन्द होने की लगातार प्रतीक्षा करता रहा किन्तु व्यर्थ रहा। वर्षा से बाढ़ का पानी मेरे चारों ओर दूर-दूर तक एकत्र होने लगा जिससे मेरा जराखर जाने का साहस टूट गया। इसलिये अन्ततः मैं राठ वापिस आने के लिए मजबूर हो गया। अगले दिन जराखर जाने की बजाय मैंने श्रीपति सहाय जी को राठ में मुझसे मिलने के लिये एक सन्देश भेजा। किन्तु न वह राठ आये और न ही मुझे कोई निश्चित उत्तर भेजा। इस प्रकार की परिस्थितियों में मैं १२ अगस्त १९४९ ई. को रीवा वापिस लौट आया।

किन्तु, रीवा लौटने पर १३-८-४९ ई. को मुझे श्रीपति जी का पत्र डाक से मिला जिसमें निम्नलिखित बातें थी :–

''बाबादास जी अहमदनगर से यहाँ आये हुए हैं। श्री बाबा १ नवम्बर को यहाँ होंगे। बाबा ने मुझे आदेश दिया है कि मैं आपको बुलाकर और आपसे परामर्श करके बाबा के हमीरपुर आगमन के कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करूँ। बाबा ने मुझे आपको निर्देशित करने के लिये यह भी कहा है कि आपको एक सप्ताह की छुट्टी लेकर राठ-जराखर में रहना चाहिये तथा परस्पर बैठकर कार्यक्रम को अन्तिम रूप देने में सहायता करनी चाहिये।'' तदनुसार मैंने पुनः राठ जाने के लिए तैयारी शुरू कर दी, किन्तु जरूरी कारणों से मैं यात्रा करने में असमर्थ रहा। इस प्रकार मैं श्रीपति सहाय से उस समय नहीं मिल सका।

२० अगस्त १९४९ ई. को सुबह मुझे श्री आदि के. ईरानी का तार इस आशय का मिला कि मैं अकेले २१ तारीख को राठ जाकर बाबादास से मिलूँ। तार पाकर मैं तुरन्त रीवा से चल दिया और २१ तारीख को राठ में बाबादास तथा श्रीपति सहाय दोनों से मिला। हम लोगों ने यह तय किया

कि कार्यक्रम को अन्तिम रूप देने के लिये हमें खुद बाबा से ही मिलना चाहिये। तदनुसार बाबादास, श्रीपति सहाय रावत तथा मैंने बाबा के पास जाने का निर्णय लिया, किन्तु बाबादास ने हम लोगों के साथ स्वयं अपनी ओर से बाबू रामप्रसाद तथा वृन्दावन महतों को भी ले लिया। २६ अगस्त १९४९ ई. को पाँच जनों के बाबा से मिलने के लिये आने की सूचना का एक तार भेज दिया गया।

सर्वप्रथम बाबा ने केवल बाबादास को उनसे मिलने की अनुमति दी, किन्तु अपने अगले तार में उन्होंने ३० अगस्त १९४९ ई. को मेहेराबाद में सभी ५ जनों को मिलने की अनुमति दे दी। हम सभी लोग बाबादास के साथ २९ अगस्त की सुबह अहमदनगर स्टेशन पहुँच गये। दोपहर बाद श्री आदि के. ईरानी आये और अपनी कार में हम लोगों को मेहेराबाद ले गये। थोड़ी ही देर में वह हमारे पास बाबा का सन्देश लेकर आये कि वह हम लोगों से अगले दिन मिलेंगे। इस प्रकार हम लोगों ने अपना निवास साक्षात् ईश्वर के आश्रम में पा लिया। बाबादास हमें आश्रम के चारों ओर ले गये और प्रत्येक चीज दिखलाई तथा आश्रमवासियों से हमारा परिचय कराया।

## अद्वितीय तिथि ३० अगस्त १९४९

३० अगस्त १९४९ ई. मेरे वर्तमान जीवन का न केवल अत्यन्त भाग्यशाली क्षण था बल्कि मेरे सभी पूर्व जन्मों तथा मेरे विकास सम्बन्धी अवस्थाओं की लम्बी कतारों के सम्पूर्ण भाग्यशाली क्षणों का उच्चतम बिन्दु भी था, क्योंकि उस दिन मैंने साक्षात् ईश्वर को इस पृथ्वी पर अवतार मेहेरबाबा के रूप में देखा था। प्रातः ७ बजे बाबा आये और धूनी के समीप की केबिन के अन्दर प्रवेश कर गये। प्रातः ७.३० बजे हम लोग बाबा से मिलने के लिये केबिन के अन्दर बुलाये गये। बाबा ने कहा कि वह हम लोगों को मिलने के लिए केवल पाँच मिनट का समय देंगे किन्तु उन्होंने अपनी उपस्थिति में हमें ३४ मिनट का समय दिया। बाबा जमीन पर एक गद्दी के ऊपर विराजमान थे और हम लोगों को उनके समीप बैठने की अनुमति दे दी गई। मैंने उनकी दिव्य झलक तथा दिव्य तेज से स्वयं को उन्मत्त पाया।

बाबा ने अपनी वर्णमाला तख्ती पर इस प्रकार व्यक्त किया, ''लोग मुझे त्रिभुवन का स्वामी कहते हैं, किन्तु मैं त्रिभुवन का सेवक हूँ। मैं धोबी हूँ और मानवता की गन्दगी को धोने आया हूँ... तुम सब लोग अत्यन्त भाग्यशाली हो जो इस क्षण यहाँ मेरे पास हो जबकि मैं अपनी 'नई ज़िन्दगी' में प्रवेश करने वाला हूँ.... अब मैं तुम सबको १५ अक्टूबर १९४९ ई. से एक वर्ष के लिये तीन आदेशों का पालन करने के लिये देता हूँ। सावधानी से उन पर विचार करो और तब उनके बारे में मुझे अपना निर्णय बताओ। यदि तुम उनमें से किसी एक अथवा सभी आदेशों का पालन करने के लिये स्वीकार नहीं करते तो मैं तनिक भी अप्रसन्न नहीं होऊँगा। किन्तु एक बार जब तुम एक या दो अथवा सभी आदेशों का पालन करने का मुझसे वादा करते हो, तब तुम्हें उनका उल्लंघन किसी भी कीमत पर नहीं करना चाहिये। इसलिये मुझसे वादा करने के पहले तुम लोग भली प्रकार विचार करो। आदेश इस प्रकार हैं :–

(१) पैसा मत छुओ। (२) स्त्री को मत छुओ। (३) प्रत्येक सप्ताह में किसी निश्चित दिन २४ घण्टे का उपवास रक्खो।''

मैंने बाबा से पहले तथा तीसरे आदेशों का शत प्रतिशत पालन करने का वादा किया, और दूसरे आदेश, स्त्री को न छुओ, के लिये मैंने बाबा से कहा कि मैं इस आदेश का पालन करने में ईमानदारी से अपना भरसक प्रयास करूँगा किन्तु इसके लिये मैं आपसे वादा नहीं करता। बाबा ने ध्यान से हमारे उत्तरों को सुना।

अब, हमीरपुर जिले में दर्शन प्रोग्राम के बारे में वार्ता प्रारम्भ हुई। बाबा ने एक शर्त पर दर्शन देने की अपनी स्वीकृति प्रदान की। ''यदि तुम लोग इस बात पर ध्यान देने की अपनी जिम्मेदारी समझो कि कोई भी व्यक्ति मेरा दर्शन करने के लिये मेरे सामने अपने हाथ जोड़कर न आवे अथवा मेरे चरणों का स्पर्श न करे...'' यह निपट असम्भव था। हमने बाबा को इसके लिये अपना भरसक प्रयास करने का आश्वासन दिया, किन्तु बाबा न केवल हमारा आश्वासन चाहते थे बल्कि इसके लिये वह हमारा पूर्णरूप से वादा चाहते थे। हमने बाबा से इस प्रकार का जोखिम से भरा वादा करने का

साहस नहीं किया। तब बाबा ने हमें जाने और लोगों को उनके दर्शन की शर्तों के अनुरूप तैयार करने के लिये कहा तथा मुझसे इस उद्देश्य के लिये जिले के जनसमूह में वितरण हेतु दर्शन की शर्तों के परचे का आलेख तैयार करके तत्काल दिखाने को कहा। बाबा ने अपने पूर्व कथन को दोहराया, ''तुम सब लोग यहाँ आकर मुझसे मिलने के कारण अत्यन्त भाग्यशाली हो जबकि मैं अपनी नई ज़िन्दगी में प्रवेश करने ही वाला हूँ।'' और, हम लोगों के केबिन से बाहर निकलने के बाद एक बार पुनः बाबा ने आदि के. ईरानी से व्यक्त किया, ''ये लोग वास्तव में भाग्यशाली जन हैं।''

केबिन से बाहर आकर, मैंने शीघ्रता से परचे का आलेख तैयार किया तथा बाबू रामप्रसाद, श्रीपति सहाय और स्वयं के हस्ताक्षरों से युक्त आलेख को बाबा के पास भेज दिया (मुद्रित परचे की प्रति भी भेजी गई थी)। बाबा ने परचे के विवरण सुने और पूरी तरह स्वीकृति दे दी। उन दिनों कोई भी दर्शनार्थी मेहेराबाद में बाबा के आदेश के बिना बारह घण्टे से अधिक नहीं ठहर सकता था। उस समय तक हमारे ठहरने के बारह घण्टे पूरे हो चुके थे। अतः हम लोग कार द्वारा मेहेराबाद से अहमदनगर रेलवे स्टेशन ले जाये गये। वहां से हम लोग अपने-अपने घरों को वापिस लौट आये। ईश-मेहेर बाबा के इस प्रथम दर्शन ने मुझे एक नई ज़िन्दगी में प्रवेश कराया और एक नये प्रकाश से मेरे हृदय को नहला भी दिया।

मुझे सम्पूर्ण जगत तथा इसकी साँसारिक गतिविधियाँ पूर्णरूप से तुच्छ तथा असत्य प्रतीत होने लगी और बाबा-प्रेम की ज्योति मेरे अन्दर तीव्रता से प्रज्वलित हो गई। प्रेम की उस ज्वाला में जलते हुए मैंने रीवा से बाबा को उनके पुनः दर्शन की प्रार्थना करते हुये एक तार भेजा। किन्तु २५ सितम्बर को तार द्वारा मुझे यह सूचित किया गया कि बाबा का दर्शन करना सम्भव नहीं है। इस सन्देश के साथ मुझे तथा मेरे परिवार को बाबा का 'प्रेम' प्राप्त हुआ।

## पुनः हमीरपुर आगमन

यह देखकर कि बाबा ने किस प्रकार मेरे भाग्य को हमीरपुर में उनके दर्शन कार्यक्रमों से सम्बद्ध कर दिया, मुझे यह आभास होने लगा कि मेरी

नियति वहाँ बाबा के प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में कार्य करने की है। इस बात के लक्षण मेरे अन्दर बाह्य एवं आन्तरिक दोनों प्रकार से प्रकट होने लगे। इस तथ्य के बावजूद कि रीवा एक सुन्दर स्थान था मुझे उससे अनासक्ति होने लगी। ''मेहेर ब्रह्म परिवार'' अब एक विशाल परिवार बन चुका था और उसके प्रेमियों के प्रेम-आकर्षण पर विजय पाना कठिन था। बाबा-परिवार समूह का मुख्य परिवार दामोदर अर्मुघम पिल्ले तथा उनके इन्जीनियर पुत्र राजबहादुर पिल्ले का था। यह परिवार ''मेहेर ब्रह्म परिवार'' का मुख्य स्तम्भ तथा इसका प्रथम सदस्य भी था। मेहेर ब्रह्म परिवार के अतिरिक्त, कई अन्य लोग भी बाबा-कार्य में सक्रिय रुचि लेते थे और उसमें मेरी सहायता करते थे। उनमें से कुछ ये थे—विन्ध्य प्रदेश के खाद्य एवं सिविल आपूर्ति निदेशक गंगाप्रसाद जैन, सचिवालय प्रशासन विभाग के सहायक सचिव पंडित नरसिंह प्रसाद तथा अन्य कई अधिकारी एवं सचिवालय के कर्मचारी। इस पर भी मैं अब रीवा से अपना लगाव कम होता हुआ महसूस कर रहा था।

हमीरपुर आने के लिये मेरा पथ प्रशस्त करने में बाह्य परिस्थितियाँ भी सहायक होने लगीं। मेरे पुराने तथा घनिष्ठ मित्र एवं साथी श्रीपति सहाय रावत और बाबू रामप्रसाद, इत्यादि मुझे बाबा-कार्य के लिये हमीरपुर की ओर आकर्षित कर रहे थे। उस अवधि में विन्ध्य प्रदेश सचिवालय का भी पुनर्गठन होना प्रारम्भ हो गया। २६ सितम्बर १९४९ ई. को उस स्थान पर मेरी सेवायें समाप्त होने का नोटिस प्राप्त हो गया। मैं इस नोटिस को पाकर खुशी से उछल पड़ा। किन्तु सचिवालय के मेरे साथियों को अत्यन्त दुख हुआ। ठीक उसी समय जिला परिषद हमीरपुर के सेक्रेटरी का पद भी खाली हो गया। हमीरपुर में मेरे सभी मित्रों ने मेरे लिये सेक्रेटरी के पद की एकस्वर से माँग की तथा मुझ पर दबाव डाला। किन्तु, मेरे मित्र तथा प्रेमी खाद्य और सिविल आपूर्ति के निदेशक श्री गंगाप्रसाद जैन अभी भी मुझे अपने कार्यालय में खाद्य और सिविल आपूर्ति के सहायक निदेशक के रूप में रखना चाहते थे और मुझे रीवा से नहीं जाने देना चाहते थे। मैंने उनका ध्यान विन्ध्य प्रदेश के अनिश्चित भविष्य की ओर खींचा और मेरे प्रेमाग्रह के कारण वह मेरे गृह जनपद में मेरे सेक्रेटरी के पद को स्वीकार

करने के लिये राजी हो गये। अतः हमीरपुर जिले में मेरे लिये उक्त पद के आमन्त्रण के बारे में ७ अक्टूबर १९४९ ई. को मैंने एक तार बाबा को भेज दिया और ८ अक्टूबर को मुझे बाबा का तार मिला– ''कार्य अनुमोदित। प्रेम।'' –बाबा।

इसलिये १० अक्टूबर को मैंने सेक्रेटरी के पद के लिए अपना प्रार्थना पत्र भेज दिया। ३० नवम्बर १९४९ ई. को जिला परिषद ने उस पद के लिये मेरा चयन निर्विरोध कर लिया। अब रीवा से सम्पूर्ण गृहस्थी के सामान को पुनः समेटने की समस्या आई। मैं ट्रक तथा रेलगाड़ी द्वारा अपना सम्पूर्ण गृहस्थी का सामान लेकर अपने जन्म स्थान महेवा पहुँच गया। उसके बाद ३१ दिसम्बर १९४९ ई. को मैंने सेक्रेटरी के रूप में जिला परिषद हमीरपुर में कार्यभार ग्रहण कर लिया। मैं जून १९४८ ई. में हमीरपुर से इस आशय से चला गया था कि अपनी ख्याति प्राप्त वकालत तथा राजनैतिक नेतृत्व के लिये पुनः कभी वापिस लौटकर नहीं आऊँगा, किन्तु डेढ़ वर्ष पश्चात् भगवान मेहेर बाबा की ''दैवी मर्ज़ी' ने, मुझे उनके लिये तथा उनके काज में यहाँ स्थायी रूप से आरूढ़ होने के लिये, वापिस भेज दिया और अब तो यह उजागर हो ही चुका है कि हमीरपुर उनके प्रेम में बाबा का हृदय है। इस प्रकार भगवान मेहेरबाबा ने मुझे दोनों प्रकार से अर्थात् अपने विश्वव्यापी आन्तरिक हृदय में तथा बाह्य हृदय में स्थापित किया।

## वर्ष १९५० तथा १९५१ :

मैं अब महसूस करता हूँ कि ये दोनों वर्ष बाबा की 'मर्ज़ी' द्वारा मेरे लिये हमीरपुर आकर तथा हमीरपुर जिले को उनके प्रेम प्रसार-कार्य हेतु तैयार करने के लिये नियत थे। ऐसी प्रियतम अवतार मेहेरबाबा की दैवी मर्ज़ी थी। मैंने इस उद्देश्य के लिये पहले से ही अपने निष्कपट, निःस्वार्थ राजनैतिक कार्य तथा सच्ची वकालत के द्वारा दोहरा प्रभाव प्राप्त कर लिया था। अब इसको बाबा की दैवी ठेल द्वारा आध्यात्मिक दिशा दी जानी थी। मेरे पुराने साथी तथा परिषद के कर्मचारी मुझे अपने बीच में जिला परिषद के सेक्रेटरी के रूप में वापिस पाकर अत्यन्त खुश थे। मेरे डेढ़ वर्ष के जिले के बाहर के प्रवास तथा वर्ष १९४९ के अन्तिम ११ महीनों के लिये सभी

पत्र व्यवहारों पर रोक के कारण मेरी राजनैतिक गतिविधियाँ और उनके 'संस्कार' समाप्त हो चुके थे। सूचना विभाग के निदेशक श्री रामचन्द्र टंडन के सहायक के रूप में रीवा में मेरी नियुक्ति ने पहले ही मेरे अहंकार को तथा उच्च पद के लिये मेरी सभी उत्कट आकांक्षाओं को कुचल दिया था, और मेरा हृदय बाबा के प्रेम तथा बाबा-कार्य करने की प्रेरणा से पूरित होने के लिए खाली था। राजनीति तथा अन्य सभी आदर्श मेरे हृदय से विदा हो चुके थे और उनके स्थान पर अब केवल प्रियतम बाबा के आदर्श का साम्राज्य था। मैं सदैव बाबा के दैवी उद्देश्य में भाग लेने की बढ़ती हुई इच्छा को महसूस कर रहा था। १६ अक्टूबर १९४९ ई. से बाबा अपनी ''नई ज़िन्दगी'' में प्रवेश कर गये थे और इसीलिये उनके साथ सभी पत्र व्यवहार पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। इसलिये अपनी इच्छानुसार आगे बढ़ने के लिये मेरे सामने सत्य के मार्ग का अनुसरण करना ही केवल एक रास्ता था जिसको बाबा ने अपनी अनोखी रीति से ''मेहेरबाबा तथा उनके साथियों की नई ज़िन्दगी का तराना'' में बताया था।

इसलिये मैंने उसी पथप्रदर्शक प्रकाशपुंज की मदद ली और जिला परिषद में अपना प्रशासन का कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। मेरे अनेक राजनैतिक साथी अब भी मुझे राजनीति की दुनियाँ में वापिस लाने का प्रयास करते थे तथा जिला परिषद में मेरे कार्यों द्वारा अपने राजनैतिक लक्ष्यों को भी पूरा कराना चाहते थे परन्तु अपनी समझ तथा सामर्थ्य भर, मैंने अपने काम में उनकी कोई गलत चाल सफल नहीं होने दी। यदि मैं किसी चीज़ को सही महसूस करता था तो उसे करने के लिये उसके विरुद्ध किसी भी व्यक्ति के कोई तर्क मुझे विचलित नहीं कर सकते थे। जहाँ मैं ईमानदार तथा स्पष्टवादी कर्मचारियों को प्रोत्साहित तथा उनका अत्यधिक सम्मान करता था, वहीं भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान चला दिया था चाहे वह भ्रष्टाचार जिले भर में जिला परिषद के किसी भी स्तर के कर्मचारी में क्यों न हो। यदि कोई कर्मचारी अपनी गल्ती सच्चाई से स्वीकार कर लेता था तो मैं उसकी गल्ती की गम्भीरता का विचार किये बिना उसको छोड़ दिया करता था। प्रतिदिन कार्यालय का कार्य प्रारम्भ होने से पूर्व मैं अपने कार्यालय में सभी कर्मचारियों को एकत्र करके ईश्वर

की प्रार्थनाओं में शामिल किया करता था। इस सबका यह परिणाम हुआ कि प्रशासन का जो नैतिक स्तर गिर गया था वह एक वर्ष के अन्दर विशेषरूप से ऊँचा उठ गया तथा भ्रष्टाचार लगभग पूर्णरूप से समाप्त हो गया। जब उस वर्ष जिला परिषद को उसके इतिहास में सर्वाधिक आय प्राप्त हुई तो इससे स्वयं ही बाबा की कृपा स्पष्टरूप से उजागर हो गई। उसके पश्चात् जिला परिषद अपने भरपूर प्रयासों के बावजूद आज तक सर्वाधिक आय के उस रिकार्ड को कभी प्राप्त नहीं कर सका। यह मात्र बाबा की कृपा थी जिसके द्वारा मैंने कार्यालय में रहकर बाबा के लिये तथा बाबा के नाम पर कार्य किया।

कार्यालय के काम के साथ मैंने कार्यालय में, नगर में, तथा जहाँ कहीं मेरे दौरों के दौरान लोग मुझे मिलते थे, मैं उन्हें बाबा का साहित्य देता था और उनको बाबा के बारे में बतलाता भी था। इसका परिणाम यह हुआ कि उनमें से कई लोग, जो जिले में जिला परिषद के अन्तर्गत विभिन्न स्थानों पर काम करते थे, सक्रिय रुचि के साथ मेहेरबाबा के दैवी क्षेत्र में आये। हमने बाबा के निर्देशानुसार उनके दर्शन के लिये लोगों को तैयार करने हेतु पर्चे भी छपवाकर वितरित किये।

## प्रेम-प्रवाह

प्रेम का यह नियम है कि इसका प्रवाह मिलन की अपेक्षा विरह में अधिक तीव्रता से होता है। १६ अक्टूबर १९४९ ई. से हम लोग बाह्यरूप से बाबा से पृथक् हुये थे तथा भविष्य में उनसे पुनः मिलने की न कोई आशा थी और न कोई संकेत था। अतः उसी समय से मेरे हृदय से प्रियतम बाबा के प्रति प्रेम में अनेक प्रेम-गीत प्रवाहित होते थे। मैं एकान्त में बाबा के बारे में सोचता था, और मेरे हृदय से उनके प्रति प्रेम-गीत स्वतः प्रवाहित होते थे। और, यद्यपि न तो मैं कवि था और न ही कभी कविता करने का प्रयास किया था, फिर भी तीन वर्ष तक प्रियतम बाबा के प्रति प्रेम-गीत स्वतः प्रवाहित होते रहे। एक बार बाबा ने मेरे इन सभी गीतों को सुना तथा उन्हें सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुये और समय मिलने पर मुझे इसी प्रकार और अधिक गीत लिखने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित किया।

उन गीतों में ''मेहेर चालीसा'' अत्यधिक लोकप्रिय हो गया। इसकी रचना मैंने २४ मार्च १९५० ई. को प्रारम्भ की थी जब बाबा हरिद्वार के निकट किसी स्थान पर अपनी 'नई ज़िन्दगी' में थे। मेरे हृदय से मेहेर चालीसा का प्रवाह कई भिन्न-भिन्न तिथियों में हुआ जो इस प्रकार हैं :— २४, २५ तथा २६ मार्च; ४, ११ तथा १८ जून १९५०। २८ अगस्त को यह अन्तिम रूप से पूरा हो गया था। अवतार मेहेरबाबा ने विभिन्न अवसरों पर लगभग १० बार मुझसे यह प्रेम-गीत सुना है और वह इससे अत्यधिक प्रभावित होते थे। यह अब इसके अंग्रेजी अनुवाद सहित एक बड़ी सजिल्द पुस्तक के रूप में छप चुका है और अवतार मेहेरबाबा ने इसकी एक प्रति पर कृपापूर्वक, प्रसन्न होकर अपने हस्ताक्षर भी कर दिये हैं जो प्रति मुझे प्रदान कर दी गई है। इस प्रकार यह ''मेहेर चालीसा'' अमर हो गया तथा यह मेरी अमूल्य निधि हो गई।

## द्वितीय दर्शन

अब मेरे हृदय में बाबा का दर्शन फिर से करने की तीव्र लालसा जगी। बाबा के कार्यालय से प्रकाशित 'नई ज़िन्दगी' के गश्तीपत्रों के द्वारा मुझे उस समय बाबा के हरिद्वार के निकट होने की जानकारी हो गई थी। १३ अप्रैल १९५० ई. को हरिद्वार में पूर्ण-कुम्भ-स्नान दिन था। मैंने उस कुम्भ के दौरान हरिद्वार की तीर्थयात्रा इस आशा के साथ की कि बाबा वहाँ साधुओं तथा सन्तों के जुलूस में निश्चितरूप से मिलेंगे तथा मैं दूर से ही उस जुलूस में उनका दर्शन पा सकूँगा। मेरे लिये कुम्भ-स्नान बाबा का दर्शन करने के सिवा कुछ भी महत्व नहीं रखता था। उस अवसर पर बाबादास मेरे साथ थे। बाबादास की सहायता से मैं गंगा नहर के किनारे उस स्थान पर पहुँचने में समर्थ हो सका जिसके ठीक सामने दूसरे किनारे पर स्थित एक इमारत की ऊपरी मंजिल में बाबा अपनी नई ज़िन्दगी के साथियों के साथ ठहरे थे। कभी-कभी बाबा कमरे से बाहर छज्जे पर खड़े होकर दूरबीन से करोड़ों तीर्थ यात्रियों को देखते थे। कभी-कभी बाबा पूरे छज्जे में टहलते थे। पूरे कुम्भ-दिनों के दौरान बाबा के इस प्रकार छज्जे में आने से उनके कई प्रेमियों को उन्हें देखने का तथा जीभरकर अपने प्रियतम बाबा का दर्शन करने का एक अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। कुम्भ-

स्नान का समय सायंकाल लगभग ३ बजे से प्रारम्भ होकर रात्रि ७ बजे के लगभग समाप्त होता था। जहाँ मेरे प्रियतम बाबा थे वहीं मेरी गंगा थी। जैसा बताया जा चुका है गंगा नहर के ठीक उसी स्थान पर मैंने बाबा का नाम लेकर कई डुबकियाँ लगाईं, और प्रत्येक डुबकी के बाद जब मैं ऊपर उठता था तो मुझे बाबा का यथेष्ट दर्शन मिलता था। कुम्भ की समाप्ति पर (रात्रि ७ बजे) मैंने पुनः बाबा का नाम लेकर अन्तिम डुबकियाँ लगाईं, और मुझे बाबा के दर्शन की जो लालसा थी वह प्रत्येक डुबकी के साथ पुनः प्राप्त हुई। जहाँ तक मुझे याद है ७ बजे रात्रि के समय पर्याप्त अँधेरा था, और फिर भी उस अँधेरे में प्रत्येक डुबकी के पश्चात् मैं स्पष्टरूप से छज्जे में बाबा के देदीप्यमान रूप को देख सकता था। मेरी कुम्भ तीर्थयात्रा पूरी तरह से सफल हो गई थी तथा मेरा कुम्भ-स्नान शत प्रतिशत परिपूर्ण हो गया था। मुझे अत्यधिक खुशी तथा आनन्द आया।

## प्रथम आलिंगन, प्रथम मुस्कान, प्रथम प्रसाद

बाबा के इस दर्शन ने मुझे ज़िन्दगी के लिये नयी प्रेरणा दी। मैं अब अत्यन्त खुशी-खुशी हमीरपुर वापिस आ गया तथा अपने प्रशासनिक कार्यों में लग गया। मैं इन कार्यों को बाबा का ही कार्य समझकर पूरे मनोयोग से इनमें जुट गया। बाबादास अब हमीरपुर में ही रह रहे थे। वह बाबा के यहाँ से आ गये थे। हम लोग मिले और बाबा के प्रति अपने प्रेम की अनुभूतियों की चर्चा की। जैसे-जैसे दिन बीतते गये मैं अपने प्रति बाबा की कृपा के प्रवाह से, जो मेरे सभी क्रियाकलापों का एकमेव आनन्दपूर्ण सहारा था, उत्तरोत्तर सजग होता गया।

१५ सितम्बर १९५० ई. को मुझे नई ज़िन्दगी का गश्तीपत्र सं. १७ (दिनांक ११ सितम्बर १९५०) प्राप्त हुआ जिसमें महाबलेश्वर में १६ अक्टूबर १९५० ई. को प्रातः ७ बजे से बाबा द्वारा एक संक्षिप्त कार्यक्रम का आयोजन किये जाने की सूचना थी।

बाबा ने उस मीटिंग में भाग लेने के लिये अपनी पुरानी ज़िन्दगी के सभी साथियों को आमन्त्रित किया था। मैं एक बार पुनः बाबा के समक्ष उपस्थित होने के इस अवसर को पाकर अत्यन्त प्रसन्न था। इस जिले से

कई अन्य लोग भी मीटिंग में भाग लेने के लिये महाबलेश्वर पहुँचे थे। मैं उनमें से एक था। बाबा आगा खान के बँगला नं. ३६४ में ठहरे हुये थे, और कार्यक्रम उसी स्थान पर होना था। हम सभी लोग १६ अक्टूबर को बड़े तड़के स्नान करके प्रातः ६ बजे बँगले में पहुँच गये। हमारे प्रियतम बाबा उस सुहावनी सुबह में बरामदे में अपना गुलाबी कोट पहने हुये खड़े थे। बाबा उसी स्थान पर हम सबसे एक एक करके मिले, तथा प्रत्येक के दोनों गालों पर स्नेहपूर्वक हाथ फेरे। किन्तु, जब श्री आदि के. ईरानी ने बाबा से मेरा परिचय कराया, तो बाबा ने स्नेहपूर्वक मुझे अपने हृदय से लगा लिया और फिर गालों को भी प्यार से सहलाया। वहाँ एकत्रित पूरे ग्रुप में मैं ही एकमात्र ऐसा भाग्यशाली था जिसने उस अवसर पर बाबा का आलिंगन प्राप्त किया।

यह बाबा की अनुपम कृपा थी जो उन्होंने केवल मुझे प्रदान की। इस प्रकार मैंने ईश्वर का केवल प्रथम स्पर्श ही नहीं बल्कि उसका वर्णनातीत प्रथम आलिंगन भी प्राप्त किया। बाबा ने प्रेमियों को एक अवसर दिया कि जो लोग उनके पिछले गश्तीपत्र के आदेशों का पालन करने के सम्बन्ध में कोई चीज़ पूछना चाहें वह उसके बारे में उनको बतावें। मैंने ३०-८-१९४६ ई. को एक वर्ष तक बाबा के तीनों आदेशों का पालन करने की अपनी स्वीकृति दी थी : (१) पैसे को न छूना (२) स्त्री को न छूना (३) प्रत्येक सप्ताह २४ घण्टे का उपवास रखना। मैंने बाबा को बताया कि अपने वादे के अनुसार, मैंने स्त्री को न छूने के आदेश का पालन करने में अपना भरसक प्रयास किया किन्तु केवल ६ माह तक इसका १००% पालन कर सका। बाबा यह सुनकर प्रसन्न हुये कि मैंने ६ माह तक सफलतापूर्वक प्रयास किया। शेष दो आदेशों का मैंने पूरे वर्ष १००% पालन किया। मैंने बाबा से बताया कि सप्ताह में २४ घण्टे का उपवास रखने के समय के बारे में भ्रम हो जाने से मैंने प्रत्येक सप्ताह ३६ घण्टे का उपवास रक्खा। बाबा यह सुनकर अत्यधिक खुश हुए और इसके लिये उन्होंने मुझे अपने विशेष प्रसाद के रूप में एक सन्तरा दिया। इसके बाद बाबा ने मुझसे २४ घण्टे का उपवास आगे भी रखने के लिये कहा, जिसका पालन मैं आज भी करता हूँ। बाबा ने अपने शेष दो आदेश–(१) पैसा न छूना, तथा (२) स्त्री को न छूना, मुझसे वापस ले लिये।

मीटिंग की समाप्ति पर बाबा ने स्वयं उस अवसर के लिये अपने प्रवचन की एक-एक प्रति प्रत्येक जन को वितरित की। उस प्रवचन की प्रति देते हुए बाबा ने मेरी ओर देखा और मुस्कराये। उनकी मुस्कान के प्रत्युत्तर में मैं भी मुस्करा दिया, और इस प्रकार प्रेमी तथा प्रियतम के बीच प्रथम रहस्यपूर्ण मुस्कान का आदान प्रदान हुआ।

५ घण्टे के कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात् बाबा पुनः अपनी 'नई ज़िन्दगी' में प्रवेश कर गये।

## हैदराबाद (दक्षिण) में बाबा से पुनर्मिलन
## जून १९५१

ईश्वर का स्पर्श, आलिंगन, मुस्कान तथा प्रसाद प्राप्त करने के पश्चात् उनके लिये मेरी लालसा और भी अधिक बढ़ गयी। बाबादास की सहायता से अपने आप को मैंने इस जिले के बाबा-कार्य में अधिकाधिक व्यस्त कर दिया। यद्यपि मैं जिला परिषद के कार्यालय कार्य को अब भी १००% परिश्रम, ईमानदारी तथा उत्साह से करता था, किन्तु फिर भी इसमें मेरा आकर्षण कम होने लगा। मैं ऐसा इसलिये कर सका क्योंकि मैं जिला परिषद के कार्य को अपने लिये स्वयं बाबा द्वारा प्रदत्त कार्य मानता था। किन्तु जैसे-जैसे दिन बीतते गये, पूरे समय अपने को बाबा-कार्य में ही समर्पित करने की मेरी अभिलाषा उत्तरोत्तर बढ़ती गई। और, मेरी यह दशा अबाध गति से जारी रही।

३ मई १९५१ ई. को मुझे बाबा का एक पत्र मिला जो १ मई को लिखा गया था तथा जिसमें मुझे २८, २९, ३० जून १९५१ को तीन दिन के लिये बाबा के पास हैदराबाद (दक्षिण भारत) में रहने के लिये आमन्त्रित किया गया था। उस अवसर के लिये इस जिले से कुछ अन्य लोग भी आमन्त्रित किये गये थे जिनमें से मेरे साथ श्रीपति सहाय, गयाप्रसाद खरे, लक्ष्मीचन्द पालीवाल, भवानी प्रसाद निगम, परमेश्वरी दयाल निगम २६ जून को हैदराबाद पहुँच गये किन्तु हम लोगों को निर्दिष्ट स्थान (जुबली पहाड़ी पर अली नवाज़ जंग बँगला) पर २७ जून को दोपहर बाद पहुँचने के निर्देश दिये गये थे इसलिये हम लोग कुछ समय के लिये एक धर्मशाला में ठहर

गये। जब हम लोग गश्तीपत्र में दिये निर्देशानुसार २७ जून की शाम को अली नवाज़ जंग बँगला पहुँचे तो हमें दुखद जानकारी मिली कि जो प्रेमी वहाँ जल्दी ही दोपहर के पूर्व अथवा दोपहर के बाद पहुंच गये थे उन सभी से बाबा मिले थे, और हम लोग बाबा के गश्तीपत्र का १००% पालन करने के अपने प्रयासों में उस अवसर से वंचित रह गये। बाबा ने उस अवसर पर प्रेमियों से मिलने के दौरान हम लोगों के बारे में कई बार पूछा। हमारे पहुँचने की सूचना बाबा को दी गई, और उन्होंने घोषित किया कि वह अगले दिन सुबह अपना कार्यक्रम प्रारम्भ करने के पूर्व उन प्रेमियो ंसे मिलने के लिये ५ मिनट का समय देंगे जो २७ जून को उनसे नहीं मिल सके थे। मैं यह सुनकर बहुत खुश हुआ।

मैं यहाँ यह बताना उचित समझता हूँ कि बाबादास अपने निजी कारणों से मुझसे अत्यधिक रुष्ट हो गये थे तथा प्रायः लोगों से कहा करते थे कि मैं बाबा के सान्निध्य से दूर हो गया हूँ। वह बाबा के एक पुराने तथा घनिष्ठ प्रेमी एवं कार्यकर्ता थे। मैं अपने बारे में उनके इस प्रकार के शब्दों को सुनकर तनिक भी विचलित अथवा दुखी नहीं होता था। क्योंकि मेरे लिये स्वप्न में भी बाबा को छोड़ने की अपेक्षा, अपने जीवन को त्यागने की बात ज्यादा आसान थी। जब बाबादास मुझसे इस प्रकार से बात किया करते थे, तो मैं विचार किया करता था, '' क्या इतनी गहराई एवं प्रेमपूर्वक उन्हें मानने के बाद भी बाबा मुझे अपनी शरण से बाहर फेंक देंगे ?'' और मेरा अन्तस्तल सदैव बाबा के इस उत्तर को सुनता था कि ईश्वर सदैव सच्चे व्यक्ति की मदद करता है और वह कभी भी उसे हारने नहीं होने देता।

शायद इसी विचार की पुष्टि में, बाबा ने अली नवाज़ जंग बँगला की ऊपरी मंज़िल में मुझे ठहरने के लिये अपना आदेश दिया, जबकि बाबादास तथा हमीरपुर से आये अन्य लोगों को नीचे का कमरा दिया। तिस पर भी बाबादास उन तीन दिनों तक इस सीमा तक मेरा उत्पीड़न करते रहे कि उन्होंने मुझे अपने प्रियतम बाबा के साथ शान्ति से सहवास का आनन्द नहीं लेने दिया। किन्तु, बाबा से कोई चीज़ हमेशा छिपी नहीं रह सकती, क्योंकि बाबा एक ऐसे डाक्टर हैं जो सभी बीमारियों की चिकित्सा करते हैं।

२८ जून १९५१ ई. को बाबा ने प्रातःकालीन सत्र का कार्यक्रम प्रारम्भ करने के पूर्व, उन लोगों से मिलने के लिये ५ मिनट का समय दिया जो २७ जून को देर से पहुँचने के कारण बँगले में उनसे नहीं मिल पाये थे। बाबा से मिलने के इस अवसर को पाकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा, एक ऐसा अवसर जिसके बारे में मैं सोच नहीं सकता था। जिस क्षण मैं बाबा के समीप पहुँचा मैंने बिना किसी विलम्ब के उनके चरणों में अपने हृदय का बोझ हल्का कर दिया, ''बाबा, मुझे प्रत्येक चीज़ से अरुचि हो गई है। मैं सांसारिक क्रियाकलापों से पूर्णतया ऊब गया हूँ तथा मैं हर क्षण, पूरे दिन केवल बाबा-कार्य करना चाहता हूँ।'' बाबा ने मेरी बातें गम्भीरता के साथ सुनीं तथा उसके उत्तर में वह वर्णमाला तख्ती पर अपनी अँगुलियाँ तीव्रता से चलाने लगे। श्री आदि के. ईरानी ने उनका उत्तर मुझे बताया, ''अपनी इस उत्कट इच्छा को फरवरी १९५२ ई. तक बनाये रखो।'' बाबा के साथ मेरा साक्षात्कार समाप्त हो गया। मैं इतने समय से अपने सिर पर जो सम्पूर्ण बोझ लिये था उससे मैंने पूर्ण मुक्ति का अनुभव किया।

तीन दिन तक हैदराबाद कार्यक्रम एक चक्रवात की गति से चला। और, यह कैसा कार्यक्रम था। २८ जून १९५१ ई. को बाबा ने 'मनोनाश' के सम्बन्ध में ऐतिहासिक घोषणा की। इसके अतिरिक्त उस दिन की दूसरी महत्वपूर्ण घटना यह थी कि बाबा ने स्वयं अपने साथ हम सबको हैदराबाद नगर तथा उस्मान सागर की सैर करवाई। बाबा ने अपने प्रेमियों से मनोरंजक तथा परिहास पूर्ण कहानियाँ सुनीं तथा उनके द्वारा प्रस्तुत कुछ हास्य कलायें भी देखीं, और इससे सभी के लिये एक खुशी का वातावरण उत्पन्न हो गया। ३० जून की सुबह उन्होंने अपने सभी प्रेमियों के साथ फोटो खिंचाये जाने की अनुमति दे दी और हमें अपने-अपने स्थान पर प्रत्येक प्रेमी को बाँटने के लिए अपना प्रसाद भी दिया। यह पहला मौका था जब बाबा ने ऐसा किया। इस नाटक में, मैंने एक स्त्री की भूमिका अदा की तथा घूँघट से बाबा को प्रेम की चितवन से देखा। बाबा इससे अत्यधिक प्रसन्न हुये। फिर, अन्य लोगों के साथ मुझे भी अपने अभिनय पर इनाम के रूप में बाबा के हाथ से एक बाबा-बैज मिला। आज भी वह बैज उस दिन की स्मृति में मेरी प्रिय धरोहर है। ३० जून १९५१ ई. को मैंने

हैदराबाद से प्रस्थान कर दिया, और रास्ते में जबलपुर, रीवा तथा इलाहाबाद के अपने परिचित प्रेमियों को बाबा का प्रसाद बाँटते हुए अन्त में हमीरपुर पहुँचकर अपने कार्यों में लग गया।

## मेरे लिये प्रथम कार्य

हैदराबाद से लौटने पर मुझे बाबा से पहला कार्य मिला। बाबादास ने इस जिले के लिये ''श्री मेहेरबाबा की अखण्ड ज्योति'' (बाबा के हिन्दी प्रवचन) के ५०० सेट अहमदनगर से मँगाये थे, किन्तु उसके उस समय तक बहुत थोड़े सेट बिके थे। उन सेटों की छपाई के बिल का हिसाब चुकता करने के लिए बाबा ने १६ अक्टूबर १९५१ ई. तक उन्हें बेंच डालने का हमें निर्देश दिया था। हैदराबाद से हमीरपुर आने के पश्चात्, बाबादास ने सेटों को बेचने की जिम्मेदारी मुझे सौंपने की बात बाबा को पत्र में लिखी और पत्र लिख लेने के बाद इसके बारे में मेरी राय मांगी। इस कार्य में मेरी जिम्मेदारी की बात बाबादास पहले ही पत्र में लिखित रूप से ला चुके थे, अतः मैंने बाबा का ध्यान किया और आश्वस्त हो गया कि यह बाबा के नाम पर सौंपा गया कार्य है और इसलिये इसमें निश्चित रूप से सफलता मिलेगी। बाबा अपना कार्य स्वयं करते हैं। इसलिये मैंने बाबादास को वैसा लिखने की अपनी स्वीकृति प्रसन्नतापूर्वक दे दी। बाबादास ने अपना पत्र बाबा को भेज दिया। बाबादास को सेटों के बेचने में मेरी सहायता करने के लिये बाबा की ओर से लिखा गया था, किन्तु बड़ी विचित्र बात यह थी कि उन्होंने मेरी सहायता करने के बजाय मेरे प्रयासों में बाधा डालनी शुरू कर दी। जब मैंने बाबू रामप्रसाद, गयाप्रसाद खरे तथा श्रीपति सहाय, इत्यादि को सेटों के खरीदने के लिये तैयार किया, तो बाबादास इन लोगों के पास गये और अपने मन से ही कहने लगे कि अब सेटों को नहीं बेचा जाना है। बाबादास ने एक बार यही बात मुझसे भी कही, किन्तु चूँकि मैंने यह जिम्मेदारी सीधे बाबा से ली थी, अतः मैंने उनकी बात अनसुनी कर दी। मैं घूम-घूमकर अपने साथियों को इन सेटों को खरीदने के लिए कहता रहा। बाबा-कार्य में मुझे असफल देखने के बाबादास के सभी प्रतिकूल प्रयासों के बावजूद, बाबा की कृपा से १६ अक्टूबर १९५१ से पूर्व ''श्री

मेहेरबाबा की अखण्ड ज्योति'' के सभी सेट बिक गये। यह बाबा की कृपा का चमत्कार था। अब, बाबादास इन सेटों की बिक्री से प्राप्त बड़ी रक़म स्वयं अपने अधिकार में लेना चाहते थे, किन्तु अहमदनगर स्थित बाबा के कार्यालय ने मुझे स्पष्ट निर्देश दिये थे कि सेटों की बिक्री की पूरी रकम तथा हिसाब सीधे इस कार्यालय को भेजना है। मैंने उस निर्देश का पालन किया। इससे बाबादास मेरे ऊपर और भी अधिक आगबबूला हो गए तथा अब उन्होंने बाबा से मेरा सम्बन्ध समाप्त करने के लिए अपने प्रयासों को दुगुना कर दिया।

बाबा द्वारा मुझे दी गयी प्रथम जिम्मेदारी को सफलता पूर्वक निभाने से मैं खुश था ! और, निश्चित ही यह केवल बाबा की कृपा के कारण सम्भव हुआ था !

अब, मेरी एकमात्र इच्छा निरन्तर बाबा-कार्य करने की थी। ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरी इस अन्तः अभिलाषा को परिस्थितियों द्वारा बाह्य रूप से सहारा दिया गया था जो अब तदनुकूल घटित होने लगीं। जिला परिषद हमीरपुर के मेरे सहकर्मी मेरे कठोर नैतिकतापूर्ण कार्यों के ढँग, निष्कपट कार्य प्रणाली, तथा मेरे भजनों, प्रार्थनाओं और बाबा-कार्य से मुझसे असन्तुष्ट हो गये। वे अखण्ड नाम संकीर्तन के मेरे लम्बे कार्यक्रम पसन्द नहीं कर सके यद्यपि ये कार्यक्रम मैं कार्यालय के काम को पूरी तरह निभा करके ही करता था। कार्यालय के मेरे अधीनस्थ कर्मचारी मेरे दृढ़ समय पालन, कठोर अनुशासन तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष से खुश नहीं थे। इस सबके परिणाम स्वरूप जिला परिषद सदस्यों की एक मीटिंग हुई जिसमें मेरी सेवाओं को स्थायी करने की बजाय, बिना कोई कारण बताये परीक्षण काल की अवधि ३१ दिसम्बर १९५१ तक एक वर्ष के लिये और बढ़ा दी गई। अपनी ईमानदार, निष्ठावान, यथार्थ सेवाओं के लिये इस प्रकार का पुरस्कार पाकर जिला परिषद के इस निर्णय पर मुझे कष्टपूर्ण निराशा हुई। तिस पर भी, मैं पहले की ही तरह अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से निर्वाह करता रहा। कार्यालय के कर्मचारी, यह समझकर कि जिला परिषद के सदस्य मुझसे असन्तुष्ट हैं, इस अवसर का लाभ उठाकर मेरा अनादर

करने लगे तथा कार्यालय में ही मुझसे अपमानजनक ढँग से बात करने लगे। स्वयं अध्यक्ष, जिनका मैं अत्यधिक सम्मान करता था, मेरे विरुद्ध हो गये और मेरे अधीनस्थ कर्मचारियों के दुर्व्यवहार से होने वाली पीड़ा तथा मेरी सभी शिकायतों के प्रति बहरे हो गये। इस प्रकार परिस्थितियाँ इस ढंग से केन्द्रित हुईं कि हैदराबाद में मैंने बाबा से जो प्रार्थना की थी उसके फलीभूत होने का समय निकट आ गया।

## वर्ष १९५२ :

वह संकट, वर्ष १९५२ के प्रारम्भ में पहुँच गया। और, भाई परमेश्वरीदयाल की साम्यवादी नीति ने संकट को और भी गहरा कर दिया क्योंकि वह अब भी मुझे राजनीति में घसीटने का प्रयास कर रहे थे। भाई परमेश्वरीदयाल को अध्यक्ष दीवान शत्रुघ्न सिंह तथा उनकी पार्टी को नीचा दिखाने का एक अच्छा अवसर मिल गया क्योंकि उन्होंने मात्र दुराग्रहवश अन्यायपूर्ण ढँग से मेरे परीक्षण काल की अवधि बढ़ा दी थी। मेरे साथ उनके अन्यायपूर्ण व्यवहार के प्रतिवाद में, परमेश्वरी दयाल ने अब अपने प्रभावहीन राजनैतिक समाचार पत्र 'पुकार' में लम्बा लेख प्रकाशित किया। जिला परिषद के लोग अब भी मुझे तथा भाई परमेश्वरीदयाल (पुकार) को एक अभिन्न राजनैतिक जोड़ी के रूप में मानते थे यद्यपि मैंने पूर्णरूप से राजनीति से तथा उस क्षेत्र में अपने मित्र परमेश्वरी दयाल से भी सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था। उन्हें निश्चितरूप से विश्वास था कि उनके विरुद्ध उन बदनाम करने वाले लेखों के प्रकाशन के पीछे व्यक्तिगतरूप से मेरा हाथ है, और इससे वे लोग मुझसे और भी अधिक क्रुद्ध हो गये। इस प्रकार भाई परमेश्वरीदयाल अन्ततः इस सीमा तक मुझे जिला परिषद की सेवा से हटाने तथा निष्कासित करने के कारण बन गये जितना कि वह १९४८ ई. में मुझे हमीरपुर से विन्ध्य प्रदेश भेजने के कारण बने थे।

## संकट काल से आपदा की ओर

अन्ततः वर्ष १९५२ का भाग्यशाली फरवरी महीना आ गया जिसके लिये बाबा ने मुझसे ''हर समय केवल बाबा-कार्य ही करना'' की अपनी

लालसा बनाये रखने के लिये कहा था। अब उनके लिए यह मेरा भाग्य निश्चित करने का समय था, और उन्होंने इसे निश्चित किया। २५ फरवरी १९५२ ई. (बाबा का जन्मदिवस) को दीवान शत्रुघ्न सिंह तथा उनकी पार्टी ने जिला परिषद की मीटिंग में मेरी सेवा स्थायी न करने का, और मुझे हटाने से रिक्त पद पर अन्य की नियुक्ति करने का प्रस्ताव पास कर दिया। यहाँ इस बात का कुछ भी महत्व नहीं है कि जिला परिषद के सभी सदस्य, जिन्होंने अब मुझे सेवा से हटाया था, मेरे भूतकाल के राजनैतिक जीवन के घनिष्ठ मित्र तथा सहकर्मी थे, और जिला परिषद के अध्यक्ष दीवान शत्रुघ्न सिंह जिले में मेरे पूज्य आदर्श थे जिनके नाम पर तथा जिनके लिये मैं राजनैतिक कार्य किया करता था। वह मेरे हृदय में गहरा स्थान रखते थे। जिला परिषद का यह बाह्य निर्णय मेरे भविष्य के सम्बन्ध में बाबा के स्वयं के निर्णय की पुष्टि था जिसकी सूचना मुझे पहले ही १२ फरवरी १९५२ ई. को सायंकाल एक तार द्वारा मिल गयी थी। तार निम्नलिखित था :–

> **''अपने नगर में प्रत्येक को तथा मेरे सभी प्रेमियों को निश्चित रूप से मेरा यह सन्देश दें : आज मेरे इस प्रथम यथार्थ जन्मदिवस के अवसर पर तुम सबको ईश्वर का आशीर्वाद तथा मेरा प्रेम।''**
>
> **–बाबा**

मेहेरबाबा से इस प्रथम आदेश को पाकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैंने शीघ्रता से इस सन्देश की प्रतियाँ टाईप करायीं और उन्हें तुरन्त हमीरपुर नगर के सभी बाबाप्रेमियों को भेज दिया। मैंने सन्देश की प्रतियाँ हमीरपुर जिले के तथा उसके बाहर रहने वाले अपने सम्पर्क के सभी बाबा-प्रेमियों को भी डाक द्वारा भेज दीं। रीवा से आने के पश्चात् मैं पहले ही अपनी इच्छा से इन लोगों को बाबा के गश्तीपत्र भेजा करता था। किन्तु, उस समय मैं नहीं जानता था कि भविष्य में मेरे लिये बाबा क्या करने जा रहे हैं।

२५ फरवरी १९५२ ई. के जिला परिषद के निर्णय के अनुपालन में, मुझे परिषद के अध्यक्ष का १८ मार्च १९५२ ई. का एक आदेश मिला कि मुझे

अपने पद को खाली करके दो दिन के अन्दर ही अपना कार्यभार दे देना चाहिये। उस आदेश के क्रियान्वयन वाला भाग एक राजपत्रित अधिकारी के लिए अत्यधिक अपमानजनक था। मुझे अपना कार्यभार देने के लिये केवल दो दिन का समय दिया गया था। मुझे सभी फाइलों तथा कागजातों की कार्यभार सूची तैयार करनी थी, जिला परिषदके अपने आवास के क्वार्टर को खाली करने के लिए अपनी सभी चीज़ों को समेटकर बाँधना था, और अपने बच्चों तथा गृहस्थी का सब सामान लेकर शहर में किराये का एक मकान भी ढूँढ़ना था। किन्तु बाबा की कृपा से मैं उन दो दिनों के अन्दर सभी चीज़ों को पूरा करने में समर्थ हो गया, और २० मार्च १९५२ ई. की शाम को मैं जिला परिषद की सेवा से पूर्णरूप से मुक्त हो गया और बाबा-प्रेमी श्री लक्ष्मीचन्द्र पालीवाल के स्थानीय आवास में शरण ले ली। मैं महसूस करता हूँ कि भौतिक जगत में मेरी बर्बादी का यह अन्त था और बाबा के दिव्य पथ पर मेरे यथार्थ आध्यात्मिक पुनः प्रतिष्ठापन का प्रारम्भ था।

यह मेरे जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटनाओं में से एक थी, जिसने एक असामान्य तथा अभूतपूर्व आघात देने के बावजूद मुझे अनेक अमूल्य अनुभव दिये तथा बाबा के यथार्थ जीवन का भागीदार बना दिया। पूर्ण सफलता के साथ ''मनोनाश'' को सम्पन्न करने के पश्चात् बाबा २१ मार्च १९५२ ई. से अपने यथार्थ जीवन की ''जटिल स्वतन्त्र जीवन'' अवस्था में प्रवेश कर गये। इसलिये मानो उस जीवन में हमेशा के लिये सम्मिलित होने हेतु मुझे २० मार्च १९५२ ई. को जिला परिषद के सेक्रेटरी पद के कार्य भार से मुक्त कर दिया गया। तत्पश्चात् मैं पुनः कभी भी किसी दुनियावी कार्य से सम्बद्ध नहीं हुआ। यह ''स्थायी स्वतन्त्रता थी ! बाबा ने मुझे सदैव के लिए अपने यथार्थ जीवन में ले लिया'' ! मैं महसूस करता हूँ कि यह वस्तुतः ऐसा ही है।

बाबा ने मुझे उस असामान्य घटना का आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिये श्री आदि के. ईरानी द्वारा लिखे एक पत्र के माध्यम से अपना निम्नलिखित सन्देश भेजा :–

''बाबा कहते हैं कि यदि आपको सच्चाई के कारण कष्ट उठाना पड़े तो चिन्ता मत करें, यह एक आशीर्वाद है। ईश्वर की मर्ज़ी के अधीन रहें।''

स्पष्टरूप से भगवान मेहेरबाबा का यह सन्देश मिलने के पश्चात्, मेरे लिये किसी भी प्रकार की चिन्ता करने का कोई कारण नहीं रह गया था।

## घटना के अनुकूल परिणाम

प्रत्यक्षरूप से एवं दुनियावी दृष्टिकोण से यह घटना इतनी दुर्भाग्यपूर्ण दिख रही थी परन्तु वह मेरे लिये तथा मेरे बाबा-कार्य के लिए निःसन्देह आशीर्वाद सिद्ध हुई। निष्पक्ष दृष्टिकोण से यह घटना मेरी उस इच्छा की पूर्ति स्वरूप थी जो मैंने हैदराबाद में २८ जून १९५१ ई. को बाबा से चाही थी, और जिसके लिये बाबा ने मुझसे फरवरी १९५२ ई. तक लालसा बनाये रखने के लिये कहा था। यह वह घटना थी जिसने हमीरपुर जिले में बाबा-कार्य के लिये ठोस नींव रखी। राजनीति के क्षेत्र में यहाँ के लोग भूतकाल की मेरी ईमानदारी से प्रभावित थे, तथा जिला परिषद में अपने प्रशासन के अन्तिम दो वर्षों में मैंने दृढ़, ईमानदार तथा निष्पक्ष प्रशासनिक नीति के कारण अनेक लोगों के हृदयों में अपना स्थान बना लिया था। जैसा पहले बताया जा चुका है मुझे अन्यायपूर्ण एवं अपमानजनक ढँग से सेवा से निष्कासित करने पर जिले भर के लोगों ने अत्यधिक दुख का अनुभव किया। परिस्थितियाँ सर्वलोकप्रिय नेता दीवान शत्रुघ्नसिंह के प्रतिकूल हो गईं। वह अभी तक एक आदर्श एवं पूज्य नेता के रूप में माने जाते थे लेकिन मेरे निष्कासन से वह अब एक बेईमान एवं अन्यायी व्यक्ति के रूप में समझे जाने लगे। उसी समय से उनका प्रभाव क्षीण होने लगा, कई ईमानदार कार्यकर्ताओं ने उनके साथ अपने सम्बन्ध विच्छेद कर लिये, और क्रमशः उनका नेतृत्व तथा प्रभाव पूर्णतया समाप्त हो गया।

मैं स्वयं दीवान शत्रुघ्न सिंह के प्रति अत्यधिक समर्पित था तथा उन्हें पूज्य भाव से देखता आया था। जैसा अब प्रियतम मेहेरबाबा के लिये है वैसा ही विश्वास और सम्मान उस समय दीवान शत्रुघ्नसिंह के लिये था। मैं उनको सत्य, न्याय तथा ईमानदारी की प्रतिमूर्ति के रूप में मानता था। किन्तु जिला परिषद में उनके अधीनस्थ अपनी सेवा के अन्तिम दो वर्षों में उनकी निम्नकोटि की गतिविधियों को देखकर तथा मेरे साथ घटित अन्तिम व्यवहार ने उनको मेरे हृदय से पूर्णतया बाहर निकाल फेंका, और

उनके स्थान पर अब ईश-मेहेरबाबा ने मेरा हृदय अपनी उपस्थिति से परिपूर्ण कर दिया। मैं अब महसूस करता हूँ कि मेरी आध्यात्मिक भलाई के लिये यह आवश्यक था कि उस व्यक्ति की गहरी जड़ें मेरे हृदय में निश्चित रूप से समाप्त हो जायँ।

मैं बाबा के इस कथन की सत्यता को और भी महसूस करने लगा कि कोई भी यथार्थ प्रेम जो किसी से किया जाता है, चाहे वह प्राणी हो अथवा निर्जीव, अन्ततः स्वयं बाबा के ही पास पहुँच जाता है। मैं दीवान शत्रुघ्नसिंह से ईमानदारी तथा स्वार्थहीनता से प्रेम करता था। और, अपने उस गहरे, ईमानदार तथा निःस्वार्थ प्रेम के कारण मैंने उनकी खोज का प्रयास किये बिना उचित समय पर वस्तुतः पूज्य अवतार मेहेरबाबा को पा लिया। और, जब वह मेरे हृदय में आकर विराजमान हो गये तो बनावटी देवता का वहाँ से सदैव के लिये अदृश्य हेा जाना ही स्वाभाविक था।

इससे अधिक, मेरे लिये इस घटना के पश्चात् पूरे एक वर्ष तक निरा गरीबी में एक फकीर की भाँति रहने का अच्छा भाग्य था। उस अवधि में मैंने दुनियावी सहारों तथा सम्बन्धों की असत्यता का तीव्र अनुभव किया। मैं चुने हुए वकील के रूप में, जिला परिषद के सेक्रेटरी के रूप में तथा अन्य उच्च पदों पर भी सेवा कर चुका था किन्तु अब मैंने अपने पास मात्र ३५ रु. बचत के रूप में पाये। निर्धनता की इस अवस्था में मैंने अपने बच्चों के साथ पूरा एक वर्ष व्यतीत किया। इस स्थिति के दौरान भवानी प्रसाद निगम, लक्ष्मीचन्द पालीवाल, तथा श्रीपति सहाय रावत जैसे बाबा-प्रेमी मेरे लिये यथार्थ पूँजी के रूप में सिद्ध हुये। तिस पर भी, उन दिनों हमें भयानक गरीबी का सामना करना पड़ा। मुझे उस समय की याद है जब हमें एक बार अपने भोजन के लिये तथा अपनी छोटी बीमार पुत्री, जोकि बाद में मर गई, के वास्ते दो पैसे की होम्योपैथिक दवा खरीदने के लिये कुछ दाल बेचनी पड़ी थी।

किन्तु मैं उस स्थिति में भी सदैव प्रसन्न रहता था तथा अभिरुचि के साथ बाबा-कार्य करता था। यह मेरा बड़ा सौभाग्य था कि कठिन परीक्षाओं के उन दिनों में मेरी पत्नी सुधादेवी निगम ने मुझे अपना पूरा सहयोग दिया तथा प्रत्येक चीज़ को बाबा की दैवी मर्ज़ी समझकर स्वीकार किया। उसने

अत्यधिक कष्टकारी परिस्थितियों में भी बाबा पर अपने दृढ़ विश्वास को कभी भी लेशमात्र कम नहीं होने दिया तथा मुझे सदैव आनन्द प्रदान किया। उसने सदैव बाबा-कार्य में मुझे भरपूर सहयोग प्रदान किया तथा हमेशा उनके आदेशों का पालन करने में मदद की। यदि वह चिढ़चिढ़े स्वभाव की होती तो केवल बाबा ही जानते हैं कि इस समय मेरे साथ क्या बीती होती।

## यथार्थ पुनः प्रतिष्ठापन का प्रारम्भ

मैंने जिला परिषद, हमीरपुर की सेवा से अपने निष्कासन को बाबा में अपना यथार्थ शरणस्थल पाने के प्रारम्भ के रूप में समझा, तथा परिस्थितियों ने अब स्पष्टरूप से इस सत्यता को दर्शाना प्रारम्भ कर दिया। २१ मार्च १९५२ ई. को बाबा ने अपना जीवन परिपत्र सं. ५ जारी किया तथा उन्होंने अपने दो घनिष्ठ शिष्यों एरच तथा पेन्डू को उनके (बाबा) ज्वालामय स्वतन्त्र जीवन के लिये वातावरण बनाने तथा लोगों को तैयार करने के वास्ते भारत तथा पाकिस्तान का भ्रमण करने के लिये आदेश दिया। ये दोनों जन विशेषरूप से हमीरपुर की यात्रा करने के लिये बाबा द्वारा निर्देशित किये गये थे, और उसी समय उन्होंने बाबादास को हमीरपुर जिले में उन दोनों जनों के साथ न रहने के लिये निर्देश दिया था। अब मैं एरच तथा पेन्डू के लिए कार्यक्रम की व्यवस्था करने में व्यस्त हो गया। अपनी पाकिस्तान यात्रा के पश्चात् वे लोग २६ मई १९५२ ई. को दोपहर ११ बजे हमीरपुर आ गये। हमने उनका 'भगवान मेहेर बाबा की जय !' के साथ अभिनन्दन किया। २७ मई से १ जून तक उन्होंने हमीरपुर, राठ, जराखर, नौरंगा, ब्यारजो, मेहेरास्ताना महेवा तथा इँगोहटा में सभायें कीं। उन्होंने प्रेमियों को प्रियतम मेहेरबाबा के बारे में बताया तथा उनके बारे में प्रेमियों के खुद के विचारों को सुना। वे लोग जहाँ भी गये उन्होंने बाबा-प्रेमियों के साथ प्रेम का आदान-प्रदान किया। इस प्रकार वे लोग प्रेम-बीज बोने हेतु बाबा के लिए क्षेत्र तैयार कर रहे थे।

प्रत्येक सभा के दौरान वे प्रेमियों को बाबा का यह आदेश बताते थे कि उन्हें प्रत्येक सप्ताह, अथवा पखवारे, अथवा महीने में एक बार किसी

निश्चित स्थान पर एकत्र होकर बाबा अथवा किसी सन्त अथवा अवतार के बारे में चर्चा करनी चाहिये अथवा दैवी साहित्य पढ़ना चाहिये। यह हमारी साप्ताहिक सभाओं की तथा मौजूदा बाबा-केन्द्रों की भी आधार शिला थी। यह उसी समय से था जबकि बाबा-प्रेमियों ने अपनी समझ के अनुसार सभाओं का आयोजन करना प्रारम्भ किया था तथा ये सभायें अन्ततः बाबा-केन्द्रों के रूप में परिवर्तित हो गईं।

मैं एरच तथा पेन्डू के साथ जिले में भ्रमण करने तथा उनके कार्यक्रमों को व्यवस्थित करने के कारण बहुत भाग्यशाली था।

हमीरपुर की यात्रा के दौरान मेरी इन दोनों जनों के संग एक घटना घटी जिसे मैं दुख के साथ याद करता हूँ तथा जो अब भी मेरे लिये पश्चात्ताप का कारण बनी हुई है। २६ मई १९५२ ई. को हमीरपुर में जब वे लोग विश्राम करने के बाद उठे तो मैंने उनसे पूछा, ''मैं आप लोगों के लिये चाय लाऊँ अथवा कोई ठण्डा पेय ?'' इसके उत्तर में एरचजी ने कहा, ''ऐसे गर्म मौसम में ठण्डा पेय उचित रहेगा।'' मैं तुरन्त उन लोगों के लिये नीबू का ठण्डा शर्बत ले आया, और स्वयं यह निष्कर्ष निकाला कि वे लोग गर्मी के मौसम में चाय नहीं पीते। चूँकि मैं प्रत्येक स्थान पर उनकी व्यवस्था की देखभाल करता था, इसलिये जब भी लोग उनको चाय देते थे तो मैं कह देता था कि वे चाय नहीं पीते हैं। पेंडूजी के सिर में दर्द शुरू हो गया क्योंकि चाय पीने की उनकी आदत थी। वह चाय न मिलने से उदास रहा करते थे। किन्तु उन लोगों को चाय पिलाने का विचार मेरे मस्तिष्क से पूर्णतया समाप्त हो गया था और मैं उनके लिये प्रत्येक स्थान पर ठण्डा पेय शर्बत और लस्सी इत्यादि की व्यवस्था किया करता था। अन्त में जब इँगोहटा में मेरी चाय पर लगी रोक के बावजूद वहाँ के लोगों ने उन्हें पीने के लिये चाय दी, तो उनके चेहरे आनन्द से चमकने लगे। दोनों जनों के चाय पीने का आदी होने का ज्ञान अब मुझे यह सोचकर अत्यन्त पीड़ा देता है कि मैंने उन दोनों जनों को पूरे पाँच दिन चाय से वंचित रखा। ठीक उसी समय मेरे अन्दर यह भी विचार आया कि प्रभु मेहेरबाबा कैसी हस्ती हैं जिन्होंनें उन दोनों जनों को इतना तैयार किया है कि उन्होंने पूरे पाँच दिन अपनी शारीरिक पीड़ा के लिये एकबार भी

प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्षरूप से न तो संकेत किया और न ही चाय के बारे में मुझसे कहा !

बाबा के वे दोनों जन २ जून १९५२ ई. को बस द्वारा कानपुर चले गये।

उन दोनों जनों के हमीरपुर से जाने के बाद बाबादास आ गये और मुझे उनके भीषण क्रोध के तूफान का सामना करना पड़ा। हमीरपुर में एरच तथा पेंडू के साथ बाबादास को न रखने के बाबा द्वारा लगे प्रतिबन्ध के कारण वह आगबबूला हो गये तथा उन्होंने अपने सम्पूर्ण क्रोध का लक्ष्य मुझे बनाया। वह शत्रुघ्न सिंह तथा उनके दल के साथ बाबा-विरोधी प्रतिद्वन्द्वी पार्टी बनाने की योजना तक पहुँच गये। शत्रुघ्नसिंह आशा करते थे कि मैं जिला परिषद से अपने निष्कासन के पश्चात् झुक जाऊँगा तथा पुनः उनकी शरण में आऊँगा और तब समझौता हो जायेगा। इस ढँग से कुछ भी नहीं घटित हुआ, और मैंने जिला परिषद के निर्णय के विरुद्ध अपील कर दी जिसके निर्णय में शत्रुघ्न सिंह ने उत्तर प्रदेश सरकार के कुछ मंत्रियों से मिलकर मुझे पदच्युत कर दिया। चूँकि पूरे जिले में बाबा-कार्य का प्रसार प्रारम्भ हो गया था और वह मेरे साथ किये अपने अन्याय के कारण बदनाम हो गये थे इसलिये वह तथा उनकी पार्टी बाबा के शत्रु हो गये। उन दिनों मुझे मालूम हुआ कि बाबादास वहाँ बाबा-कार्य का विरोध करने के लिये उनके साथ सम्मिलित हो गये हैं और इस उद्देश्य के लिये उन्होंने शत्रुघ्नसिंह से एक निश्चित तिथि पर मिलने का निर्णय कर लिया है। किन्तु बाबा की दैवी मर्ज़ी ने उनकी सभी योजनाओं को विफल कर दिया।

## बाबा के आगमन की भूमिका तथा हमारे समर्पण के लिये उनका तकाज़ा

बाबा अपने ज्वालामय स्वतन्त्र जीवन की अवस्था में कार्य करने की तैयारी कर रहे थे, और साथ-साथ हम लोग भी बाबा से प्रार्थना करने के लिये आपस में विचार विमर्श कर रहे थे कि वह अपना दर्शन हमारे जिले में भी दें। इसी बीच में आदि के. ईरानी द्वारा भेजा दिनांक १ सितम्बर १९५२

ई. का गश्तीपत्र आ गया। इस गश्तीपत्र के साथ एक फार्म था जिसको भरकर बाबा के पास वापिस भेजना था। फार्म में निम्नलिखित था :–

''प्रिय बाबा,

आपके पत्र दिनांक १–६–१९५२ के अनुसार, मैं केवल आध्यात्मिक जीवन के हित में 'निम्नलिखित' में से किसी एक अथवा अधिक अथवा सभी का आपके प्रति असंदिग्धतापूर्ण समर्पण करके आपका अनुसरण करने के लिये स्वयं अपनी स्वतन्त्र इच्छा तथा जिम्मेदारी से सहमत हूँ :

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | मेरा धन | – | हाँ / नहीं |
| २. | मेरी सम्पत्ति | – | हाँ / नहीं |
| ३. | मेरी सेवा | – | हाँ / नहीं |
| ४. | मेरा मौजूदा जीवन | – | हाँ / नहीं |

मैंने इन सभी चारों बातों को सभी चार पर 'नहीं' को काटकर बाबा को समर्पित कर दिया और इस प्रकार स्वयं के लिये सर्वोच्च भाग्य प्राप्त कर लिया। मेरे लिये पूर्णरूप से उनकी पावन शरण में अपने को समर्पित करने का यह एक अद्वितीय अवसर था, और मैंने सभी शर्तों के लिये अपने 'हाँ' के साथ फार्म को शीघ्र ही वापिस भेज दिया। विशेष कथन के स्थान पर मैंने निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखीं :

**अब तो सुना दे दो बोल ऐसे कोई –**
**प्रियतम सिवा इस विश्व में है शून्य सब कोई।**
**उसी की रट निरन्तर हो उसी का एक चिन्तन**
**तन उसी का धन उसी का हो उसी का एक यह मन।।**

उसी पत्र के दूसरी ओर पूछा गया था कि क्या हमारे लिये बाबा के 'ज्वालामय स्वतन्त्र जीवन' में भाग लेना सम्भव था, जो कि १५ नवम्बर १९५२ ई. से प्रारम्भ होने जा रहा था। मैं इससे सहमत था और मैंने अपना निम्नलिखित उत्तर भेज दिया :–

''प्रिय बाबा,

मैं स्वयं अपनी जिम्मेदारी तथा स्वतन्त्र इच्छा से आपके आगामी ''ज्वालामय स्वतन्त्र जीवन'' में आपके साथ सम्मिलित होने के लिये तैयार हूँ, जो नवम्बर १९५२ ई. से पूर्णतया आध्यात्मिक जीवन के हित में जिया जायेगा।''

इस प्रकार मैंने लिखित रूप में अपने को ईश-अवतार को समर्पित करने का तथा ''ज्वालामय स्वतन्त्र जीवन'' में उनका साथी बनने का भी बेजोड़ भाग्य प्राप्त किया।

उसी समय एरच बी. जसावाला का दि. २-९-१९५२ का पत्र, यह बताते हुये कि बाबा हमीरपुर जिले में २१ नवम्बर १९५२ ई. से २१ जनवरी १९५३ ई. के बीच अपना सार्वजनिक दर्शन देने के लिये तैयार हैं, प्राप्त हुआ। इस सार्वजनिक दर्शन के कारण बाबा तथा हमारे बीच सीधा पत्र-व्यवहार हो गया। बाबा ने इस जिले के ६ लोगों को ५ अक्टूबर १९५२ ई. को मेहेराबाद में उनसे मिलने के लिये बुलाया। ६ व्यक्ति इस प्रकार थेः भवानी प्रसाद निगम, परमेश्वरी दयाल निगम, केशव नारायण निगम, लक्ष्मीचन्द पालीवाल, गया प्रसाद खरे तथा श्रीपति सहाय रावत।

५ अक्टूबर को सुबह लगभग ८ बजे हम लोगों ने पहली बार 'मेहेराज़ाद' देखा, और फिर हम लोगों को १० बजे तक बाबा के समक्ष उपस्थित रहने की अनुमति दी गई। बाबा मई १९५२ ई. में अमेरिका में एक कार दुर्घटना में आहत हो गये थे। उनके बायें पैर की हड्डी टूट गई थी और हमने उस समय भी उसमें पट्टी बँधी हुई पायी।

हमने बाबा के साथ दर्शन कार्यक्रम के बारे में विचार विमर्श किया, और यह निर्णय लिया गया कि बाबा हमीरपुर जिले की जनता को १८ नवम्बर से २७ नवम्बर १९५२ ई. तक अपना दर्शन देंगे। एरचजी ने बाबा के कथनों को उनकी वर्णमाला तख्ती पर अंग्रेजी में पढ़ा, और बाबा ने पहली बार मुझको उनके अंग्रेजी के कथनों को हिन्दी में मौखिकरूप से अनुवाद करने का कार्य दिया। बाबा से विचार विमर्श के बाद हम लोग घर वापिस लौट आये।

## मेहेराबाद में बाबा के साथ

सार्वजनिक दर्शन के पूर्व मुझे १८ अन्य प्रेमियों के साथ ७, ८ तथा ९ नवम्बर १९५२ ई. को मेहेराबाद जाने तथा बाबा के समीप रहने के लिये पुनः बुलाया गया। हम सब लोग ७ नवम्बर को प्रातः ९.३० बजे के लगभग मेहेराबाद पहुँच गये। बाबा ने मुझे तुरन्त बुलाया तथा उनकी वार्ता का हिन्दी में भाषान्तर करने के लिये कहा। एक बड़े जनसमूह के समक्ष मुझे बाबा द्वारा पहली बार यह भाषान्तर का कार्य दिया गया था। और उस समय से, मैंने सदैव बाबा-सभाओं तथा सहवास में इस भाषान्तर के कार्य का निर्वाह किया।

बाबा को उनके ज्वालामय स्वतन्त्र जीवन के लिये उनके विवरण पत्र प्राप्त हो चुके थे तथा अपने आगामी दर्शन कार्यक्रम के अवसर के लिये उन्होंने मुझे ''सात सत्यतायें'' भेजी थीं। मुझे सात सत्यताओं का हिन्दी में अनुवाद करने तथा प्रत्येक सत्यता की १०,००० (दस हजार) प्रतियाँ छापने का निर्देश दिया गया था। यह मेरे लिये पहला अवसर था जब बाबा से मुझे उनके अँग्रेजी साहित्य का हिन्दी में अनुवाद करने का कार्य मिला था, और यह अनुवाद कार्य आज तक जारी है। मेहेराबाद पहुँचने पर मैंने अनुवाद की उन मुद्रित प्रतियों को बाबा के चरणों में समर्पित कर दिया। बाबा बहुत अधिक खुश हुये। ९ नवम्बर की रात्रि में हमने मेहेराबाद से प्रस्थान कर दिया तथा अपने स्थानों पर वापिस आ गये। ९ तारीख को बाबा ने एक बार पुनः हमीरपुर जिले में दर्शन कार्यक्रम के सम्बन्ध में अपने निर्देश हमें दिये।

## हमीरपुर-हृदय में बाबा के प्रथम चरण

हम लोग ११ नवम्बर को हमीरपुर वापिस पहुँच गये तथा तुरन्त अवतार मेहेरबाबा के आगामी दर्शन कार्यक्रमों की तैयारी करने में व्यस्त हो गये। जिले में बाबा के आगमन के समाचार से यहाँ के जनसमूह में महान हलचल पैदा हो गई। उन दिनों अपनी बेरोजगारी के कारण मैं अपना सम्पूर्ण समय बाबा के पावन कार्य में लगाने में समर्थ था और इस पावन कार्य ने मुझे अपनी बेरोजगारी के बारे में सोचने का भी मौका नहीं

दिया। वास्तव में बाबा से मैंने जितना चाहा था उससे भी अधिक उन्होंने मुझे दिया। यद्यपि उस समय मेरे पास भोजन के लिये एक पैसा तक नहीं था, फिरभी मैं हमेशा उनकी कृपा पर प्रसन्नता महसूस करता था और उनके कार्य में व्यस्त रहता था। मैं वास्तव में उनके कार्य तथा पथ पर सफल हो रहा था। मैं प्रत्यक्षरूप से यह महसूस करने में समर्थ था कि बाबा मुझे अपने यथार्थ जीवन–''जटिल स्वतन्त्र जीवन'', ''सम्पूर्ण स्वतन्त्र जीवन'', तथा ''ज्वालामय स्वतन्त्र जीवन'' की अपनी सभी अवस्थाओं से होकर ले जा रहे थे।

और, अन्ततः १८ नवम्बर १९५२ ई. का दिन आ गया। उस दिन प्रातः लगभग १० बजे हमीरपुर नगर की भूमि पर अवतार के चरण पड़े। उनके दर्शन के लिये विशाल जनसमूह तीव्रता से टूट पड़ा। २७ नवम्बर तक मेहेरबाबा ने अपना दर्शन हमीरपुर नगर, इँगोहटा, सुमेरपुर, मेहेरास्ताना-महेवा, महोबा, मौदहा, कुलपहाड़, पनवाड़ी, राठ, नौरंगा, जराखर, धगवाँ, अमरपुरा, धनौरी तथा बण्डवा की जनता को दिया। हजारों की संख्या में पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों ने बाबा का दर्शन किया, उनका प्रसाद पाया, तथा उनके सन्देश सुने।

महेवा ग्राम में बाबा के ठहरने के लिये कोई उचित स्थान नहीं था, इसलिये हमने मेहेराबाद से लौटने के पश्चात् उनके लिये १० दिन के अन्दर एक छोटी कच्ची झोपड़ी का निर्माण किया। यह झोपड़ी गाँव से दूर जंगली स्थान के मध्य में स्थित मिट्टी के ऊँचे टीले पर बनाई गई थी। इस कुटी (झोपड़ी) का संक्षिप्त विवरण १९६० ई. में मेहेर पुकार के 'जुलाई-अगस्त' अंक में प्रकाशित किया गया है। बाबा इस झोपड़ी को देखकर बहुत खुश मालूम हुये। झोपड़ी के बाहर उस टीले पर २२ नवम्बर १९५२ ई. की सुबह उन्होंने १४ वर्ष के १४ बालकों के पैर धोये, उनके पैरों पर अपना मस्तक रखा, तथा उनमें से प्रत्येक को चौदह रुपये दिये।

२२ नवम्बर को दर्शन कार्यक्रम के दौरान बाबा विशेषरूप से मेरी पत्नी तथा बच्चों से मिलना चाहते थे। वे लोग बाबा के समक्ष कठिनाई तथा गरीबी की हालत में पहुँचे। परवरदिगार बाबा ने उन्हें अत्यन्त दयालुता से देखा, और मैंने महसूस किया मानो उन्होंने उनको कुछ वर्णनातीत बहुमूल्य

चीज़ प्रदान की हो। उन्होंने रहस्यमय ढँग से मेरी छोटी पुत्री मेहेर श्री की आयु पूछी।

२२ नवम्बर १९५२ ई. को दोपहर बाद बाबा ने अपना सार्वजनिक दर्शन महेवा में दिया, जहाँ मैंने उनको ''मेहेर ब्रह्म परिवार'' की ओर से अभिनन्दन पत्र अर्पित किया।* वह इसे सुनकर खुश हुये तथा उन्होंने मुझे अपने हृदय से लगा लिया। वह गाँव के अन्दर भी घूमे तथा कई परिवारों को उनके घरों में दर्शन दिया। २३ नवम्बर १९५२ ई. को सुबह मेहेर आस्ताना के आँगन में मण्डली मीटिंग के मध्य मैंने मेहेर चालीसा की पंक्तियाँ सर्वप्रथम बाबा को सुनाईं। बाबा उनको सुनकर प्रभावित हुये और आश्चर्य के साथ मुझसे पूछा, ''इन पंक्तियों की रचना क्या तुमने की है ?'' मैंने कहा, ''हाँ''। बाबा ने पुनः कहा, ''मैं उनसे प्रभावित हुआ हूँ; उन्होंने मेरे हृदय को गहराई से स्पर्श किया है।'' बाबा की सम्पूर्ण मण्डली भी इससे अत्यधिक प्रभावित हुई।

२४ नवम्बर को दोपहर बाद, महोबा से राठ जाते समय मुझे बाबा के साथ कार में बैठने का अवसर मिला। रास्ते में बाबा ने मुझसे कहा, ''तुम्हें मेरे साथ दिल्ली अवश्य चलना चाहिए।'' मैंने उत्तर दिया, '' मैं निश्चित रूप से चलूँगा, और यदि आप ऐसा आदेश करें तो मैं आपके साथ सदैव रहने के लिए तैयार हूँ।'' तब बाबा ने कहा, ''मैं उसे जानता हूँ। मेरे मष्तिष्क में वह है। तुम उन थोड़े से लोगों में से एक हो जिसका मैं अपने कार्य के लिये अपने निकट रहना ज़रूरी समझता हूँ।''

## दिल्ली में बाबा के साथ

बाबा ने हमीरपुर जिले में अपना दर्शन कार्यक्रम २७ नवम्बर को पूरा कर लिया तथा २८ नवम्बर को सुबह दिल्ली के लिये प्रस्थान कर दिया। इस जिले से हम लोगों में से दस लोग बाबा के साथ दिल्ली गये। इस प्रकार मैं दिल्ली में बाबा के साथ २९ नवम्बर से ३ दिसम्बर १९५२ ई. तक रहा। दिल्ली से अपनी वापिसी यात्रा में, बाबा ने ३ दिसम्बर १९५२ ई. की

---

* कृपया पूरक देखें।

रात्रि में पठानकोट एक्सप्रेस पकड़ी, और हम लोग ४ तारीख को सुबह झाँसी स्टेशन पहुँच गये। यहाँ बाबा ने हमें विदा होने के लिये आज्ञा दी और हमसे अपने-अपने स्थानों को लौट जाने के लिए कहा। उन्होंने स्नेहपूर्वक मेरे हृदय तथा मुख पर अपना हाथ फेरा, मेरा भरपूर आलिंगन किया तथा अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, ''किसी चीज़ के बारे में चिन्ता मत करना।''

## हमीरपुर में कार्यालय की स्थापना

दर्शन कार्यक्रमों के दौरान हमीरपुर जिले के सभी स्थानों पर लोगों ने बाबा के चरणों में भेंट के रूप में कुल मिलाकर १७५० रु. अर्पित किये थे। बाबा ने अपनी ओर से अपने प्रसाद के रूप में ५०० रु. और मिलाकर यह रक़म मुझे जिले में बाबा–कार्य करने के लिये दे दी। फिर बाबा ने मुझे जिले में इस कोष की सहायता से उनका कार्य प्रारम्भ करने का आदेश दिया। इस प्रकार उन्होंने यहाँ भी बाबा–कार्य के संचालन हेतु अपने नियमित कार्यालय की स्थापना की तथा मुझे इसका कार्यभार सौंपा।

## बाबादास की अन्तिम कुटिल चाल

इस प्रकार से वर्ष १९५२ भलीभाँति बाबा-कार्य में व्यतीत हो गया। अन्त में बाबादास का भेजा एक अत्यन्त करुणाजनक पत्र मुझे १२ दिसम्बर १९५२ ई. को दिया गया। यह पत्र उन्होंने 'पुकार' पत्रिका के सम्पादक परमेश्वरी दयाल के नाम भेजा था। उस पत्र में बाबादास ने मेहेरबाबा के हमीरपुर जिले में निवास को इंगित करते हुये इस प्रकार लिखा थाः ''आपके जिले में दर्शन कार्यक्रमों के दौरान बाबा ने पाँच-छः बार क्षमा-याचना की थी। मुझे महोबा, इँगोहटा, हमीरपुर तथा सम्पूर्ण जिले के क्रियाकलापों की सूचनायें प्राप्त हुई हैं। उनसे स्पष्ट मालूम पड़ता है कि श्री के.एन. निगम ने पक्षपातपूर्ण कार्य किया है। यह दिव्य पुरुष के विरुद्ध है और बाबा का अपमान है। किसी सन्त अथवा गुरु का अपमान सहन करना मेरे लिये सम्भव नहीं है और गुरु के किसी आदेश से इस प्रकार की गतिविधियों को सहन नहीं किया जा सकता। इसी कारण, मैंने निर्णय लिया है कि मैं २३ दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक एक सप्ताह अखण्ड नाम-

स्मरण (ईश्वर का नाम दोहराते हुए) करूँगा। और, बाद में ३१ दिसम्बर को सायंकाल ६ बजे इस ''महायज्ञ'' की वेदी की पावन अग्नि में आत्मदाह करूँगा। मैं यह सन्देश आप सब भक्तों को भेज रहा हूँ और आप कृपया इसे दूर तथा निकट के लोगों को सूचित कर देंगे।''

''इस पत्र को जो व्यक्ति ला रहा है 'सरकार' द्वारा भेजा गया है और अब आप इस सन्देश को सभी लोगों में प्रसारित कर दें। कृपया इस ''महायज्ञ'' की सफलता के लिये प्रार्थना करें और अपनी सामर्थ्य के अनुसार तथा इसमें उपस्थित होकर भी मेरी सहायता करें। छोटे अथवा बड़े, सभी प्राणियों के लिये यह मेरा अन्तिम साष्टाँग प्रणाम है। मैं अपनी सभी त्रुटियों तथा गल्तियों के लिये क्षमा चाहता हूँ। यह सब दैवी मर्ज़ी से घटित हो रहा है। जोकुछ घटित होने जा रहा है उसके बारे में चिन्तित न हों। यह और कुछनहीं बल्कि असत्यतापूर्ण व्यवहार तथा अन्याय के उपचार हेतु है।''

''यह सबकुछ जो घटित होने जा रहा है वह मात्र श्री केशव नारायण निगम के लिये ही नहीं बल्कि सावनेर के वकील पोफली, अमरावती के डाक्टर देशमुख तथा नागपुर के अहंकारी व्यक्तियों के लिये भी है।''

मैं इस पत्र को पढ़कर हतप्रभ हो गया। बाबादास का आक्रोश पूर्णतया निराधार था। इस जिले में दर्शन कार्यक्रम के दौरान कोई कष्टकारी घटना नहीं हुई थी। जब बाबा इस जिले से प्रस्थान कर रहे थे तो वह कार्यक्रमों से पूर्णरूप से सन्तुष्ट थे। और, तिस पर भी, बाबादास का बाबा का पुराना तथा घनिष्ठ अनुयायी होते हुए और मेरा बाबा-क्षेत्र में एक नया शिष्य होते हुए, मेरे लिये इस प्रकार के पत्र को पढ़ने से घबराहट तथा मानसिक असंतुलन अनुभव करना स्वाभाविक था। किन्तु, मुझे मेहेरबाबा की सत्यता में पूरा दृढ़ विश्वास था। मैंने बाबादास के पत्र की नकल की, अपने द्वारा जाने-अनजाने में हुई सभी गल्तियों के लिये बाबा से क्षमा माँगते हुए कुछ पंक्तियां लिखीं, और दोनों चीज़ें डाक्टर देशमुख के पते पर, जो उन दिनों अमरावती में थे, बाबा के पास भेज दीं। इस प्रकार चीज़ों को बाबा के ऊपर उनके निर्णय के लिये छोड़कर मैंने मुक्ति तथा राहत महसूस की।

उसके पश्चात्, १७ जनवरी १९५३ ई. को मैंने बाबादास को विजयवाड़ा स्टेशन पर बाबा की मण्डली में देखा। यह बाबा के आन्ध्र दर्शन कार्यक्रम के दौरान था। बाबा के आदेश से उनकी लम्बी दाढ़ी, मूँछ तथा सिर के लम्बे बाल मुड़वा दिये गये थे और वह अपनी कफनी के स्थान पर कोट तथा पैन्ट पहने हुये थे। वह आसानी से नहीं पहिचाने जा सकते थे। मुझे मालूम हुआ कि उस पत्र को लिखने के कारण उनको यह भोगना पड़ा था।

## वर्ष १९५३ :

वर्ष १९५३ का प्रारम्भ आन्ध्र में सार्वजनिक दर्शन कार्यक्रमों से हुआ। मुझे इस जिले से तेरह अन्य प्रेमियों के साथ वहाँ बाबा के साथ रहने के लिये आदेश दिया गया था। हम सब १४ जन, १७ जनवरी १९५३ ई. को विजयवाड़ा स्टेशन पर मण्डली के साथ शामिल हो गये। तब, हम सब उस स्टेशन के प्रथम श्रेणी के प्रतीक्षालय में बाबा के समक्ष एकत्र हो गये।

उस समय मैं आर्थिक संकट की पराकाष्ठा का सामना कर रहा था। पिछले दस महीने से मैं बेरोजगार था, और जो अपील मैंने उत्तर प्रदेश सरकार में की थी उसे दीवान शत्रुघ्नसिंह तथा उनकी पार्टी ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव से विफल कर दिया था। मेरा छोटा भाई देवेन्द्र स्वरूप निगम उस समय हरिद्वार में ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज का छात्र था। वह मेरे ऊपर आश्रित था। उसके अध्ययन में किसी प्रकार की और अधिक सहायता करने में असमर्थ होने के कारण मैंने उसको घर वापिस बुला लिया तथा उसकी पढ़ाई बन्द कर दी। विजयवाड़ा में जब इसकी जानकारी बाबा को हुई तो उन्होंने मुझे आदेश दिया कि मैं देवेन्द्र स्वरूप को उसके अध्ययन के लिये तुरन्त कालेज वापिस भेज दूँ। उन्होंने मुझे यह भी आदेश दिया कि यदि मुझे मेरी भूतकाल की नौकरी मिले तो उसके अतिरिक्त अप्रैल १९५३ ई. तक अन्य कोई नौकरी न करूँ।

इस प्रकार मैं एक अत्यधिक चुभने वाली समस्या, अर्थात् देवेन्द्र स्वरूप की शिक्षा, से छुटकारा पा गया। मैं अब निश्चिन्त हो गया और आन्ध्र में १८ जनवरी से २८ जनवरी १९५३ ई. तक बाबा के "सहवास" का आनन्द उठाया, तथा वहाँ के अनेक स्थानों पर दर्शन कार्यक्रमों के दौरान

बाबा का दिव्य प्रकाश देखा। मुझे बाबा के साथ अपना समय व्यतीत करते हुये ऐसा लगा मानो मैं दैवी जगत में था।

२५ जनवरी १९५३ ई. को बाबा ने एलूरू में कट्टा सुब्बाराव के बाग में दर्शन दिया। वहाँ बाबा ने मण्डली तथा उनके चारों ओर एकत्र अन्य भक्तों के समक्ष मेहेर चालीसा सुनाने के लिये मुझे आदेश दिया। बाबा ने मुझसे चालीस पद सुने और कहा, "ये मेरे हृदय को छू लेते हैं !" तब बाबा ने एकाएक यह कहते हुये मीटिंग समाप्त कर दी, "केशव द्वारा इन पदों को सुनाने के पश्चात् अब कुछ भी शेष नहीं रहता !"

२७ जनवरी को सुबह बाबा बिल्कुल पीले दिखते थे। वह उस समय एलूरू में कट्टा सुब्बाराव के बाग में ठहरे हुये थे। उन्होंने मण्डली से सामान्य रूप से बात की। तब, बाबा ने मण्डली को २७ जनवरी को रात्रि-जागरण के लिये आदेश दिया। मुझे भी बाबा की मण्डली के साथ उस प्रथम अद्वितीय रात्रि-जागरण में सम्मिलित होने का दुर्लभ भाग्य प्राप्त हुआ, और यह हम सभी के लिये एक वर्णनातीत परम आनन्ददायी अनुभव था! २८ जनवरी को दोपहर बाद हमने बाबा से विदा ली तथा अपने-अपने घरों को चल दिये।

## संगठनात्मक कार्य का प्रारम्भ

अब मैंने हमीरपुर जिले में बाबा-कार्य को संगठित रूप देना प्रारम्भ कर दिया। हमीरपुर, दिल्ली तथा आन्ध्र में बाबा का सहवास प्राप्त करने से मुझे अत्यधिक प्रेरणा मिली। इन कार्यक्रमों से सम्बन्धित होने के कारण मुझे बाबा-कार्य करने का पर्याप्त अवसर मिला, और उन कार्यों में मैंने जितना अधिक परिश्रम तथा सतर्कता बरती उतना ही अधिक बाबा खुश हुये तथा परिणाम स्वरूप बाबा-कार्य करने के मुझे और भी अधिक अवसर मिले। और, अब मेरे पास बाबा-कार्य करने के लिये स्वयं बाबा द्वारा दिया गया धन था, जबकि पहले मुझे इसके लिये अपने मित्रों तथा साथियों से आर्थिक सहायता माँगनी पड़ती थी अथवा स्वयं अपने पास से खर्च करना पड़ता था।

मैंने बाबा-भजनों की एक पुस्तक की आवश्यकता अनुभव की। मैंने बाबा के पास प्रस्ताव भेजा और २३ फरवरी १९५३ ई. को मुझे "श्री मेहेर गीतावली" शीर्षक भजनावली प्रकाशित करने की बाबा की अनुमति प्राप्त हो गई। भजनों की इस पुस्तक में विभिन्न भाषाओं, अर्थात् हिन्दी, मराठी, गुजराती, तेलुगू तथा उर्दू के चुने हुये गीत थे। मैंने इस भजनावली का सम्पादन किया, तथा शीघ्र ही बाबा की शान तथा दिव्यता को उजागर करती हुई यह प्रथम पुस्तक बाबा-भक्तों के हाथों में पहुँच गई।

## अवतार से अधिकार पत्र

फरवरी १९५३ ई. के दूसरे पखवारे में बाबा देहरादून (उ.प्र.) गये और वहाँ ठहरे। २८ फरवरी १९५३ ई. के उनके एक पत्र के अनुसार मुझे २१ मार्च १९५३ ई. को देहरादून जाने तथा दो दिन बाबा के साथ रहने का आदेश दिया गया। बाबा ने मुझे हमीरपुर के बाबा-प्रेमियों की कुशलता का समाचार उन्हें देने का आदेश दिया था। अतः मैंने प्रेमियों से मिलना तथा आवश्यक सूचना एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया। फिर मैं २१ मार्च १९५३ ई. को प्रातः लगभग ९ बजे मकान नं. १०७ ए, राजपुर रोड, देहरादून पहुँच गया जहाँ बाबा ठहरे थे। उस समय बाबा अपनी मण्डली के मध्य बैठे हुये थे। उन्होंने मुझे तुरन्त बुलवाया। उनके समक्ष पहुँचते ही मुझे लगने लगा कि वह दिन अर्थात् २१ मार्च १९५३ ई. कितना महत्वपूर्ण था। थोड़े ही समय बाद, २१ मार्च की बाबा की घोषणा हमारे सामने पढ़ी गई, जिसने वहाँ पर उपस्थित सभी लोगों के हृदयों में महान हलचल उत्पन्न कर दी। दोपहर बाद के सत्र में बाबा ने मुझसे हमीरपुर के प्रत्येक बाबा-प्रेमी की कुशलता के बारे में बताने के लिये कहा। २२ मार्च १९५३ ई. को बाबा ने १ अप्रैल १९५३ ई. से ३१ अक्टूबर १९५३ ई. तक ईश्वरीय कार्य करने का प्रस्ताव मेरे समक्ष रखा, तथा इसके लिये अपनी स्वीकृति देने के पहले मुझसे भली प्रकार सोच लेने को कहा। बाबा ने कहा, "मेरा कार्य करने के लिये अपनी स्वीकृति देने के पहले भली प्रकार सोच लो। उस कार्य में तुम्हारा उपहास या अपमान हो सकता है, और यहाँ तक कि तुम्हारी जान भी जा सकती है।" मैं तुरन्त ही पूर्ण स्वेच्छा से कार्य करने के लिये सहमत हो गया क्योंकि मैं इसी के लिये लालायित था तथा २८ जून की प्रातः

हैदराबाद में, मैं पहले ही बाबा से अपनी यह इच्छा व्यक्त कर चुका था। मेरे विचारों को सुनने के बाद बाबा ने कहा, "यदि तुम इस कार्य को ईमानदारी से करोगे तो ईश्वर तुम्हें अपनी गरिमा के अनुरूप ही पुरस्कृत करेगा, लेकिन यदि तुम इसे ईमानदारी से नहीं करोगे तब वह गल्ती तुम्हारा नाश कर देगी।" मैंने उस कार्य को करने के लिये बाबा से अपने दृढ़ निश्चय को दोहराया। तब बाबा ने इसकी पुष्टि के लिए अपना दाहिना हाथ बढ़ाया। मैंने तुरन्त उसे अपने हाथों के बीच में दबा लिया, दो बार उसको चूमा और उससे अपनी आँखों को स्पर्श कराया। इस प्रकार ईश्वर के साथ मेरे दैवी वादे की पुष्टि हो गई; तथा प्रेमी और उसके दैवी प्रियतम अवतार मेहेरबाबा के मध्य के सम्बन्ध पर मुहर लग गई ! बाबा अत्यन्त खुश थे, तथा उन्होंने अगले सात महीने के लिये मेरे परिवार की सामयिक व्यवस्था कर दी।

२३ मार्च को रामनवमी के दिन बाबा ने उस दैवी कार्य के लिये एक टाईप किया हुआ अधिकार पत्र* खुद अपने हाथ से मुझे दिया। मैंने इसे ईश्वर के हाथ से अपने महान सौभाग्य के परम चिन्ह के रूप में लिया और इसको अपने मस्तक तथा हृदय से स्पर्श कराया। इस दैवी अधिकार पत्र में बाबा का दैवी कार्य करने का मुझे अधिकार तथा उसकी अनेक शर्तें दी गई थीं। उसके द्वारा मुझे हमीरपुर जिले में बाबा-कार्य का प्रमुख जिम्मेदार बनाया गया।

सायंकाल बाबा ने मेरे द्वारा रचित तथा बाद में श्री मेहेर गीतावली में प्रकाशित सभी गीत सुने, और उस पुस्तक के प्रकाशन के सम्बन्ध में मुझे निर्देश दिये। मेहेरबाबा पर भजनों की वह पहली पुस्तक थी।

२३ मार्च (रामनवमी के दिन) को वहाँ बाबा ने अपना सार्वजनिक दर्शन दिया और यह मेरे लिये सर्वाधिक खुशी का समय था। मुझे बाबा का प्रेम-प्रसाद दो बार मिला। इस प्रकार रामनवमी के दिन मैंने साक्षात् राम के दर्शन किये, उनका प्रसाद पाया, तथा उनका अधिकार पत्र भी पाया। क्या इस प्रकार मैंने वह सब नहीं प्राप्त कर लिया था जिसे मैं इस जगत में तथा अन्य सभी जगतों में पाने की आकांक्षा कर सकता था ? प्रियतम

---

* कृपया पूरक देखें।

बाबा (राम) ने मुझे आदेश दिया कि मैं हमीरपुर जिले में उनके प्रेमियों की मीटिंगों में इस अधिकार पत्र को पढ़ूँ तथा उनको इसमें लिखी बातों की जानकारी कराऊँ। देहरादून से वापिस लौटने के पश्चात् मैंने पूरे जिले में वैसा ही किया तथा उसके द्वारा सभी प्रेमियों को जानकारी दी गई कि बाबा ने मुझे यहाँ अपना कार्य-प्रमुख नियुक्त किया है।

## बाबा-कार्य की रूपरेखा

२४ मार्च १९५३ ई. को बाबा ने मुझसे अपने दैवी कार्य के स्वरूप को स्पष्ट किया जो मुझे अगले सात महीनों में करना था। पेन्डू तथा एरच उपस्थित थे। उन्होंने कहा, "१ अप्रैल से १५ अप्रैल तक जो भी पिछले कार्य बाकी हैं उन्हें पूरा करो। १६ से ३० अप्रैल १९५३ ई. तक २१ मार्च की घोषणा को हमीरपुर जिले के महत्वपूर्ण स्थानों पर पढ़ो, और उसे समझाओ तथा इसे लोगों के हृदयों में भरो। १ मई से ३१ अक्टूबर १९५३ ई. तक, ६ माह तक तीन प्रकार के बाबा-प्रेमियों को ढूँढ़ने का मुख्य कार्य करो तथा उनको दृढ़ प्रेमी बनने के लिये तैयार करो– (१) वे प्रेमी जो पूर्णतया दुनियाँ को त्यागने तथा बाबा-कार्य करने के लिये तैयार हों, (२) वे प्रेमी जो बाबा के आदेश से कहीं भी जाने तथा दैवी कार्य करने के लिये तैयार हों, (३) वे प्रेमी जो उपर्युक्त बाबा-कार्य में आर्थिक योगदान करने के लिये तैयार हों, और इस रूप में इस कार्य में सहभागी हों।"

एकबार पुनः बाबा ने मुझे उनका कार्य शत-प्रतिशत उनके निर्देशानुसार करने की चेतावनी दी, और तब उन्होंने सायंकाल मुझे देहरादून से वापिस भेज दिया।

## बाबादास का बाबा से दूर चले जाना

२४ मार्च १९५३ ई. को प्रातःकालीन सत्र में बाबा अपनी मण्डली के मध्य उपस्थित थे। उन दिनों बाबादास भी बाबा के साथ रहते थे तथा बाबा के आदेशानुसार मौन रखते थे। उस मीटिंग के दौरान बाबादास अचानक क्रुद्ध हो गये, और अपना मौन तोड़ दिया तथा उत्तेजनात्मक ढँग से मराठी में बाबा से कुछ कहा। उस घटना से बाबा ने तुरन्त मुझे हमीरपुर जिले के अपने सभी प्रेमियों के लिये अपने सामान्य आदेश लिखाये–

"तुम सभी जनों से व्यक्तिगत रूप से मिलो तथा उनको बतलाओ कि बाबादास कहते हैं कि आज से उनका बाबा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है, और इसलिये आज से बाबा ने उनको स्वतन्त्र कर दिया है। अब वह अपनी इच्छानुसार किसी भी प्रकार का जीवन व्यतीत कर सकते हैं, और बाबा उसके लिये उत्तरदायी नहीं होंगे। बाबादास ने आज तक जो भी कर्ज लिया होगा उस सबको अदा करने का उत्तरदायित्व बाबा ने अपने ऊपर ले लिया है। अब आप लोगों में से कोई भी उनको बाबा के नाम पर धन न दें, अन्यथा आप स्वयं गड्ढे में गिरेंगे तथा बाबादास को भी गिरायेंगे।"

मैं यह सोचता हूँ कि बाबादास, बाबा द्वारा मुझे वहाँ दिये गये अधिकार पत्र को सहन नहीं कर सके, इसलिये इसकी त्वरित प्रतिक्रिया में उन्होंने वह हताश कदम उठाया।

"बाबादास कहते हैं कि भूतकाल में जो प्रेम उन्हें बाबा से था वह आगे भी रहेगा। बाबादास कहते हैं कि चूँकि अब उनका बाबा से कोई सम्बन्ध नहीं है इसलिये वह स्वतन्त्र हैं, किन्तु प्रेम-सम्बन्ध से वह वास्तव में बाबा के ही हैं। बाबा के साथ जिस प्रकार का सम्बन्ध वह रखते थे अब नहीं रहेगा, किन्तु उनके बीच केवल प्रेम का सम्बन्ध रहेगा। इसलिये, आप में से किसी को भी बाबादास के बारे में चर्चा अथवा आलोचना नहीं करनी चाहिये।"

हमीरपुर वापिस आने के पश्चात् मैंने बाबा के इस आदेश की जानकारी सभी सम्बन्धित जनों को दी।

## एक मस्त के साथ मेरे अनुभव

देहरादून से मेरी वापिसी पर बाबा ने मुझे शाह साहेब नाम के मस्त (ईश्वरोन्मत्त व्यक्ति) को कानपुर जिले में उसके स्थान उमरिया (पुखरायाँ) पहुँचाने का आदेश दिया। मैंने मस्त को साथ लेकर शाम की एक्सप्रेस रेलगाड़ी पकड़ी। वह बहुत सौम्य तथा शान्त मस्त था। फिर भी, लखनऊ में रेलगाड़ी से उतरने के बाद अगली सुबह कानपुर की रेलगाड़ी में चढ़ने में उसने अत्यधिक कठिनाई उत्पन्न कर दी। कानपुर में वह रेलगाड़ी से

नीचे उतर आया और प्लेटफार्म नं. १ पर हमेशा के लिये ठहरता हुआ मालूम पड़ा। मैं पूरे दिन उसे फुसलाता तथा बहलाता रहा किन्तु शाम को चार बजे तक वह प्लेटफार्म से पुखरायाँ की रेलगाड़ी में बैठने के लिये नहीं हिला। मैं भयभीत हुआ कि यदि उसने अपनी मौज में रेल की पटरी के साथ-साथ चलने का निर्णय ले लिया तो मुझे उसके पीछे दौड़ना पड़ेगा और मेरा सामान निश्चित रूप से प्लेटफार्म से गायब हो जायगा। दूसरी ओर, यदि मैं अपने सामान की देखभाल करता तो मैं बाबा के प्रिय शाह साहेब को खो देता। कभी-कभी शाह साहेब रेल की पटरी को पार करके दूसरे प्लेटफार्म में चला जाता था जिससे मुझे अपने पूरे सामान के साथ उसके पीछे भागना पड़ता था ! इस छुआ-छुऔवल जैसे खेल में समय बीतता गया और अन्ततः पुखरायाँ के लिये सायंकाल की अन्तिम रेलगाड़ी भी छूट गई। अब केवल आधीरात की एक रेलगाड़ी रह गई थी। मैंने सोचा कि किसी प्रकार मुझे शाह साहेब को ले जाने का प्रबन्ध करना चाहिये तथा अपना सामान निकट के किसी धर्मशाला में सुरक्षित रखकर, और फिर शहर में किसी परिचित से मिलकर शाह साहेब को उसके स्थान पर पहुँचाने में उनकी मदद लेनी चाहिये। ४ बजे शाम को शाह साहेब मेरे साथ स्टेशन से बाहर जाने के लिये सहमत हो गया। मैं अपनी योजना के अनुसार सेन्ट्रल धर्मशाला की ओर बढ़ने लगा, किन्तु वह तृतीय श्रेणी के प्रतीक्षालय के बाहर रूक गया और फुटपाथ पर एक पेड़ के नीचे बैठ गया। अपने सभी प्रयत्नों के बावजूद, मैं उस स्थान से आगे उसको नहीं ले जा सका !

मैं दिनभर के उत्तेजक अनुभव के कारण पहले ही थक गया था और अब कुछ निश्चित नहीं था कि शाह साहेब अपने इस मूड में कितने समय तक रहेगा। मैं पूरे दिन न तो स्नान कर सका और न ही उचित रूप से खाना खा सका। मैं निराश हो गया, इसलिये अन्त में बाबा के भरोसे शाह साहेब तथा अपने सामान को पेड़ के नीचे छोड़कर शहर में दो-तीन व्यक्तियों के पास उनकी मदद लेने के लिये चला गया। लेकिन उनमें से कोई भी मुझे घर पर नहीं मिला, अतः उनके घरों पर अपना सन्देश देकर मैं और भी अधिक निराश होकर वापिस लौट आया। एक लम्बी कष्टकारी

प्रतीक्षा के पश्चात्, मैंने बाबा-प्रेमी सीताराम चौरसिया को अपने पास आते हुये देखा। उन्हें देखकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई और मैंने सोचा कि अब उनकी सहायता से मेरी समस्या हल हो जायगी। किन्तु, मेरी खुशी शीघ्र ही एकाएक भय में बदल गई जब सीताराम ने मेरी समस्या को सुनने की बजाय जो बनारसी बर्फ़ी (एक प्रकार की मिठाई) वह लाये थे मेरे मुँह में भरना शुरू कर दिया। उन्होंने मेरी प्रार्थना पर मेरी मदद करने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। फिर, वह उसी उद्देश्य से शाह साहेब की ओर मुड़े। रस्साकसी का खेल होने लगा जिसमें सीताराम शाह साहेब के मुँह में मिठाई रखने का प्रयास करते थे और शाह साहेब उग्रता से उनको मुँह में ले जाने के लिये मना करता था। मैंने सीतारामजी से पूरे जोर से वैसा न करने की प्रार्थना की। तब सीतारामजी ने मुझे तृतीय श्रेणी के प्रतीक्षालय की ओर एक महिला मस्त को देखने के लिये ठेला। उनकी इस हरकत से मेरा रहा सहा साहस भी जाता रहा। एक तो मैं पहले ही एक मस्त से काफी परेशान था और अब सीतारामजी दूसरे मस्त को दिखाकर मुझे एक और उलझन में डालना चाहते थे। निपटने के लिये एक और मस्त जैसा जानकर मैंने श्री सीताराम को येन केन प्रकारेण घर वापस भेजकर ही उनसे मुक्ति पाई।

अब पूर्णतया निराश होकर, मैं थका हुआ फुटपाथ पर ही शाह साहेब के बगल में लेट गया और सो गया। पूरी रात चिड़ियाँ सिर के ऊपर पेड़ पर विश्राम करती हुई हमारे ऊपर अपना मल-मूत्र गिराती रहीं और घूमती हुई गायें हमारे चारों ओर दौड़ती तथा लड़ती रहीं।

२६ मार्च १९५३ ई. को सुबह मैं शाह साहेब को पुखरायाँ ले जाने के लिये पुनः चिन्तित हुआ किन्तु इसके लिये मुझे कोई रास्ता नहीं दिखता था। दूसरों से सहायता प्राप्त करने के मेरे सभी प्रयास विफल हो गये थे। मैं पूर्णतया असहाय तथा निराश था। ९ बजे सुबह मैंने शाह साहेब को भरपेट भोजन कराया और फिर पुखरायाँ जाकर वहाँ से शाह साहेब के कुछ परिचितों को लाने का निर्णय किया ताकि उनकी मदद से शाह साहेब को उसके स्थान पर पहुँचाया जा सके। किन्तु उसके पहिले, अन्तिम प्रयास के रूप में, मैंने शाह साहेब से अपने साथ पुखरायाँ चलने के लिये

पुनः प्रार्थना की। इस बार वह तुरन्त सहमत हो गया। इससे मेरी जान में जान आई। मैं तुरन्त उसको रिक्शा से बस स्टेशन ले गया और फिर ड्राइवर की सहायता से उसे बस के अन्दर बैठाया और अन्ततः ५ बजे शाम को हम पुखरायाँ पहुँच गये। वहाँ मैं उसे पठान होटल ले गया जहाँ लोग उसे जानते थे। मैंने वहाँ उसको भोजन कराया और फिर वहाँ के कुछ लोगों की सहायता से उसे पैदल उमरिया लाया, जहाँ आखिरकार मैंने उसे उसके रहने के स्थान पर वापिस छोड़ दिया। उस स्थान के निवासी शाह साहेब को मेहेरबाबा द्वारा दिये गये सुन्दर नये कपड़ों को पहने हुये देखकर तथा शाह साहेब की सेवा में मेरी लम्बी कहानी को सुनकर बहुत खुश हुये।

जैसे ही मैंने शाह साहेब के साथ उस अविस्मरणीय रस्साकसी के खेल से छुटकारा पाया वैसे ही मैं अपने घर चल दिया और २७ मार्च १९५३ ई. को हमीरपुर पहुँच गया।

## दैवी कार्य का शुभारम्भ

१ अप्रैल को, मैंने अवतार मेहेरबाबा द्वारा प्रदत्त दैवी कार्य प्रारम्भ कर दिया। जैसाकि मैं पहले ही उल्लेख कर चुका हूँ कि इस जिले के विभिन्न भागों में बाबा-प्रेमियों के नियमित परस्पर मिलन अब एक सामान्य रूप ले चुके थे। मैंने इन मीटिंगों में भाग लेना तथा वहाँ उपस्थित भक्तों को बाबा के बारे में बतलाना और बाबा के आदेशानुसार उनको बाबा के अधिकार पत्र को पढ़कर सुनाना प्रारम्भ कर दिया। मैं अपने साथियों से २१ मार्च १९५३ ई. की बाबा की घोषणा के प्रसार-कार्य के उपायों के सम्बन्ध में भी चर्चा किया करता था, जो कार्य १६ अप्रैल १९५३ ई. से प्रारम्भ होकर ३० अप्रैल १९५३ ई. तक जारी रहना था।

इसी बीच में, मुझे सीधे बाबा द्वारा उन्हीं के नाम से भेजा गया एक पत्र मिला। १२ अप्रैल १९५३ ई. को लिखा गया यह पत्र मंसूरी से भेजा गया था। इस पत्र में मेरे लिये उनके निर्देशों का शत-प्रतिशत पालन करने तथा उनके द्वारा मुझे प्रदत्त दैवी कार्य को पूरा करने के बाबा के आदेश की पुनरोक्ति थी। इस पत्र से मेरी समझ में आया कि उस कार्य में मेरी

पुनः कुछ परीक्षा होने वाली है। और, वास्तव में उस परीक्षा की भूमिका स्वतः पहले ही रूप धारण कर रही थी। १२ अप्रैल को मेरी १२ वर्ष की सबसे बड़ी पुत्री मेहेर प्रभा पुरानी पेचिस से तथा सबसे छोटी पुत्री मेहेर श्री चेचक से रोगग्रस्त हो गई। इस संकट में घर पर मेरी पत्नी के सिवा कोई नहीं था।

पिछले कुछ महीनों से मैं अपने बच्चों को अपने गाँव महेवा भेज चुका था, क्योंकि उनको खिलाने के लिये यहाँ कुछ भी नहीं बचा था। और, मैं श्री लक्ष्मीचन्द पालीवाल के मकान में रहा करता था तथा श्री भवानीप्रसाद निगम के घर खाना खाता था, और इस प्रकार बाबा–कार्य किया करता था। ६ अप्रैल १९५३ ई. को बच्चे मेरे पास वापिस आ गये। मेरा १५ दिन के दौरे का कार्य १६ अप्रैल १९५३ ई. से प्रारम्भ होना था।

१५ अप्रैल को मेहेर श्री की हालत चिन्ताजनक हो गई। उसको उसी हालत में छोड़कर १६ अप्रैल को सुबह बाबा का दैवी कार्य प्रारम्भ करने के लिये मुझे पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार भरुवा सुमेरपुर जाना था। मुझे दस मील दूर उस स्थान पर साइकिल द्वारा जाना था। मैंने पाया कि जिस मित्र को मैंने मीटिंग की व्यवस्था सौंपी थी उसने न तो कुछ भी किया था और न ही इसके बारे में मुझे कोई सूचना दी थी। तब मैंने अन्य स्थानीय मित्रों तथा सम्बन्धियों की सहायता से मीटिंग की व्यवस्था की, तथा उनको बाबा की घोषणा पढ़कर सुनाई और दोपहर तक हमीरपुर वापिस आ गया। १७ अप्रैल को मैं साइकिल द्वारा दस मील दूर कुरारा गया। डबल निमोनिया के कारण मेहेर श्री की हालत और भी खराब हो गई। कुरारा में सुबह तथा झलोखर में दोपहरबाद मीटिंगों को सम्बोधित करने के पश्चात्, जब मैं हमीरपुर पहुँचा तो मैंने अपनी पुत्री मेहेर श्री को जिला चिकित्सालय में भर्ती पाया। वह अब मरणासन्न थी तथा डाक्टर उसको आक्सीजन दे रहे थे। पूरी रात उसके उपचार में तथा महान कष्ट से उसको मुक्त करने के लिये बाबा से प्रार्थना करने में व्यतीत हुई। १८ अप्रैल की सुबह ७ बजे मेहेर श्री के चेहरे पर प्रकाश के रूप में अचानक एक चमक सी आई और तत्काल उसने शरीर छोड़ दिया। यह वही लड़की थी जिसकी आयु बाबा ने, २२ नवम्बर १९५२ ई. को मेहेर-आस्ताना महेवा में अपने दर्शन के दौरान, रहस्यमय ढँग से पूछी थी।

बाबा के साथ अपने निश्चित कार्यक्रम के अनुसार, मुझे उस दिन (१८ अप्रैल) लगभग २० मील दूर मौदहा तथा इँगोहटा जाना था, तथा वहाँ लोगों को २१ मार्च की बाबा की घोषणा के बारे में बताना था। इसलिये मेरे पास खोने के लिये समय नहीं था। मैं तुरन्त मेहेर श्री के मृत शरीर को लेकर यमुना नदी गया, प्रियतम मेहेरबाबा का नाम लेकर इसे नदी की गोद में रख दिया, और घर लौटकर इँगोहटा जाने के लिये तैयार हो गया। यह हमारे लिये परीक्षा की घड़ी थी !

इस परीक्षा में मेरी पत्नी सुधादेवी ने मुझे पूरा सहयोग दिया। यद्यपि वह स्वयं उस समय बीमार थी और मेहेर श्री की मृत्यु से काफी दुखी थी तथा अन्य बच्चों के साथ बिल्कुल अकेली ही रहती थी, फिर भी उसने मुझसे बाबा-कार्य पर जाने के लिये कहा। उसने कहा, "यह परीक्षा की घड़ी है, और आपको बाबा की परीक्षा में असफल नहीं होना चाहिये !" उस समय उसके उन शब्दों की अपेक्षा मुझे और अधिक क्या चाहिये था ?

मैं बस द्वारा इँगोहटा पहुँचा और वहाँ कार्यक्रम किया। फिर मैं मौदहा पहुँचा। वहाँ श्री लक्ष्मी नारायण नेशनल इन्टर कालेज के प्रधानाचार्य थे। उन्होंने वहाँ न तो मीटिंग की व्यवस्था की थी और न ही उन्होंने मुझे सूचित किया कि वह वैसा करने के लिये तैयार नहीं हैं। मेरे पहुँचने पर उन्होंने हॉल के अन्दर मेरी वार्ता सुनने के लिये अपने सभी अध्यापकों तथा छात्रों को बुलाया, तथा जब मैं वार्ता दे चुका तो श्रोताओं के समक्ष जो कुछ मैंने कहा था उसके विपरीत बोलना शुरू कर दिया। मैंने देखा कि दैवी कार्य में इस प्रकार की चीज़ भी होती है !

१९ अप्रैल को, मैं लगभग २० मील दूर सिसोलर गया, और एक कबीर-पंथी सन्त की समाधि के निकट मीटिंग की व्यवस्था की। बहुत से कबीर-पंथी साधू (वे लोग जो सद्‌गुरु कबीर को मानते हैं) वहाँ उपस्थित थे। जब मैं वहाँ पहुँचा तो वे लोग आगे बढ़े और मेरे पैर छुये। यह मेरे लिये इतना अप्रत्याशित तथा असाधारण था कि मैं कुछ भी करने तथा कहने में असमर्थ था ! जब मैंने बदले में उनके पैर छूने का प्रयास किया तो उन्होंने मुझे पैर नहीं छूने दिये। तब मुझे याद आया कि उनका यह कार्य अवतार मेहेरबाबा के सम्मान में था न कि मेरे सम्मान में ! जब प्रोग्राम

के बाद, मैं इक्का (एक प्रकार की एक घोड़े की गाड़ी) द्वारा वापिस चलने लगा तो दो व्यक्ति मुझसे मिलने के लिये एक मील से दौड़े हुये आये। मैंने खामोशी से अवतार मेहेरबाबा की इस सम्पूर्ण अवतारिक लीला को देखा तथा उनकी उपस्थिति गहराई से महसूस की।

मैं इक्के से सुमेरपुर वापिस आया जो कि सिसोलर से तेरह मील तथा हमीरपुर से दस मील दूर था। अब हमीरपुर के लिये इन बचे हुये दस मील के लिये, सुमेरपुर में मुझे कोई साधन नहीं मिला। मैंने रात्रि में ११ बजे तक किसी साधन की प्रतीक्षा की लेकिन व्यर्थ रहा। उसी समय पहले तेज आँधी चली और फिर तूफ़ान आया तथा तेज वर्षा होने लगी। तूफ़ान से पेड़ गिर पड़े तथा सड़क को ढक लिया और इससे भयंकर ठण्ड हो गई। आखिरकार ११ बजे रात में मुझे एक ट्रक मिल गया। इसका ड्राइवर मुझे हमीरपुर ले चलने के लिये राजी हो गया ! ट्रक चला और मोड़ पर रूक गया क्योंकि गिरे हुये पेड़ों की शाखाओं तथा तनों को सड़क से हटाकर रास्ता साफ होना था। इस प्रकार हमने ८ मील तक परिश्रम किया, और फिर अन्ततः रूक गये क्योंकि तूफान से गिरा हुआ एक भारी पेड़ सड़क के आरपार पड़ा हुआ था ! सभी यात्री नीचे उतर आये और हम लोग शेष दो मील कीचड़ से युक्त सड़क पर चलकर हमीरपुर आये। मैं उसी अँधेरी, ठण्डी तथा तूफानी रात्रि में १ बजे घर पहुँचा। मेरी पत्नी जग रही थी, तथा प्रत्यक्ष रूप से अपनी पुत्री की मृत्यु के गहरे शोक के कारण सोने में असमर्थ थी। उसने मुझसे पूछा, 'ऐसे खराब मौसम में रात्रि में असमय इन सब परेशानियों को उठाकर यहाँ वापिस आने की आपको क्या आवश्यकता थी ?' मैंने उत्तर दिया, "यह यात्रा मैंने केवल तुम्हें सान्त्वना देने के लिये की है। कल से इस महीने के अन्त तक मेरे घर लौटने का कोई प्रश्न नहीं होगा, क्योंकि मुझे बाबा-कार्य के लिये निश्चित कार्यक्रम के अनुसार जिले के भीतरी भागों में दूर-दूर स्थित स्थानों में जाना है।"

सुधादेवी को कमजोर, बीमार तथा शोकग्रस्त छोड़कर, मैं २० अप्रैल १९५३ ई. को एकबार पुनः बाबा के दैवी कार्य हेतु चला गया, और ३० अप्रैल तक जिले में जगह-जगह पर बाबा के सन्देश का प्रसार करता रहा और १ मई १९५३ ई. को दोपहर ११ बजे हमीरपुर लौट आया। ठीक उसी क्षण

मेरी पत्नी भी जिला चिकित्सालय से इक्के द्वारा घर पहुँची ! तब मुझे मालूम हुआ कि २० अप्रैल को अचानक वह गम्भीर रूप से बीमार तथा लगभग मृतप्राय हो गई थी। मेरे मित्र उसको लेकर अस्पताल दौड़े, और केवल मेरे लौटने के दिन ही वह वहाँ से मुक्त हुई थी। उसके अस्पताल में रहने के दौरान, घर का काम तथा अस्पताल में उसकी सेवा मेरी १२ वर्ष की बड़ी पुत्री मेहेर प्रभा ने की थी। मेरे दौरे के दौरान मुझे इस सबकी कुछ भी सूचना नहीं थी। इन सभी घटनाओं ने मानों खामोशी से निम्नलिखत गीत की पक्तियों की सत्यता का संकेत किया–

**इब्तदा–ए–इश्क़ है रोता है क्या।**

**आगे आगे देखिये होता है क्या।।**

इस प्रकार पहले पखवारे में बाबा का दैवी कार्य, कठिनाइयों और परीक्षाओं के बावजूद, बाबा की असीम कृपा से मेरे द्वारा सफलतापूर्वक हुआ। १ मई १९५३ ई. से मैंने हमीरपुर जिले में तीन प्रकार के प्रेमियों को खोजने का कार्य किया। एकबार मैं पुनः गाँवों के दौरे पर प्रेमियों से मिलने तथा उनसे बाबा-कार्य के सम्बन्ध में चर्चा करने चला गया। व्यक्तिगत विश्वास तथा क्षमता के अनुसार प्रत्येक प्रेमी बाबा-कार्य करने के लिये स्वयं को प्रस्तावित करने लगा तथा मैंने उनकी सूची तैयार करनी प्रारम्भ कर दी। बाबा-प्रेम की गतिशील लहर हमीरपुर जिले में अब अत्यन्त तेजी से प्रवाहित होने लगी, और प्रत्येक घर से कार्यकर्त्ता उसके काज के लिये आगे बढ़कर आने लगे। मैंने बाबा द्वारा इच्छित तीन प्रकार के कार्यकर्त्ताओं की सूची तैयार की।

## दूसरा चरण

मुझे १४ जुलाई १९५३ ई. को बाबा के समक्ष पुनः उपस्थित होने का आदेश मिला। उस आदेश के पालन में मैं १४ तारीख की सुबह देहरादून पहुँच गया। दोपहर बाद के सत्र में बाबा ने मण्डली की उपस्थिति में मुझे दिसम्बर १९५३ ई. तक उनका कार्य करते रहने का और मेरे द्वारा किये गये कार्य की रिपोर्ट को १५ जुलाई को उन्हें देने का आदेश दिया। आदि

सीनियर, आदि जूनियर, मेहेरजी, नरीमैन तथा किशनजी को भी वहाँ बुलाया गया था क्योंकि १५ जुलाई १९५३ ई. को बाबा ईश्वर के समक्ष एक महत्वपूर्ण घोषणा करने जा रहे थे। प्रातःकालीन सत्र में अन्य चीजों के अतिरिक्त बाबा ने हम लोगों से यह भी कहा कि नवम्बर १९५३ ई. के बाद हम सभी के जीवन में एक परिवर्तन होगा। यह १५ जुलाई को कहा गया था। उस दिन दोपहरबाद बाबा ने मेरे द्वारा किये गये कार्य की रिपोर्ट सुनी और इससे अत्यन्त खुश तथा पूर्णतया सन्तुष्ट हुये। और उन्होंने मुझे इसी प्रकार शत-प्रतिशत कार्य करते रहने का आदेश दिया।

१६ जुलाई को, बाबा ने दिसम्बर १९५३ ई. के दौरान हमीरपुर, पूना, बम्बई तथा आन्ध्र में अपना दर्शन देने की इच्छा प्रकट की तथा इसके बारे में विचार विमर्श किया।

अन्त में, बाबा ने एक बार पुनः मुझसे मेहेर चालीसा सुना, और पहले की ही तरह इससे अत्यधिक द्रवित हुये।

## मेहेर वीणा पर बाबा की कृपा वर्षा

बाबा के आदेशानुसार दामोदर अर्मुघम पिल्ले अपनी दो पुत्रियों के साथ १८ जुलाई को देहरादून पहुँचे। बड़ी पुत्री सुशीला (मेहेर वीणा) बाबा के प्रेम में विदेह अवस्था (स्थूल चेतनारहित) में थी। मेहेर ब्रह्म परिवार का, जिसे मैंने रीवा में प्रारम्भ किया था, यह प्रथम परिवार था और जिसने बाबा-कार्य में मेरी सहायता की थी। बाबा ने इस परिवार के लिये कुछ विशेष व्यवस्था करने को बुलाया था।

मेहेर वीणा की दशा देखकर बाबा ने कहा, "इस प्रकार के प्रेम के लिये (जैसा उसे है) ऋषि और मुनि हजारों वर्ष तपस्या करते हैं। लाखों में केवल एक इस प्रकार के प्रेम को पाता है। वह पूर्णतया मुझमें समाहित है.....वह मेरी है।" तब बाबा उसको अपने साथ महिला मण्डली ले गये और वहाँ उसको अपने हाथ से खाना खिलाया।

इस परिवार के सम्बन्ध में मुझे दो दिन के लिए और रोक लिया गया। १९ जुलाई को बाबा ने उनके लिये सामयिक व्यवस्था कर दी और

शाम को देहरादून एक्सप्रेस से मुझे हमीरपुर वापिस भेज दिया। ६ दिन के बाबा के सहवास से ताजा होने के पश्चात् मैं हमीरपुर वापिस लौट आया और बाबा के दैवी कार्य में लग गया।

## "बाबा के लिये ही जियो"

देहरादून से वापिस लौटने के पश्चात् बाबा-कार्य के प्रति मेरा उत्साह दुगना हो गया। मैंने अब कार्यालय के कार्य को नियमित रूप भी दे दिया था। इसलिये मैं कार्यालय का काम और समय-समय पर जिले का दौरा भी किया करता था। बाबा के आदेशानुसार तीन प्रकार के प्रेमियों को खोजने के अतिरिक्त मैंने गाँवों में प्रेमियों के 'परस्पर मिलन' को भी नियमित रूप देने का प्रयत्न किया। जहाँ ऐसे 'परस्पर मिलन' का काम स्थापित हो गया, वहीं मैंने बाबा के प्रति प्रेमियों में आज्ञाकारिता तथा अनुशासन के महत्व को भी उत्पन्न करने का प्रयास किया। जिले के विभिन्न भागों के केन्द्र स्वयं धीरे-धीरे विकसित होने लगे, और उनके विकसित होने में मेरा अल्प योगदान रहा।

अगस्त तथा सितम्बर १९५३ ई. में मैंने जिले का सबसे लम्बा पैदल दौरा किया, और तब मुझे इस क्षेत्र की वास्तविक सुन्दरता के बारे में जानकारी हुई। जराखर ग्राम के पण्डित कुंजबिहारी अवतार के कार्य में भाग लेने के लिये स्वेच्छा से मेरे साथ इन दौरों में जाया करते थे। वह यथार्थ में बाबा-प्रेमी हैं और उन्होंने मुझे जिले के अन्तस्थ में अपना कार्य करने में अमूल्य सहायता प्रदान की। उनके साथ ने मेरे लिये पैदल दौरों को आनन्दपूर्ण और सुखद बना दिया था।

अक्टूबर १९५३ ई. में, मुझे परमेश्वरी दयाल 'पुकार' तथा गयाप्रसाद खरे के साथ देहरादून में बाबा से मिलने का उनका आदेश पुनः मिला। परमेश्वरी दयाल तथा मैं २० अक्टूबर की सुबह १०१, राजपुर रोड पहुँचे, जहाँ अब मण्डली रहती थी। बाबा ने परमेश्वरी दयाल के बारे में बात की और उनको सात आदेश पालन करने के लिये दिये और फिर उन्हें उसी शाम को वापिस भेज दिया।

शाम को गयाप्रसाद पहुँचे। रात्रि के दरबार में बाबा की घोषणा "ऊँचे से ऊँचा" पढ़ी गई और बाबा ने मुझसे इसका हिन्दी में सरल भाषान्तर करने के लिये कहा।

२१ अक्टूबर को मैंने भाषान्तर करना प्रारम्भ कर दिया। प्रातःकालीन सत्र में बाबा ने हमीरपुर में उनके खुले दर्शन के सम्बन्ध में मुझसे तथा गयाप्रसाद खरे से बातचीत की, और फिर खरे को हमीरपुर वापिस भेज दिया। २३ अक्टूबर को रात्रिकालीन सत्र की मीटिंग में मैंने बाबा को सूचित किया कि मैंने भाषान्तर का कार्य पूरा कर लिया है। यह सुनकर कि मैंने वह भाषान्तर इतनी जल्दी समाप्त कर लिया है, दरबार ने आश्चर्य प्रकट किया तथा बाबा अत्यन्त खुश हुये।

२४ अक्टूबर को मण्डली के मध्य बाबा ने भाषान्तर को सुना, और सभी ने इसे बेहद पसन्द किया। बाबा ने मुझे उस भाषान्तर की पाँच हजार प्रतियाँ छपाने, जिले में उसको वितरित करने तथा लोगों को इसके तथ्यों को बताने के लिये भी आदेश दिया।

दोपहरबाद के सत्र में बाबा ने अब दिसम्बर के बाद भी मुझसे उनका दैवी कार्य करने के लिये कहा, और उसके आगे कहा कि वह दिसम्बर के बाद भी मेरे परिवार के लिये प्रत्येक माह अपना "प्रसाद" (३०० रु. प्रति माह) भेजेंगे। बाबा ने मुझसे कहा, "ईश्वर के लिये जियो।" इस प्रकार से अवतार ने छः माह के अन्दर मुझे अपनी सेवा में स्थायी कर दिया ! वह व्यक्ति (मैं) जिसे दुनियाँ द्वारा उसकी अचूक ईमानदारी तथा निष्ठापूर्ण सेवाओं के बावजूद अपमानित, तिरस्कृत तथा बर्बाद किया गया था, उसको दैवी सेवा में स्थायी करके, दयालु अवतार ने एक क्षण में सबकुछ दे दिया। और, अब उसका "ईश्वर के लिये जियो" पाने के अतिरिक्त कोई अन्य लक्ष्य नहीं है।

२४ अक्टूबर की सायंकाल बाबा ने मुझे अपना प्रगाढ़ आलिंगन दिया, स्नेहपूर्वक सिर पर हाथ फेरा, शाबासी के भाव से मेरी पीठ थपथपायी और फिर मुझे विदा किया ! देहरादून में बाबा का पाँच दिन का सहवास प्राप्त करने के पश्चात्, मैं "ऊँचे से ऊँचा" के हिन्दी भाषान्तर को छपाने के सम्बन्ध में आगरा गया, और उस कार्य को अपने मित्र बाबा-प्रेमी

श्री मदनमोहन लाल अग्रवाल को सौंपने के बाद, हमीरपुर लौट आया। उनकी पत्नी भागवतीदेवी बाबा के विरूद्ध थीं तथा बाबा-कार्य में उनके पति की सहायता लेने से वह मुझसे अत्यन्त नाराज़ थीं। इसलिये जल्दी से जल्दी मैंने आगरा छोड़ दिया।

अब, मैंने "ऊँचे से ऊँचा" में दिये गये सन्देश के अनुसार लोगों को बाबा के प्रति पूर्ण समर्पण तथा उनसे निःस्वार्थ प्रेम करने के लिये प्रेरित करना प्रारम्भ कर दिया। मैंने इस कार्य के लिये जिले का एक बार पुनः दौरा किया। जिले के प्रेमी बाबा-प्रेम में तीव्रता से आगे बढ़ने लगे और कार्यकर्त्ताओं का एक अच्छा दल तैयार होने लगा। बाबा-कार्य के प्रसार हेतु मैंने पुनः नवम्बर १९५३ ई. में चरखारी मेला में कुछ कार्यकर्त्ताओं को अपने साथ लिया, और वहाँ चार दिन के लिये कैम्प लगा दिया। सम्पूर्ण जिले से मेले में आये हुये हजारों लोगों के मध्य हमने बाबा के सन्देश का प्रसार किया। २९ अक्टूबर को तार द्वारा बाबा का सन्देश आया कि वह हमीरपुर के लोगों को माह नवम्बर १९५३ ई. की बजाय माह फरवरी १९५४ ई. में अपना दर्शन देंगे।

## वर्ष १९५४ :
## हमीरपुर जिले में बाबा का द्वितीय दर्शन

वर्ष १९५४ का शुभारम्भ, बाबा के सार्वजनिक दर्शन की जोरदार तैयारियों के साथ हुआ। ३ फरवरी १९५४ ई. को अवतार मेहेरबाबा को अपने चरण हमीरपुर के हृदय में रखने थे। संयोगवश वह दिन प्रयाग में कुम्भ-दिन होने जा रहा था। हमीरपुर के प्रेमी ईश्वर को अपने जिले में एकबार पुनः पाकर उत्साह से भरे हुये थे तथा तैयारियाँ करने में व्यस्त थे। बाबा के यहाँ से तार तथा पत्र एक के बाद एक तेजी से आने लगे, और मैं तदनुसार कार्यरत था। मुझे पूरे जिले के सभी विशिष्ट कार्यकर्त्ताओं से कार्यक्रम को व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध करने के लिये मिलना था, और बाबा की कृपा से यह सब, यहाँ की परिस्थितियों में जो सर्वोत्तम हो सकता था, हो गया।

३ फरवरी १९५४ ई. को बड़े तड़के (प्रातः ३ और ४ बजे के बीच) हमने उरई स्टेशन पर बाबा तथा उनकी मण्डली के २५ जनों का स्वागत किया। जैसे ही बाबा रेलगाड़ी से नीचे उतरे उन्होंने मेरा आलिंगन किया। सुबह तक के लिये, हमने स्थानीय धर्मशाला में बाबा तथा उनकी मण्डली के ठहरने की व्यवस्था की थी। मेरी बारम्बार चेतावनी के बावजूद उरई के प्रेमी चाय तथा समय पर गाड़ी की उचित व्यवस्था करने में असमर्थ रहे। यह व्यवस्था अत्यन्त जल्दी में तथा मेरी भागदौड़ से ही सम्भव हो पायी थी। यह देखकर बाबा ने अत्यन्त स्नेह से मेरा आलिंगन किया, मेरे ऊपर हाथ फेरा तथा कहा, "चिन्ता मत करो"। उन्होंने मुझसे कहा कि रेलगाड़ी में यात्रा के दौरान वह मेरी बारम्बार याद करते थे। फिर उन्होंने मुझे एक "ईमानदार" तथा असली कार्यकर्त्ता कहा।

हमें उरई से लगभग पन्द्रह मील दूर इछौरा जाना था जो बेतवा नदी की पूर्व दिशा में पड़ता है। किन्तु उरई में अपने सभी प्रयत्नों के बावजूद हम बाबा के लिये एक कार की व्यवस्था नहीं कर सके ! ऐसी स्थिति में हमें बाबा को एक बस द्वारा ले जाना पड़ा। हमने प्रातः ७.१५ बजे इछौरा के लिये प्रस्थान कर दिया। इस बार बाबा इस जिले में "ऊँचे से ऊँचा" के रूप में आये थे। इसलिये यह उनका आदेश था कि हम उनको अत्यन्त सावधानीपूर्वक एक फूल की तरह रखें। परन्तु दुर्भाग्यवश, बिल्कुल प्रारम्भ से ही हमारे प्रबन्ध उनकी इच्छा के प्रतिकूल जा रहे थे।

उरई से रास्ता कुछ दूर तक ऊबड़-खाबड़ देहाती था, फिर बस को नहर की पटरी पर चलना था जोकि आगे भी वर्षा के कारण गीली तथा कीचड़ युक्त होने से और अधिक खराब हो गई थी। ठीक सात मील चलने के पश्चात् जब हमारी बस एक पुलिया को पार करके नहर की पटरी पर जाने के लिये बायीं ओर मुड़ी, तो दाहिना पहिया एक गहरे गड्ढे में धँस गया। एक मण्डली जन की चीख के कारण ड्राइवर ने बस को तुरन्त रोक दिया। सभी लोग नीचे उतरे और देखा कि पहिया दाहिनी ओर गड्ढे में धँस गया है, और सभी ने महसूस किया कि बाबा की उपस्थिति के कारण ही यह बड़ा संकट टला है।

यह स्मरण रखना होगा कि यह प्रयाग महाकुम्भ का दिन था जब वहाँ असंख्य तीर्थ यात्रियों ने इलाहाबाद में बाँध में एक अथाह गड्ढे में गिर जाने से अपने प्राण दे दिये थे। प्रयाग में दुर्घटना का समय यहाँ हमारी दुर्घटना से मेल खाता था।

हम सबको बस दुर्घटना से बचाने के लिये, हमने बाबा को धन्यवाद दिया। बस पीछे करके गड्ढे से बाहर लायी गयी और फिर हम टीकर ग्राम तक बस से आये। बाबा-प्रेमियों ने बस के चलने योग्य सड़क ऐर से टीकर तक स्वयं बनाई थी। यह तीन मील लम्बी थी। उन्होंने बेतवा नदी के उस पार इछौरा होते हुये बौखर तक भी पाँच मील लम्बी सड़क बनाई थी। यह सड़क ऐसा समझकर बनाई गई थी कि बाबा की गाड़ी उस रास्ते से जा सके। बाबा अपने प्रेमियों के प्रेम के इस श्रम को देखकर द्रवित हुये और उनको एक फूल की भाँति रखने के सम्बन्ध के अपने आदेश को भूल गये।

टीकर से अवतार एक बैलगाड़ी पर बैठे और उस महाकुम्भ के दिन बेतवा नदी को पार किया। इछौरा पहुँचने पर, उन्होंने अपने लिये बेतवा नदी का जल मँगाया, और उससे स्वयं स्नान किया। इछौरा में अपने प्रवास के दौरान उन्होंने बेतवा का जल भी पिया। ४ फरवरी को, बाबा ने इछौरा में हजारों पुरुष तथा महिलाओं को अपना दर्शन दिया, और प्रत्येक को अपना प्रेम-प्रसाद भी दिया।

७ फरवरी १९५४ ई. को सुबह, मैंने उन प्रेमियों की एक मीटिंग धनौरी ग्राम में बुलाई थी जिनको मैंने अपनी सूची में भाग १ और २ में रखा था, अर्थात् (१) वे प्रेमी जो बाबा-कार्य करने के लिये पूर्णरूप से संन्यास लेने के लिये तैयार थे, (२) और वे जो बाबा के आदेशानुसार बाबा-कार्य करने के लिये कहीं भी जाने को तैयार थे। यह मीटिंग बाबा के आदेश से मेरे द्वारा बुलाई गई थी और इसने इस जिले में बाबा के द्वितीय दर्शन कार्यक्रम के विशेष पहलू का स्थान ले लिया। उस मीटिंग में आज्ञाकारिता, निःस्वार्थ सेवा, तथा 'सार्वजनिक सेवा' के महत्व को बताने के पश्चात् बाबा ने मेरे द्वारा तैयार की गई उन दोनों सूचियों को निरस्त कर दिया। तब बाबा ने वहाँ उपस्थित सभी लोगों को तीन बातें बतलाई–

(१) उन्हें बाबा से प्रेम करना चाहिये तथा उस प्रेम में पागल हो जाना चाहिये। किन्तु अपने प्रेम में किसी प्रकार का दिखावा नहीं करना चाहिये।

(२) यदि यह सम्भव न हो, तो उन्हें अपने दुनियावी कर्तव्यों को बाबा-कार्य समझकर ही करते रहना चाहिये।

(३) यदि यह भी सम्भव न हो, तो उन्हें पुरस्कार अथवा नेतृत्व की आकांक्षा के बगैर सार्वजनिक सेवा करनी चाहिये।

बाबा ने कहा, "सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक सेवा वह है जिसमें लोग मुझसे प्रेम करना प्रारम्भ करते हैं, क्योंकि मुझसे प्रेम करने के द्वारा कोई भी शाश्वत स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकता है।"

इस रीति से, दैवी काज हेतु कार्यकर्त्ताओं की यह मीटिंग एक ऐतिहासिक मीटिंग थी, और इसने इस जिले में चुने हुये बाबा-कार्यकर्त्ताओं के ऊपर एक गहरी छाप छोड़ दी। मुझे अब बाबा-कार्य और अधिक तेज गति से करने हेतु कार्यकर्त्ताओं की उत्साही टीम मिल गई। कुछ कार्यकर्त्ताओं ने बाबा के प्रवास हेतु प्रबन्ध जुटाने के सम्बन्ध में मेरे निर्देशों का पालन नहीं किया था। इसकी जानकारी मिलने पर बाबा ने कार्यकर्त्ता मीटिंग में कहा, "यदि कार्यकर्त्ता मेरे मुख्य कार्यकर्त्ता के आदेश का पालन नहीं करते, तो वे मेरे आदेश का पालन कैसे करेंगे ?"

## बाबा मेहेर ब्रह्म परिवार के कार्यालय में

बाबा ने ८ फरवरी को हमीरपुर शहर में अपना सार्वजनिक दर्शन दिया तथा अपना प्रेम-प्रसाद बाँटा। दोपहरबाद बाबा अपने प्रेमियों के घरों में गये और मेरे घर भी आये। यहाँ घर पर ही मेहेर ब्रह्म परिवार का कार्यालय भी है। मैंने तथा मेरी पत्नी सुधादेवी ने संयुक्त रूप से युगावतार की आरती की। तत्पश्चात् बाबा ने अत्यन्त स्नेहपूर्वक हम दोनों का साथ-साथ आलिंगन किया। सुधादेवी ने पास में खड़े किसी से कुछ कहा। बाबा ने तुरन्त उससे पूछा, "तुम क्या चाहती हो ?" मेरी पत्नी के चारों पुत्र जीवित नहीं रहे थे इसलिये वह कम से कम एक पुत्र की अत्यधिक अभिलाषा रखती थी। मैंने सोचा कि शायद वह बाबा से एक पुत्र के लिये

कहने जा रही है। और, मैंने उस क्षण बाबा की मुद्रा देखकर महसूस किया कि यदि वह पुत्र के लिये बाबा से कहती तो बाबा निश्चित रूप से उसकी अभिलाषा पूरी कर देते। लेकिन, उसने उत्तर दिया कि "आपके मिल जाने के बाद अब उससे अधिक माँगने के लिये कुछनहीं है और मैंने आप (बाबा) में सर्वस्व पा लिया है"। बाबा उससे यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुये, और फिर वह हमारे घर से चले गये। उस क्षण से मेरी पत्नी को पुत्र प्राप्ति की कामना नहीं रही और अब वह सभी परिस्थितियों में खुशी से बाबा की मर्ज़ी के अधीन रहती है।

## मेहेर मन्दिर और मेहेर पुकार

६ फरवरी १९५४ ई. को दोपहरबाद बाबा ने अपना सार्वजनिक दर्शन महोबा में दिया। महोबा में प्रातःकाल ग्राम नौरंगा के बाबू रामप्रसाद ने अपने गाँव में मेहेर मन्दिर के निर्माण के लिये बाबा की अनुमति हेतु प्रार्थना की, किन्तु बाबा इस पर सहमत नहीं हुये और उन्हें अपने हृदय में, जहाँ वह यथार्थ रूप में वास करते हैं, बाबा का मन्दिर बनाने की सलाह दी। बाबा ने इसी प्रकार उन्हें दुबारा सलाह दी, किन्तु जब बाबू रामप्रसाद अपनी बात पर फिर भी अड़े रहे, तब बाबा ने अपने प्रेमी की खातिर, अपने प्रेमी की प्रार्थना को स्वीकृति दे दी और मेहेर मन्दिर की नींव में लगाने के लिये एक पत्थर को अपने हाथ से स्पर्श कर दिया।

उसी मीटिंग में बाबा ने हमीरपुर में नारायण प्रेस के उचित संचालन के लिये निर्देश दिये। हमीरपुर के परमेश्वरी दयाल (पुकार) ने हमीरपुर में बन्द पड़े नारायण प्रेस को बाबा-सेवा में अर्पित करने तथा उनके काज में इससे एक आध्यात्मिक पत्रिका निकालने की अपनी इच्छा प्रकट की। बाबा ने प्रार्थना स्वीकार कर ली तथा उसकी देखरेख के लिये छः व्यक्तियों को मनोनीत किया– परमेश्वरी दयाल (पुकार), भवानीप्रसाद निगम, लक्ष्मीचन्द पालीवाल, श्रीपति सहाय रावत, गयाप्रसाद खरे, और केशवनारायण निगम। बाबा को यह भेंट देकर 'पुकार' पुनः मुझे अपने साथ तथा अपने बन्द पड़े प्रेस के मामलों में शामिल करना चाहते थे। किन्तु सर्वज्ञ बाबा ने मुझे प्रेस की जिम्मेदारी से दूर रखा।

## मेहेरास्ताना महेवा में अवतारत्व की घोषणा

६ फरवरी १९५४ ई. की रात्रि में बाबा का विश्राम मेरे जन्म स्थान ग्राम महेवा में रखा गया था। किन्तु जब सायंकाल बाबा वहाँ पहुँचे तो वह लोगों को अपना दर्शन देने के लिये, जो केवल उनको देखने के लिये एकत्रित हुये थे, खुशी से राजी हो गये। इस प्रकार सायंकाल, जबकि बाबा वहाँ अपना दर्शन दे रहे थे, उन्होंने जोर देते हुये कहा, "यह तुम सबके लिए बड़े भाग्य की बात है कि मेरे दर्शन कार्यक्रमों की समाप्ति यहाँ पर हो रही है !" रात्रि ६ बजे से प्रातः ४.३० बजे तक बाबा ने आम रात्रि जागरण रखा जिसमें मण्डली तथा जिले के सभी मुख्य बाबा-प्रेमियों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम "मेहेर–आस्ताना" नाम की झोपड़ी में हुआ था–वही झोपड़ी, जो नवम्बर १९५२ ई. में बाबा के ठहरने के लिए बनाई गई थी। बाबा के समक्ष सम्पूर्ण रात्रि भजन तथा क़व्वाली गाये गये, जिनके मध्य बाबा प्रसंगवश कई चीजें स्पष्ट करते रहे।

रात्रि में १२.५० पर (अर्थात् १० फरवरी के प्रथम घण्टे में) बाबा ने अचानक मुझे अपनी बगल में बुलाया और कहा, "तुम नहीं जानते कि इस क्षण तुम्हें कौन सा भाग्य दिया जा रहा है !" उत्तर में मैंने अपने हाथ जोड़ लिये और कहा, "बाबा यह सब आपकी कृपा है" ! मैं उस भाग्य के महत्व की गहनता के बारे में किसी चीज़ की कल्पना कैसे कर सकता था ? ईश-बाबा द्वारा उन दैवी शब्दों के कहने के ढँग से, मैं केवल अनुमान कर सकता था। उस समय बाबा अत्यधिक प्रसन्न मुद्रा में थे ! उन्होंने वर्णमाला तख्ती पर अपनी अँगुलियों से प्रगट कियाः– 'अवतार मेहेर बाबा की जय' तथा साथ ही साथ उस "जय" की पुष्टि में अपना दाहिना हाथ ऊपर उठा दिया। बाबा ने अपनी अत्यधिक प्रसन्न मुद्रा में यह भी व्यक्त किया कि अपने इस अवतारकाल में प्रथम बार उन्होंने अपने अवतार होने की खुली एवं स्पष्ट घोषणा यहाँ की है। उन्होंने वहाँ यह भी घोषित किया कि अपना यह शरीर छोड़ देने के ७०० वर्ष बाद वह पुनः अवतार लेंगे। अपनी सृष्टि के उस विशिष्ट स्थान पर अपने अवतारत्व को घोषित करते हुये कौन जानता था कि बाबा उस स्थान (मेहेर-आस्ताना) को तथा मुझको और उस समय वहाँ उपस्थित लोगों को कौन सा भाग्य दे रहे थे।

साथ ही, पारसी कलेण्डर के अनुसार १० फरवरी १९५४ ई. को बाबा का ६०वाँ जन्मदिन था। अतः उस जन्मदिन की याद में सभी प्रेमी बाबा के समक्ष अत्यन्त खुशी से नाचे तथा जन्म-गीत गाये। बाबा ने उनमें से सभी का आलिंगन किया और इस प्रकार प्रातः ४.३० बजे प्रसिद्ध गायक वामन राव के हृदय स्पर्शी गीत : योगी मत जा मत जा मत जा..... के साथ कार्यक्रम उल्लासपूर्वक समाप्त हो गया।

## बाबा द्वारा जीवनदान

१० फरवरी की सुबह, मेरी पत्नी यह समाचार लेकर मेरे पास दौड़ती हुई आई कि उसकी छोटी बहिन ललितकिशोरी देवी अपनी अन्तिम श्वास ले रही है। उस समय वह टाईफाइड तथा डबल निमोनिया से ग्रसित थी, तथा वैद्यों ने उसे मरणासन्न समझकर दवा देना बन्द कर दिया था। उसके बोलने की शक्ति समाप्त हो गई थी तथा उसकी आँखें पथरा गई थीं। ललितकिशोरी देवी बाबा की यथार्थ प्रेमी है। ९ फरवरी की शाम को बाबा का आगमन सुनकर वह बाबा के दर्शन के लिये उसी नाजुक स्थिति में झपटकर बाहर को भागी और घर की देहरी पर जाकर बेहोश होकर गिर पड़ी। उसका हाल सुनकर बाबा उसके घर जाने के लिये तैयार हो गये। बाबा के उसके घर पहुँचने के ठीक पहले वह होश में आकर अपने सीने पर बाबा की फोटो रखे हुये, उसे टकटकी लगाये देख रही थी।

उसके समीप पहुँचकर बाबा ने उसके चेहरे पर अत्यन्त स्नेहपूर्वक हाथ फेरा। उसने अत्यन्त क्षीण स्वर में कहा, "बाबा मुझे अच्छा कर दो, बहुत तकलीफ है।" कमरे के बाहर आकर बाबा ने सबके बीच घोषित किया– "९९ प्रतिशत इसके जिन्दा बचने की आशा नहीं है !" फिर उन्होंने मुझसे कहा कि मैं ललितकिशोरी देवी से बताऊँ कि बाबा चाहते हैं कि वह अन्तिम श्वास तक मुख से, और मुख से उच्चारण करने की शक्ति न रहने पर मन से, उनके 'नाम' का स्मरण करती रहे। मैं अन्दर गया और उससे वही कह दिया। फिर बाबा ने मेरे छोटे भाई देवेन्द्र स्वरूप को उसके लिये एक विशेष इलाज बताया, जो कि स्वयं बाबा ने इन शब्दों के साथ बताया था, "उसे जो भी दवा दें, मेरा नाम लेकर दें तथा उसका इलाज जैसा मैंने

बताया है ठीक वैसा ही करें।" यह देवेन्द्र का कहना है कि औषधि विज्ञान के दृष्टिकोण से ललितकिशोरी देवी के जीवित रहने की कुछ सम्भावना हो सकती थी किन्तु यह निश्चित था कि बाबा द्वारा उसको बताया गया इलाज प्राणघातक था ! लेकिन, इसके विपरीत वह केवल उसी इलाज से चँगी हो गई, और आज भी जीवित है। वहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति का ऐसा विश्वास है कि बाबा ने उस अवसर पर ललितकिशोरी देवी को जीवनदान दिया था। दर्शन कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात् बाबा हमीरपुर होते हुये लखनऊ चले गये, और लखनऊ से उन्होंने बम्बई के लिये रेलगाड़ी पकड़ी। लखनऊ स्टेशन पर उन्होंने मुझे उत्साहपूर्ण आलिंगन दिया और विदा होने की आज्ञा दी, तथा हमीरपुर जिले में दर्शन कार्यक्रमों से बेहद सन्तुष्ट होकर चले गये।

## आन्ध्र के द्वितीय दर्शन-कार्यक्रमों में बाबा के साथ

हमीरपुर जिले में अपने सार्वजनिक दर्शन के पश्चात् बाबा को आन्ध्र में भी सार्वजनिक दर्शन देना था। मुझे अपने जिले के चार अन्य जनों के साथ आन्ध्र के लिये बाबा की मण्डली में शामिल होने के लिये आदेश मिला। तदनुसार हम लोग १८ फरवरी १९५४ ई. को चल दिये, और २० तारीख की सुबह विजयवाड़ा पहुँच गये। हम लोग केन्यक परमेश्वरी धर्मशाला ले जाये गये जहाँ मण्डली भी ठहरी हुई थी। बाबा पूना पैसेन्जर गाड़ी से प्रातः लगभग ८.३० बजे विजयवाड़ा स्टेशन पर उतरे तथा उन्हें मजेटी राममोहन राव के निवास स्थान पर ले जाया गया। उन्होंने सम्पूर्ण मण्डली को बुलाया तथा प्रत्येक को अगले दिन प्रातः ७ बजे पूर्णरूप से तैयार रहने का आदेश दिया।

आन्ध्र में दर्शन कार्यक्रम २१ फरवरी १९५४ ई. से प्रारम्भ होकर ४ मार्च १९५४ ई. की दोपहर तक चले। इन दर्शन कार्यक्रमों की भव्यता पिछले दर्शन कार्यक्रमों से भी अधिक विलक्षण थी। बाबा के दर्शन कार्यक्रमों के लिये सभी जगह शानदार प्रबन्ध किये गये थे, और हमने उस अवसर पर सर्वाधिक सुन्दर दृश्य देखे।

२५ फरवरी १९५४ ई. को ताडेपल्लीगुडम में अवतार मेहेरबाबा का ६०वाँ जन्मदिन अत्यन्त हर्षोल्लास एवं शानदार ढंग से मनाया गया। यह अद्वितीय खुशी का दिन था। बाबा को एक मोटरकार में बैठाकर शहर से होते हुये एक जुलूस के रूप में ले जाया गया। रात्रि में भरत-नाट्यम् नृत्य हुआ, और इसने ईश्वर के दरबार के अनुरूप वर्णनातीत दृश्य प्रस्तुत किया। मैंने इस प्रकार का सुन्दर प्रदर्शन केवल अवतार मेहेरबाबा की उपस्थिति में देखा था, तथा मैं इसे कभी नहीं भूल सकता हूँ। फरवरी १९५४ ई. के अन्त में कुव्वूर से राजमहेन्द्री जाते हुये बाबा ने मोटरकार से गोदावरी नदी पार की तथा कार को बीच रास्ते में रोककर उससे नीचे उतरे और अपने हाथ तथा मुँह नदी के जल से धोये और इस प्रकार गोदावरी नदी को निर्मल तथा नवीन पवित्रता प्रदान की।

## असली कार्य

आन्ध्र दर्शन कार्यक्रम का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू वह मीटिंग थी जिसमें आन्ध्र के सभी बाबा-कार्यकर्त्ता तथा बाबा की मण्डली नवभारती गुरुकुल के भोजन-कक्ष में उपस्थित हुये थे। मीटिंग १ व २ मार्च की आधीरात से २ मार्च की सुबह तक चली। इस अवतारकाल की यह अद्वितीय मीटिंग थी जैसाकि बाबा ने स्वयं घोषित किया था, और इस मीटिंग में अवतार ने अपने प्रेमियों को पहली बार अपने कार्य तथा उसके करने के ढँग के सम्बन्ध में बताया था। यह हिन्दी तथा अंग्रेज़ी में छप चुका है। यथार्थ में, यह अत्यन्त प्रभावशाली मीटिंग थी। इसने, मुझे दैवी कार्य में और भी अधिक दृढ़ बना दिया।

और, गोदावरी नदी ने भी दूसरा वर्णनातीत भाग्य प्राप्त किया जब बाबा के राजमहेन्द्री पहुँचने के पूर्व रात्रि में उन्हें गोदावरी नदी में एक भाप से चलने वाले पानी के जहाज पर तथा बाबा की मण्डली को थोड़ी दूर पर एक दूसरे जहाज पर ठहराया गया था। इस प्रकार अवतार ने अपनी मण्डली के साथ गोदावरी नदी के हृदय पर पूरी रात व्यतीत की।

राजमहेन्द्री से बाबा रास्ते में गोदावरी नदी के हरित डेल्टा क्षेत्र से होकर अपना दर्शन देते हुये चले गये। अन्त में ४ मार्च १९५४ ई. (महा

शिवरात्रि दिन) को सुबह, बाबा का दर्शन कार्यक्रम काकीनाडा में समाप्त हो गया।

## "जगाने वाले के लिये जागो"

आन्ध्र के दर्शन कार्यक्रमों में बाबा के आस्ट्रेलियायी प्रेमी फ्रान्सिस ब्रैबेजोन भाग ले रहे थे, और वह बाबा की मण्डली में थे। बाबा के प्रति उनकी आज्ञाकारिता, अनुशासित होना, सादगी, आचरण तथा जीवन की हमारी रीतियों के अनुकूल अपने को ढालने के उनके प्रयासों ने मुझे उनकी ओर अत्यधिक आकर्षित किया। बाबा में उनका गहरा विश्वास देखकर मेरा स्वयं का बाबा में विश्वास दृढ़ हो गया। वह मेरे प्रति अत्यन्त दयालु तथा स्नेही थे।

प्रायः प्रतिदिन वह मेरा कालर पकड़कर और इसे खींचते हुये मेरे कानों में जोर से चिल्लाया करते थे, "जगाने वाले के लिये जागो !" और, निःसन्देह इसने मुझे बाबा के प्रति जागृत रहने में मदद की।

## बाबा के साथ उपवास

जीवन परिपत्र सं. १६, दिनांक २३.६.१९५४ के द्वारा सभी बाबा-प्रेमियों को बाबा के आदेश की सूचना दी गई कि वे १० जुलाई को सायं ६ बजे से २४ घण्टे के लिये पूर्ण उपवास तथा मौन रखें। बाबा ने स्वयं १० जुलाई से १७ जुलाई (६ बजे सायं) तक सात दिन के लिये उपवास रखने का निर्णय लिया तथा उन्होंने उन ७ दिनों के उपवास में अपने साथ भाग लेने के लिये सात अन्य जनों को लिया जिनमें, एरच, पेण्डू, बैदुल, सदाशिव, केशव नारायण निगम, नाना खेर तथा कनक डाँडी सूर्य नारायण थे। एक पत्र द्वारा बाबा ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उनके साथ इस उपवास में भाग लूँगा और मैंने बिना समय बर्बाद किये साक्षात् ईश-बाबा के साथ सात दिन के उपवास में भाग लेने के दुर्लभ भाग्य को खुशी के साथ स्वीकार कर लिया। तत्पश्चात् बाबा ने हमारे लिये उपवास की अवधि को १३ तारीख की सायंकाल तक के लिये घटा दिया, किन्तु डाक विभाग की गलती के कारण मुझे वह सूचना नहीं मिली इसलिये मैंने १६ जुलाई की दोपहर तक

अपना उपवास चालू रखा और जब आदेश मिल गया तो मैंने इसे तोड़ दिया। इस प्रकार अवतार मेहेरबाबा ने मुझे इस जीवन में कम से कम एक बार अपने साथ उपवास रखवाया !

## कार्य का विस्तार

इस जिले में बाबा-कार्य करने के लिये बाबा को मुझे आदेश दिये हुये केवल एक वर्ष ही व्यतीत हुआ था, किन्तु बाबा ने अल्प समय में ही अपनी कृपा वर्षा से सम्पूर्ण जिले को भर दिया। उसी एक वर्ष में मैंने बाबा-साहित्य के कई हिन्दी अनुवादों को छपवाया तथा इस पूरे जिले में तथा इसके पड़ोसी स्थानों में हजारों लोगों को बँटवाया। बाबा ने इस स्थान के वातावरण में स्वयं-जागृति की नयी लहर उत्पन्न कर दी। कई व्यक्तियों ने, जो बाबा के विरोधी थे, इसे ईर्ष्या तथा सन्देह से देखा। इसी वर्ष मैंने हिन्दी में साहित्य छापने तथा लोगों को निम्नलिखित बाबा-सन्देशों को वितरित करने का सौभाग्य प्राप्त किया–

(१) "मेहेरबाबा की घोषणा" २१ मार्च १९५३ ई.।

(२) ऊँचे से ऊँचा।

(३) अस्तित्व सार है और जीवन छाया है।

(४) असली दर्शन तथा बारह अन्य सन्देश (१९५४ ई. के दर्शन कार्यक्रमों में दिये गये)।

(५) धर्म का सत्य।

(६) असली कार्य (राजमहेन्द्री में बाबा-कार्यकर्त्ताओं को दिये गये निर्देश)।

(७) मेहेरबाबा की पुकार।

(८) ज्वालामय स्वतन्त्र जीवन तथा उस जीवन में बाबा के सन्देश।

(९) श्री मेहेर गीतावली।

(१०) 'मेहेर पुकार'–मासिक पत्रिका जिसका प्रारम्भ जुलाई १९५४ ई. से हुआ।

## भाई परमेश्वरी दयाल के साथ शक्ति-परीक्षण

बाबा-कार्य में नारायण प्रेस के प्रबन्ध में सहायता करने के लिये बाबा द्वारा छः लोगों को मनोनीत करने के पश्चात्, हिन्दी मासिक पत्रिका मेहेर पुकार जुलाई १९५४ ई. से प्रकाशित होने लगी। मेहेर पुकार के सम्पादन और निर्देशन तथा प्रेस की देखरेख का कार्य भाई परमेश्वरी दयाल ने अब मेरे कन्धों पर रखना शुरू कर दिया। उस समय प्रेस पूर्णतया निष्क्रिय अवस्था में था। और, मेरे लिये बाबा का यह आदेश था कि मैं प्रेस की जिम्मेदारी लेने से अपने को दूर रखूँ तथा केवल अपने आफ़िस और जन सम्पर्क के कार्य पर ध्यान दूँ।

राजनैतिक क्षेत्र में भाई परमेश्वरी दयाल मेरे अभिन्न साथी रह चुके थे और उस क्षेत्र से अब बाबा की कृपा से मैं पूर्णतया पृथक् तथा मुक्त था। दूसरी ओर भाई परमेश्वरी दयाल साम्यवादी संस्था के विचारों से सम्बन्धित थे तथा "साम्यवादी सर्वत्र साम्यवादी है," ऐसी अब भी उनकी दृढ़ नीति तथा गतिविधि थी। इस दृष्टिकोण के साथ वह १९५० ई. में बाबा के व्यक्तिगत सम्पर्क में आये। उन्होंने वास्तव में बाबा की परीक्षा लेने तथा मुझे उनके दामन से विमुक्त कर राजनीति के क्षेत्र में वापिस घसीटने के लिये बाबा-जगत में प्रवेश किया था। अतः वह बाबा के आध्यात्मिक स्तर से तथा बाबा के आदेशों की कीमत तथा महत्व से बिल्कुल प्रभावित न हुये थे। इसलिये, उन्होंने उन पर दृढ़ता रखने की परवाह नहीं की। उन्होंने मुझे अपने समान रखने के प्रयास में, बाबा के आदेशों का सख्ती से पालन करने से, मुझे भी विचलित करने का प्रयास किया। किन्तु मैं अपने सिद्धान्तों से इंच भर भी नहीं हटा। पहले, मैं अपने कर्तव्यों को स्वतन्त्रतापूर्वक अपने निजी ढँग से किया करता था, किन्तु अब मैंने प्रेस तथा मेहेर पुकार के सम्बन्ध में, जिसकी जिम्मेदारी मुख्यतया उनकी थी, अपने को कठोर 'पुकार' के आमने-सामने पाया।

भाई परमेश्वरी दयाल से इस प्रकार जो संघर्ष प्रारम्भ हुआ उसके कारण उनके साथ बीता मेरा प्रत्येक क्षण मेरे लिये शूली पर चढ़ने के समान था। शायद बाबा स्वयं ही मुझे यह रगड़ा दे रहे थे। रीवा में जब

टण्डन साहब मुझे बुलाया करते थे तो मुझे भयवश बड़े जोर की पेशाब लगा करती थी, किन्तु अपने कठोर कम्युनिस्ट भाई के साथ इस संघर्ष में मैं अपनी मृदुता पर नियन्त्रण खोता हुआ अनुभव करता था ! बाबा ने दो एकदम विपरीत (स्वभाव वाले) व्यक्तियों को एक साथ रख दिया था।

और, उस संघर्ष से बच पाने का कोई रास्ता नहीं था, क्योंकि जितना अधिक भाई परमेश्वरी दयाल बाबा से मेरी शिकायतें करते थे, उतना ही अधिक बाबा उन पर अपनी पकड़ मजबूत करते जाते थे। बहरहाल, परमेश्वरी दयाल अब सब कम्युनिस्टों के महान कम्युनिस्ट मेहेरबाबा की पकड़ में थे जिनकी पकड़ से कोई व्यक्ति एक बार उनके सम्पर्क में आने के बाद कभी नहीं बच सकता !

जब परमेश्वरी दयाल बाबा के दामन से मुझे अलग करने में सफल नहीं हुये, तो उन्होंने बाबा-विरोधी लोगों जैसे दीवान शत्रुघ्नसिंह तथा उनके अनुयायियों इत्यादि को बाबा-क्षेत्र में लाने का प्रयास किया, किन्तु बाबा की कृपा के कारण उनके सभी प्रयत्न विफल हो गये। व्यक्तिगत रूप से, मैं उनकी सभी कपटता से इतना भयभीत था कि उनके प्रति मेरा इतने वर्षों का सम्पूर्ण प्रेम तथा सम्मान, अब पूर्णतया अदृश्य हो गया था।

तब, विगत कुछ वर्षों में बाबा ने उन्हें भिन्न-भिन्न अवधियों के लिये अपने साथ रखा तथा उनको कुछ आध्यात्मिक धक्के (Badgerings) दिये, जिसका परिणाम यह हुआ कि अब वह अधिकांशतः बाबा के मार्ग पर आये दिखाई पड़ते हैं। बाबा-कार्य की उनकी अपनी अलग जिम्मेदारी है।

शायद वास्तविकता यह है कि अवतार मेहेरबाबा ने हमें एक-दूसरे के विरुद्ध रखकर, दोनों को एक सुन्दर 'कूलर' दिया और फिर हम दोनों के लिये अहं शून्य बनने की स्थिति पैदा की ताकि हम लोग बाबा का दैवी कार्य और अच्छी प्रकार से करने के योग्य हो जायँ। १२ नवम्बर १९५९ ई. को मेहेराज़ाद में बाबा ने अपने सामने एक बार पुनः हम लोगों को एक-दूसरे से गले मिलवाया और इस प्रकार हमारे दिलों को मिलाने का प्रयत्न किया। भाई पुकार ने बाबा-क्षेत्र में बाबा की परीक्षा लेने तथा मुझे इसके बाहर निकालने हेतु प्रवेश किया था, किन्तु वह स्वयं बाबा के प्रेम-जाल में फँस गये और अपने को नहीं बचा सके।

## मेहेराबाद सम्मेलन

जीवन परिपत्र सं. १८, दिनांक १० जून १९५४, के द्वारा २९ तथा ३० सितम्बर १९५४ ई. को मेहेराबाद में होने वाले अद्वितीय तथा अपने प्रकार के अन्तिम अवतारी-सम्मेलन का शुभ सन्देश आया। बाबा के आदेशानुसार मैंने इस सन्देश को प्रत्येक प्रेमी को भेजना प्रारम्भ कर दिया, ताकि कोई भी इस दुर्लभ अवसर से वंचित न रह सके। इस ज़िले के सभी प्रेमियों ने अपनी तैयारियाँ प्रारम्भ कर दीं, और अन्ततः मैं १६२ प्रेमियों के काफिले के साथ उस अद्वितीय सम्मेलन में भाग लेने गया। वहाँ हमें आस्ट्रेलिया, अमेरिका तथा यूरोप के बाबा-भक्तों से मिलने का अवसर मिला। बाबा के प्रति उनकी आज्ञाकारिता तथा उनके आदर्श अनुशासन ने मेरे ऊपर महान प्रभाव डाला। उनकी तुलना में, हम अनुशासन तथा आज्ञाकारिता के अर्थ में बहुत छोटे मालूम पड़े। मैंने उस शिक्षा को गहराई से हृदयंगम किया।

२९ तथा ३० सितम्बर के उस सम्मेलन में बाबा ने जोकुछ किया उसने अन्य सभी प्रेमियों के हृदयों की भाँति, मेरे हृदय में भी एक नयी ज्वाला प्रज्वलित कर दी।

बाबा की "अन्तिम घोषणा" का हिन्दी भाषान्तर करना मेरे लिये सौभाग्य की बात थी, और मैंने वह कार्य मेहेराबाद में एक रात्रि में पूरा कर लिया। इसके अतिरिक्त, उस सम्मेलन में मंच से बाबा ने अपनी वर्णमाला तख्ती से जो कुछ व्यक्त किया, उसका मौखिक साधारण हिन्दी अनुवाद भी मैंने किया। मैं अब भी बाबा-सम्मेलनों और दर्शन कार्यक्रमों तथा आफिस में भी हिन्दी अनुवादकर्त्ता होने का सौभाग्य प्राप्त किये हूँ। इससे मेरे आन्तरिक उत्थान पर गहरा प्रभाव पड़ा है। बाबा के सन्देशों का अनुवाद करने, तथा विशेष रूप से एकाएक तथा तत्काल अनुवाद करने के लिये किसी व्यक्ति को बाबा के शब्दों पर पूर्णतया ध्यान केन्द्रित करना पड़ता है तथा अन्य किसी बात के बारे में सोचना त्यागना पड़ता है। उस क्षण मैं बाबा की ओर देखता भी नहीं, क्योंकि उससे मेरा मस्तिष्क बाबा के सौन्दर्य के वशीभूत होता है और उनके शब्द मेरे कानों में मानो प्रवेश ही नहीं करते। बाबा के दैवी शब्दों पर मेरी पूर्ण एकाग्रचित्तता ने इन प्रत्यक्ष

शब्दों को वर्षों के लिये मेरे हृदय में गहराई से अंकित कर दिया है, तथा वे शब्द अब भी मेरे अन्दर उस प्रभाव को उत्पन्न कर रहे हैं जो उनका उद्देश्य है। बाबा के दैवी शब्दों का अनुवादकर्त्ता होने के कारण मैंने अपने हृदय में उन शब्दों की मुक्तिदायी शक्ति का अनुभव किया है।

२९ तथा ३० सितम्बर १९५४ ई. के सम्मेलन की उस अवर्णनीय शोभा तथा दिव्य दृश्य को देखने के पश्चात्, मैं प्रेमियों के काफिले के साथ अपने घर वापिस आ गया, तथा पुनः ६ मास के लिये बाबा की 'अन्तिम घोषणा' का प्रसार करने में जुट गया, जो उन्होंने ३० सितम्बर १९५४ ई. को की थी।

बाबा के साथ मेरे जीवन इतिहास में वर्ष १९५४ के प्रारम्भ में घटी एक घटना विशेष ध्यान देने योग्य तथा उल्लेखनीय है। हमीरपुर जिले में बाबा ने अपने सार्वजनिक दर्शन का दूसरा दौर इछौरा ग्राम से प्रारम्भ किया, जो इस जिले का एक शक्तिशाली बाबा-केन्द्र है। बाबा वहाँ अपनी मण्डली के साथ ३ फरवरी १९५४ ई. को सुबह लगभग २० मील के ऊँचे-नीचे देहाती रास्ते को आंशिक रूप से बस द्वारा तथा आंशिक रूप से बैलगाड़ी द्वारा तय करके पहुँचे। इस गाँव की यात्रा अत्यन्त थकाने वाली एवं कष्टकारी सिद्ध हुई। बाबा ने यहाँ अपना सार्वजनिक दर्शन ४ फरवरी १९५४ ई. को सुबह दिया। ४ फरवरी १९५४ ई. को बड़े तड़के, बाबा ने अकेले मुझे अपने टेन्ट में बुलाया जिसमें हमने उनके ठहरने की व्यवस्था की थी। जब मैं वहाँ पहुँचा तो एरच तथा मेहेर जी ए. करकरिया उनकी बगल में थे। बाबा ने अत्यन्त स्नेहपूर्वक मुझे देखा तथा अत्यंत आत्मीयतापूर्वक जोर देते हुये कहा– और एरच ने बाबा के संकेतों की व्याख्या कीः "यह सब तुम्हारे कारण किया गया है ! तुम मुझे न छोड़ना। भविष्य में ये सभी लोग एक हो जायेंगे, किन्तु तुम मुझे कदापि न छोड़ना। यह सब तुम्हारे कारण किया गया है।" इसके द्वारा बाबा का उद्देश्य मुझे यह बताने का था कि वह इस जिले में तथा इसके अत्यन्त दुर्गम स्थान में मेरे कारण अपना सार्वजनिक दर्शन देने आये हैं। उन्होंने मुझे सचेत किया कि भविष्य में इस जिले में समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लोग बाबा-कार्य के विरुद्ध हो जायँगे, किन्तु मुझे उनके प्रभाव, आग्रह अथवा दबाव के कारण बाबा को नहीं छोड़ना

चाहिये। मैंने बाबा की स्नेहपूर्ण चेतावनी को हृदयंगम किया तथा उनके वचनों को पूर्णतया स्वीकारते हुये अपने हाथ जोड़ लिये।

बाबा के वचन मेरे कानों में पूरी शक्ति से गूँजने लगे– "यह सब तुम्हारे कारण किया गया है !" इन शब्दों के द्वारा बाबा ने मेरे अद्वितीय तथा अवर्णनीय भाग्य को उजागर कर दिया, जिसकी गहराई को न तो नापा जा सकता है और न कल्पना ही की जा सकती है। बाबा के इन शब्दों की पुष्टि बाद की दो घटनाओं से हुई।

पहली घटना हमीरपुर जिले में ६ फरवरी १९५४ ई. को मेरे गाँव महेवा में घटी जहाँ बाबा के सार्वजनिक दर्शन का दूसरा दौर समाप्त हुआ। बाबा ने अपनी मण्डली तथा इस क्षेत्र के चुने हुये कार्यकर्त्ताओं का एक विशेष जमाव ६ व १० फरवरी की मध्यरात्रि में मेहेर-आस्ताना नाम की झोपड़ी में किया जिसे १९५२ ई. में बाबा के आवास के लिये बनाया गया था और तभी से बाबा के आदेशानुसार उसे सुरक्षित रखा गया है। बाबा ने वहाँ अपने प्रेमियों के साथ रात्रि जागरण का कार्यक्रम रखा। उस महत्वपूर्ण जागरण के दौरान बाबा अचानक अत्यधिक प्रसन्न मुद्रा में हो गये तथा १२ बजकर ५० मिनट पर इस अवतारकाल में पहली बार अपने को युग-अवतार होने की खुली घोषणा की। इस दैवी घोषणा करने के उसी भाग्यशाली क्षण में बाबा ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा (एरच उनके संकेतों की व्याख्या कर रहे थे), "तुम नहीं जानते कि इस क्षण तुम्हें क्या भाग्य मिल रहा है!" उनके द्वारा प्रदत्त इस दुर्लभ भाग्य की मौन स्वीकृति में, जिसकी गहराई अथवा महत्व को आँक पाना मेरे लिये असम्भव था, मैंने बाबा के सम्मुख सम्मानपूर्वक अपने हाथ जोड़ लिये, किन्तु मेरी मानव बुद्धि में एक बात स्पष्ट थी कि वहाँ बाबा ने अपने अवतारत्व की यह घोषणा मुझे कुछ अद्वितीय भाग्य देने के कारण की थी, जैसाकि उन्होंने मुझसे इछौरा में कहा था, "यह सब तुम्हारे कारण किया गया है।"

दूसरी घटना यह थी कि जब ६ फरवरी १९५४ ई. की शाम को बाबा ने महेवा ग्राम की जनता को भी अपना खुला दर्शन दिया तब पड़ोसी गाँव का एक व्यक्ति बाबा के दर्शन तथा उनकी दिव्य कान्ति से अत्यधिक

प्रभावित हुआ। किन्तु उसे यह विश्वास नहीं हुआ कि बाबा अवतार हैं इसका मुख्य कारण यह था कि बाबा शाही पोशाक पहने हुये थे। यह उसकी समझ के परे था कि एक व्यक्ति शाही पोशाक पहने हुये कभी अवतार हो सकता है। वह बाबा के आध्यात्मिक स्तर की सत्यता को ईमानदारी से जानने को उत्सुक था। वह व्यक्ति चित्रकूट में रहने वाले एक आध्यात्मिक रूप से उन्नत सन्त का भक्त था। जब वह अपनी अगली यात्रा में उस सन्त के पास पहुँचा, तो उसने उनसे पूँछकर अपने भ्रम को दूर करने का प्रयास किया, "मेहेरबाबा नाम के एक व्यक्ति महेवा ग्राम में आये थे और उन्होंने वहाँ की जनता को अपना दर्शन दिया था। वह कौन हैं ?" इस पर सन्त ने उस व्यक्ति को झिड़ककर कहा कि तुम झूठ कह रहे हो। उस व्यक्ति ने दुबारा उसी बात को फिर उनसे कहा, और सन्त ने झूठ बोलने के लिये उस व्यक्ति को पुनः झिड़क दिया। चूँकि उस व्यक्ति ने बाबा को महेवा ग्राम में स्वयं अपनी आँखों से देखा था तथा उनके हाथों से उनका प्रेम-प्रसाद पाया था, इसलिये उसने पुनः उसी बात को ज़ोर देते हुये कहा। इस पर सन्त शीघ्रता से अपनी झोपड़ी के अन्दर गया और वहाँ से कई सन्तों के चित्र ले आया जिनमें मेहेरबाबा का मढ़ा हुआ एक चित्र भी था। उन चित्रों को उस व्यक्ति के सामने फैलाते हुये सन्त ने कहा, "यदि तुम कहते हो कि मेहेरबाबा उस गाँव में आये थे और तुमने वहाँ उनको देखा था, तब यदि यहाँ इन चित्रों में से कोई चित्र उनका है तो मुझे बताओ।" उस व्यक्ति ने तुरन्त बाबा का चित्र उठा लिया और उसे उनको दे दिया। इस पर वह सन्त भौंचक्का रह गया और थोड़े समय तक बोल नहीं सका। तत्पश्चात् उसने उस व्यक्ति से गहरी जिज्ञासा के साथ पूछा, "तब वह कौन व्यक्ति था जिसके कारण मेहेरबाबा ने उस छोटे से गाँव में अपना दर्शन दिया ! वह इतने महान हैं कि वह बड़े से बड़े शहरों में भी नहीं जा सकते; फिर ऐसे छोटे तथा पिछड़े गाँव के बारे में क्या कहा जाय !" उस सन्त से मेहेरबाबा की महानता को सुनकर उस व्यक्ति को बाबा की आध्यात्मिक ऊँचाई पर विश्वास हो गया। और, जब यह घटना मुझसे बताई गई और मैंने सन्त के शब्दों को सुना "तब वह व्यक्ति कौन था जिसके कारण मेहेरबाबा ने उस छोटे से गाँव में अपना दर्शन दिया !" तो मुझे बाबा के शब्द पुनः याद आये– "यह सब तुम्हारे कारण किया गया है।" मेरा यह सोचना पूर्णतया तर्कसंगत लगा कि बाबा मेरे कारण ही मेरे गाँव आये थे।

## वर्ष १९५५ :

हमीरपुर जिले में अवतार मेहेरबाबा के कार्य के साथ मैं आगे बढ़ रहा था। बाबा ने इस क्षेत्र का मुझे अपना प्रमुख कार्यकर्त्ता बनाया तथा यहाँ अपना आफिस भी स्थापित करके इसका मुझे इन्चार्ज बनाया। मुझे कार्यकर्त्ताओं को ढूँढ़ने तथा उनको बाबा-कार्य में भागीदार बनने के लिये तैयार करने का कार्य सौंपा गया था। १९५३ ई. में मुझे यह कार्य सौंपते समय, बाबा ने मुझसे कहा था "जैसा मैं चाहता हूँ वैसा यदि एक भी कार्यकर्त्ता तुम जिले में मेरे लिये तैयार करते हो, तो जिले में मेरा कार्य सम्पन्न हो जायेगा।" उस समय से मैं जैसा बाबा चाहते थे एक कार्यकर्त्ता तैयार करने का प्रयास करता रहा हूँ और यह प्रयास मेरे अपने ऊपर भी रहा है। प्रारम्भ में मैंने बाबा-काज हेतु प्रेमियों से सम्पर्क करने के लिये सम्पूर्ण जिले का दौरा करने में अधिक समय लगाया, किन्तु जैसे-जैसे आफिस का कार्य बढ़ने लगा बाबा ने मुझे दौरा-कार्य में कम समय लगाने का निर्देश दिया। अतः अब मुझे अपने आफिस-कार्य तथा दौरे के कार्य को सन्तुलित रखना पड़ता था। उस दौरा-कार्य के दौरान मुझे कई मूल्यवान अनुभव हुये जिन्होंने मेरे व्यक्तित्व को निखारा। मैंने महसूस किया कि अपने आफिस तथा दौरे के कार्य के माध्यम से बाबा मेरे अन्तस्तल में तेजी से कार्य कर रहे थे। मेरे कार्य के परिणामस्वरूप जिले के कई बाबा-केन्द्र उभरकर सामने आ गये तथा बाबा के नाम और उनके प्रेम तथा सत्य के सन्देश को सुन्दरता से फैलाने लगे। इस जिले में बाबा ने प्रेम का जो बीज बोया था वह अंकुरित होने लगा।

१९५५ ई. के प्रारम्भ में, मुझे इस क्षेत्र के सभी बाबा-प्रेमियों के लिये अवतार मेहेरबाबा की सद्‌गुरु, हज़रत बाबाजान के सिर के बाल पावन स्मृति-चिन्ह के रूप में सुरक्षित रखने के लिये मेहेराबाद (अहमदनगर) से प्राप्त हुये। हज़रत बाबाजान के ये पावन स्मृति-चिन्ह मेरे पास सुरक्षित हैं। भारत तथा पाकिस्तान में ६ अन्य बाबा-प्रेमियों को भी इसी प्रकार के स्मृति-चिन्ह भेजे गये थे जबकि ग्यारह स्मृति-चिन्ह मेहेराबाद में भावी पीढ़ी के लिये सील बन्द लोहे के एक बक्स में सुरक्षित रख दिये गये थे। इन सभी स्मृति-चिन्हों को भावी पीढ़ी के लिये उनके प्रमाणस्वरूप मेहेर पुकार (भाग

१, संख्या ६-१०) के मार्च-अप्रैल १९५५ ई. के अंक (पृष्ठ ३ से ६ तक) में प्रकाशित किया गया था। मेहेर पुकार का वह भाग्यशाली अंक भी, जो हमीरपुर से प्रकाशित हुआ है, मेहेराबाद में ग्यारह स्मृति-चिन्हों के साथ सील बन्द लोहे के बक्स में सुरक्षित रख दिया गया है। मेरी मानव बुद्धि से, यह दूसरा भाग्य था जो बाबा ने मुझे प्रदान किया।

बाबा ने सतारा में १ मई १९५५ ई. से ३१ जुलाई १९५५ ई. तक कठोर एकान्तवास में रहने का निर्णय लिया। उन्होंने घोषित किया कि एकान्तवास की वह अवधि उनके लिये संकट की अवधि थी, विशेषकर उनके भौतिक शरीर के लिये जिसे लकवा लग सकता है अथवा वह समाप्त भी हो सकता है। उस एकान्तवास में जाने के पहले बाबा ने २४ अप्रैल १९५५ ई. को पूना, अहमदनगर तथा बम्बई के कुछ प्रेमियों की एक महत्वपूर्ण मीटिंग बुलाई। लगभग ३० ऐसे प्रेमियों को उस महत्वपूर्ण मीटिंग में आमन्त्रित किया गया था, और उस मीटिंग में उत्तर भारत से एकमात्र मैं आमन्त्रित था। २४.४. १९५५ ई. को सतारा में उस मीटिंग में बाबा के साथ रहने वाली मण्डली सहित कुल ३६ जनों ने भाग लिया। बाबा ने उस मीटिंग को लगातार ८ घण्टे तक जारी रखा और विभिन्न महत्वपूर्ण आध्यात्मिक विषयों पर प्रवचन दिये। 'ईश्वर-साक्षात्कार का पथ' विषयक इस प्रवचन के दौरान बाबा ने मस्तिष्क को हृदय के अधीन होने की अनिवार्यता पर जोर दिया। बाबा ने कहा कि ईश्वर को जानने के लिये, मस्तिष्क का हृदय के अधीन होना अनिवार्य है। बाबा ने अपना दाहिना हाथ उठाया और इसे धीरे-धीरे नीचे की ओर लाते हुये नीचे किसी चीज़ को दबाने का संकेत किया, और साथ-साथ व्यक्त किया कि मस्तिष्क को दबकर पत्थर के समान हो जाना चाहिये ताकि यह हृदय पर हावी न हो बल्कि इसके अधीन हो जाय और इसकी सहायता करे। जब बाबा मस्तिष्क को नीचे दबाने का उपरोक्त संकेत कर रहे थे उस समय वह सीधे मेरी ओर देख रहे थे, और उससे मैंने महसूस किया कि बाबा के हाथ के नीचे होने के साथ, तदनुसार मेरा मस्तिष्क भी दबता जा रहा था। उस समय इसका अर्थ मुझे स्पष्ट न था, किन्तु बाद में मैंने पाया कि उस क्षण बाबा ने वास्तविक रूप से मेरे मस्तिष्क को दबा दिया था तथा इसे पत्थर के समान बनाकर मेरे हृदय के

अधीन कर दिया था। जिसका परिणाम यह हुआ कि उस समय से मैं अपने दैनिक जीवन में हृदय की क्रियाशीलता को स्पष्ट रूप से अनुभव कर रहा हूँ और इससे निकलने वाली भावनाओं तथा प्रेरणाओं से निर्देशित होता रहा हूँ। अब मेरे सभी निर्णय स्थायी रूप से मेरे मस्तिष्क से न निकलकर हृदय से निकलते हैं। अब मैं अपने मस्तिष्क से कोई निर्णय नहीं ले पाता। जिस क्षण मैं किसी चीज़ को सोचता हूँ, मेरे विचार स्वतः मेरे हृदय से जुड़ जाते हैं तथा इसके उत्तर अथवा परिणाम स्पष्टतया, भावना अथवा प्रेरणा के रूप में हृदय से निकलते हैं, और वे शायद ही कभी मिथ्या अथवा अनुचित सिद्ध होते हैं। हृदय मुझे सही निर्णय तथा सही उत्तर देता है। प्रायः हृदय मुझे बाबा के शब्दों, सन्देशों तथा कार्य में छिपे अर्थ का बोध करा देता है। यथार्थ में यह एक सुन्दर अवस्था है जिसका मैं बाबा की कृपा से आनन्द उठाता हूँ। इसकी क्रियाशीलता मुझे कभी निराश नहीं करती।

उपरोक्त एकान्तवास से बाहर निकलने के पश्चात् बाबा ने मेहेराबाद में अपने प्रेमियों को अपना दर्शन देने का निर्णय लिया। यह माह नवम्बर १९५५ ई. में चार समूहों में हुआ। हमारा हिन्दी भाषी समूह था। बाबा ने उस सहवास कार्यक्रम के महत्व पर जोर दिया था तथा इसमें निश्चित रूप से उपस्थित होने के लिये अपने प्रेमियों को आमन्त्रित किया था। यहाँ बाबा के प्रति मेरे प्रेम, विश्वास तथा आज्ञाकारिता की एक दूसरी परीक्षा हुई। मेहेराबाद के लिये हमारे प्रस्थान करने की तिथि के कुछ दिन पूर्व मेरी पत्नी बीमार हो गई तथा सभी डाक्टरी इलाज के बावजूद वह स्वस्थ नहीं हुई। यहाँ मेरी अनुपस्थिति में उसकी देखभाल करने के लिये केवल मेरी तीन अल्प वयस्क पुत्रियाँ थीं, तथा बीमारी की ऐसी दशा में पत्नी को अकेला छोड़ना मुझे उपयुक्त नहीं मालूम पड़ा। अन्ततः मेहेराबाद के लिये हमारे प्रस्थान करने का समय आ गया, जबकि मेरी पत्नी तेज बुखार में अर्द्धचैतन्य लेटी हुई थी। मुझे बाबा की मर्ज़ी का स्मरण आया कि उनके प्रेमियों को इस सहवास को नहीं चूकना चाहिये। अतः मैंने उनकी सर्वशक्तिमान देखभाल में अपनी पत्नी को छोड़कर बाबा की मर्ज़ी के पालन में अपने को प्रोत्साहित महसूस किया। उसकी अर्द्धचैतन्य अवस्था

में मैंने अपनी पत्नी से मेहेराबाद जाने के लिये अनुमति माँगी और उसने अर्द्धचैतन्य अवस्था से ही मुझको अपनी अनुमति दे दी। मैं उस सहवास के लिये इस जिले के बाबा-प्रेमियों के काफ़िले को ले चला और मेहेराबाद पहुँच गया। बाबा ने वहाँ हमसे, स्वयं को सभी चिन्ताओं से मुक्त रखकर, अपनी घरेलू बातों को भूलकर, उनके सहवास में पूरे मन से भाग लेने के लिये कहा। मैंने ऐसा ही किया तथा अपनी पत्नी की बीमारी की अपनी चिन्ता को बाबा के ऊपर छोड़ दिया। मैं बाबा के दैवी सहवास में भाग लेने के पश्चात् खुशी-खुशी घर लौट आया, और अपनी पत्नी को स्वस्थ पाया। बाबा की कृपा ने उसकी देखभाल की। किन्तु, अपनी पत्नी को बीमारी की ऐसी दशा में लापरवाही से छोड़कर जाने के कारण मुझे अपने पड़ोसियों की क्रोधपूर्ण व्यंग्य वर्षा का सामना करना पड़ा।

## वर्ष १९५६ :

वर्ष १९५६ मेरे लिये आर्थिक कठिनाइयों का वर्ष था। बाबा ने नवम्बर १९५५ ई. में पहले ही घोषित कर दिया था कि वह १५.२.१९५६ ई. से १५.२.१९५७ ई. तक एकान्तवास में रहेंगे और उस अवधि के दौरान वह बाह्य जगत से सम्पर्क नहीं रखेंगे। बाबा ने स्वयं अपने तथा अपने अवलम्बियों के लिये इन १२ महीनों के एकान्तवास हेतु अनिवार्य प्रबन्ध करने तथा आवश्यक सामग्री जुटाने के लिये अपने प्रेमियों से उनकी व्यक्तिगत तथा शर्तरहित प्रेम-भेंट को काका बारिया के पास भेजने के लिये कहा जिसका उपयोग स्वतन्त्र रूप से बाबा की इच्छानुसार होगा। बाबा ने अपने अवलम्बियों से कहा कि वह उनको मासिक खर्च के लिये केवल उसी अनुपात में धनराशि देंगे जितनी वह इन भेंटों के द्वारा प्राप्त करेंगे। इन भेंटों की प्राप्ति के लिये निर्धारित अन्तिम दिन तक केवल लगभग आधी धनराशि बाबा को प्राप्त हुई, इसलिये उनके अवलम्बियों में से प्रत्येक को जितनी धनराशि बाबा से प्रति माह प्राप्त होती थी उसकी आधी धनराशि मिली। और, इस आधी दर पर बाबा ने अपने अवलम्बियों को उनके पूरे वर्ष के खर्च के लिये अग्रिम धनराशि दे दी।

मैं बाबा के भाग्यशाली अवलम्बियों में से एक था, और जैसा कहा जा चुका है मुझे उस समय से अपने परिवार के लिये बाबा से उनके प्रसाद के रूप में २५० रु. मिल रहा था। अतः पूर्व उल्लिखित आधे अनुपात के अनुसार मुझे उन १२ महीनों के लिये अपने परिवार के पालन-पोषण के लिये कुल १५०० रु. प्राप्त हुये। मेरे परिवार में पाँच सदस्यों– मैं, मेरी पत्नी तथा तीन अल्प वयस्क पुत्रियों–के होते हुये उन कठिन दिनों में अपने परिवार के खर्च के लिये १२५ रु. प्रति माह की दर से यह रक़म बहुत कम थी। किन्तु, बाबा ने हमें इसी रकम से खर्च चलाने के लिये कहा था। इसके अलावा मेरे लिये बाबा के स्थायी आदेशानुसार मुझे उनके द्वारा दिये गये कार्य के अतिरिक्त किसी दूसरे धन्धे अथवा कार्य को भी नहीं करना था।

मैं यहाँ यह बताना आवश्यक समझता हूँ कि जब बाबा ने कृपापूर्वक १९५३ ई. मे मुझे अपना कार्य सौंपा था तथा मुझे स्वयं अपने हाथ से एक टाईप किया हुआ नियुक्ति पत्र दिया था, तब उन्होंने मेरे परिवार के पालन-पोषण के लिये अपने प्रसाद के रूप में ३०० रु. प्रति माह भी देने की व्यवस्था की थी। मेरे लिये उनके प्रेम की इस भेंट के महत्व को समझाते हुये बाबा ने मुझे सचेत किया था, "तुम्हें मेरे इस मासिक प्रसाद को मेरे द्वारा तुमको सौंपे गये कार्य से नहीं जोड़ना चाहिये। यह मासिक प्रसाद तुम्हारे परिवार के लिये मेरे प्रेम की भेंट है तथा जो कार्य मैंने तुम्हें सौंपा है उससे बिल्कुल स्वतन्त्र है। इस कार्य के लिये तुम्हें ईश्वर पुरस्कृत करेगा जैसाकि वह करता है। किन्तु यदि तुम इस प्रसाद को दैवी कार्य से, जिसे तुम्हें सौंपा गया है, जोड़ते हो, तब तुम प्रसाद तथा कार्य दोनों के महत्व को नष्ट करोगे।" बाबा ने मुझे अपने दैवी कार्य के अलावा किसी दूसरे धन्धे अथवा कार्य को न करने का भी आदेश दिया था। अतः यह मेरा परम सौभाग्य था कि प्रियतम बाबा ने अपनी दैवी सेवा के लिये मेरे सम्पूर्ण जीवन को स्वीकार कर लिया था ! इस प्रकार अप्रैल १९५३ ई. से मुझे निश्चित रूप से प्रत्येक महीने के प्रथम सप्ताह में बाबा के प्रसाद के रूप में अग्रिम ३०० रु. मिला करता था। यह नियमित रूप से दो वर्ष तक मिलता रहा। फिर इस धनराशि में भिन्नता प्रारम्भ हो गई–कभी मुझे

२७५ रु. मिलता था, कभी २५० रु., तथा इसी प्रकार आगे भी होता रहा। बाद में इसकी अवधि में भी भिन्नता प्रारम्भ हो गई। बाबा से मुझे जोकुछ भी धनराशि प्राप्त होती थी उसी में खर्च चलाना पड़ता था। अन्त में बाबा ने १९६३ ई. के प्रारम्भ से इस मासिक प्रसाद को बन्द कर दिया, और मुझे नारायण प्रेस हमीरपुर से अपने वेतन के रूप में १५० रु. प्रति माह लेने का आदेश दिया जिसके कार्य की देखभाल मैं बाबा के आदेश से पहले ही कर रहा था।

अपने जीवन में अपनी वकालत के कुछ वर्षों में तथा उसके पश्चात् उच्च पद पर सेवा के कुछ वर्षों के अतिरिक्त मैंने कभी भी आर्थिक राहत नहीं महसूस की। मेरा जन्म अत्यन्त निर्धन माता-पिता से हुआ था और मैंने अत्यधिक निर्धनता का सामना किया। अपने बचपन में तथा विद्यार्थी जीवन में मैंने आर्थिक राहत के क्षणों को नहीं जाना। एकबार मैं बाबा के साथ था और वह अपनी मण्डली के मध्य प्रवचन दे रहे थे। उस प्रवचन के दौरान बाबा ने कहा, "कुछ लोग सभी सुखों से युक्त पैदा होते हैं, और कुछ (मेरी ओर अपनी उँगली से संकेत करते हुये) निर्धन पैदा होते हैं।" अतः जन्मजात निर्धन होने के कारण मैंने अपने जीवन में आर्थिक राहत नहीं जानी। और वर्ष १९५६ मेरे जीवन-पथ के आर्थिक कठिनाई के सबसे कठोर वर्षों में से एक सिद्ध हुआ, किन्तु बाबा की कृपा ने उनके कार्य को निरन्तर बढ़ते उत्साह तथा भक्ति से करते हुये इसका बहादुरी एवं प्रसन्नतापूर्वक सामना करने में मेरी मदद की। वर्ष १९५६ के अन्त में मुझे भयंकर बवासीरें भी हो गई। मैं पिछले कई वर्षों से दोनों प्रकार की बवासीरों से पीड़ित रहा था, और इस बार इसका आक्रमण अत्यन्त भयंकर था। इसने मेरे कष्टों तथा कठिनाइयों में, जिनका मैं उस समय सामना कर रहा था, बढ़ोत्तरी कर दी।

## वर्ष १९५७ :

वर्ष १९५६ के दौरान मैंने जिन कष्टों का सामना किया उससे मेरे स्वास्थ्य पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा और बवासीरों के भयंकर आक्रमण के कारण मेरी सम्पूर्ण शक्ति क्षीण हो गई तथा मैं पीला एवं दुर्बल हो गया।

मैं इतना कमजोर हो गया था कि स्वतन्त्रतापूर्वक चल फिर नहीं सकता था तथा यहाँ तक कि एक पत्र भी लिखना कठिन था। किन्तु मेरे इन सभी कष्टों तथा कठिनाइयों की पर्याप्त रूप से क्षतिपूर्ति हो गई जब मुझे मार्च १९५७ ई. के मध्य में कुछ दिन के लिये मेहेराज़ाद में बाबा के साथ रहने का उनका विशेष बुलावा मिला। बाबा का १२ माह का एकान्तवास फरवरी १९५७ ई. के मध्य में समाप्त हो गया था। बाबा के इस अचानक बुलावे ने मुझे अत्यधिक प्रसन्न कर दिया तथा मुझे एक नये जीवन की आश्वस्ति दी। मेरा समय निकट भविष्य में बाबा की प्रेमपूर्ण उपस्थिति में होने की आकुल प्रतीक्षा में व्यतीत होने लगा।

मैं १३ मार्च १९५७ ई. को मेहेराज़ाद की अपनी यात्रा पर चल दिया। मुझे १५ मार्च को वहाँ उपस्थित होना था। मेरी यात्रा की कसौटियाँ बिल्कुल प्रारम्भ से ही शुरू हो गईं। रेलवे स्टेशन जाने वाली मेरी बस बहुत विलम्ब से चली, और फिर कुछ मील दूर जाने के बाद वह खराब हो गई। कुछ समय बाद मिस्त्री के प्रयासों से शेष २७ मील की यात्रा के लिये बस ठीक हो गई। इस विलम्ब का यह परिणाम हुआ कि मेरी यात्रा प्रारम्भ होने वाले रेलवे स्टेशन पर उपलब्ध पहली ट्रेन छूट गई। सौभाग्य से अगले रेलवे जंक्शन पर ट्रेन पकड़ने के लिये यहाँ अभी एक और ट्रेन उपलब्ध थी, किन्तु मुझे जानकारी मिली कि यह ट्रेन दो घण्टे विलम्ब से चल रही है, इसलिये वहाँ मेरे मस्तिष्क में अगले जंक्शन पर वांछित ट्रेन के छूट जाने की सम्भावना उत्पन्न हो गई। यह ट्रेन धीरे-धीरे चल दी, और इसकी मन्द गति हर क्षण मेरे मस्तिष्क में महान तनाव उत्पन्न कर रही थी। अगले रेलवे जंक्शन पर जब मैंने दूसरी ट्रेन को छूटने के लिये प्लेटफार्म पर पहले से तैयार खड़ा पाया तो मेरा यह तनाव अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया। इंचार्ज यात्रा टिकट संग्रहकर्त्ता ने अहमदनगर के लिये मेरा टिकट बढ़ाने से इन्कार कर दिया तथा टिकट-घर से टिकट खरीदने के लिये मुझसे कहा। वहाँ कोई विकल्प नहीं था, अतः मैं अपने कन्धों पर अपना बिस्तरबन्द लिये हुये टिकट-घर की ओर दौड़ा, क्योंकि मेरे पास कुली को देने के लिये भी पर्याप्त पैसे नहीं थे। मैं अत्यधिक हाँफता हुआ खिड़की पर पहुँचा और उसे बन्द पाया। मैंने खिड़की को खटखटाया तथा

टिकट देने के लिये कहा, किन्तु टिकट बाँटने वाले ने यह कहते हुये टिकट देने से इन्कार कर दिया कि प्लेटफार्म पर कोई ट्रेन नहीं है। मैंने बारम्बार उससे अपने ऊपर दया करने की प्रार्थना की और उसको विश्वास दिलाया कि जिस ट्रेन से मुझे जाना है वह प्लेटफार्म पर खड़ी है, तथा मैं वहीं से इंचार्ज यात्रा टिकट संग्रहकर्त्ता के निर्देश पर टिकट खरीदने आया हूँ। मैंने इस क्षण बाबा से भी मदद करने की गहराई से प्रार्थना की। इसके परिणामस्वरूप टिकट बाँटने वाला अपने आफिस से बाहर आया और मेरे ऊपर एक नज़र डाली तथा मुझे झिड़क दिया। इस पर मैंने उसे पुनः विश्वास दिलाया कि ट्रेन प्लेटफार्म पर खड़ी है तथा यात्रा टिकट संग्रहकर्त्ता ने मुझसे टिकट घर से टिकट खरीदने के लिये निर्देश दिया है। वह अपने आफिस में गया और बड़े क्रोध से बड़बड़ाते हुये मेरा टिकट खिड़की के बाहर फेंक दिया। एकबार मैं पुनः अपने सिर पर बिस्तरबन्द रखकर ट्रेन की ओर दौड़ा। आधे से अधिक दूर दौड़ने के बाद मैं पूर्णतया थक गया तथा मेरे पैरों ने और आगे जाने से इन्कार कर दिया। ट्रेन मुझसे लगभग ५० गज दूर किसी भी क्षण छूटने के लिये तैयार खड़ी थी। उस समय मेरा मानसिक तनाव अपनी चरम सीमा पर था। मैंने एकबार पुनः बाबा से मदद के लिये प्रार्थना की तथा पूरे साहस को बटोरकर ट्रेन की ओर दौड़ा और अन्ततः भय से हाँफते हुये डिब्बे के अन्दर घुस गया। और इस प्रकार अन्ततः मुझे ट्रेन मिल ही गई जिसे मुझे मेरे प्रियतम बाबा के पास ले जाना था। मेरा सम्पूर्ण तनाव शान्त होकर महान खुशी में बदल गया। इंजन ने सीटी बजाई तथा ट्रेन मुझे लेकर बाबा के देश की ओर चल दी। और मैंने बाबा के अधिकाधिक निकट पहुँचते जाने के आनन्द का अनुभव किया।

मैंने यात्रा की खुशी का आनन्द पूरे छः घण्टे तक उठाया, जिसके बाद एक दूसरी कसौटी बाबा के प्रति मेरे धैर्य, विश्वास तथा प्रेम की परीक्षा लेने आ गई। हमारी एक्सप्रेस ट्रेन बरखेरा स्टेशन से होकर गुज़र रही थी जोकि भोपाल तथा इटारसी जंक्शनों के बीच में है। स्टेशन को पार करते ही हमारी एक्सप्रेस ट्रेन का इंजन मुख्य रेल-पथ पर निकल गया जबकि उसके पीछे के डिब्बे बगल की लूप लाइन पर घूम गये। परिणामस्वरूप

डिब्बे रेल की पटरी से उतर गये और जमीन पर भागते हुये शक्ति के साथ दायीं तथा बायीं ओर हिलने लगे। इस प्रकार इंजन के पीछे के पाँच डिब्बे रेल की पटरी से उतर गये तथा उनके पहिये जमीन के अन्दर गहराई से धँस गये। यह भयंकर दुर्घटना थी। सभी यात्री दुख में चिल्लाये तथा ईश्वर को मदद के लिये ऊँचे स्वर से पुकारा। ट्रेन दुर्घटना का दृश्य भयानक था, किन्तु दैवी कृपा से कोई घायल नहीं हुआ था, पूरी ट्रेन में केवल दो या तीन लोगों को मामूली सी चोटें आई थीं।

सभी यात्री ट्रेन के नीचे उतर पड़े। ऐसा ही मेरे डिब्बे के यात्रियों ने किया। सभी यात्री भयभीत थे तथा अपने को एक बड़ी विपत्ति से बचाने के लिये ईश्वर को धन्यवाद दे रहे थे। मैं अपने डिब्बे के यात्रियों से पृथक् खड़ा हुआ बाबा की दया के बारे में सोच रहा था। अपने डिब्बे के लोगों की बातचीत की ओर मेरा ध्यान गया जो मेरे लिये अत्यन्त महत्व की थी। उन यात्रियों में से एक ने अन्य लोगों से कहा, "यहाँ इस डिब्बे में 'कोई व्यक्ति' है क्योंकि उसके कारण सम्पूर्ण ट्रेन दुर्घटना टल गई है।" और, तुरन्त दो व्यक्तियों ने उसका समर्थन यह कहते हुये किया, "हाँ श्रीमान्‌जी, इस प्रकार का यहाँ 'केवल एक व्यक्ति' है।" इस पर उनमें से शेष सभी लोग एक साथ यह कहने लगे, "हाँ यहाँ इस प्रकार का केवल एक व्यक्ति है और इससे अधिक नहीं है।" मैंने उनकी दृढ़ बातों पर ध्यान दिया कि उनके डिब्बे में कोई एक व्यक्ति था और इस प्रकार का केवल एक व्यक्ति था क्योंकि उसके कारण सम्पूर्ण ट्रेन की दुर्घटना टल गई थी। अवतार मेहेरबाबा के दास के रूप में मैं अपने महत्व को भली भाँति जानता था इसलिये यात्रियों की उक्त बात ने मुझे पूर्णतया आश्वस्त कर दिया कि बाबा ने मेरे कारण ही सम्पूर्ण ट्रेन की दुर्घटना को टाला है; क्योंकि ट्रेन दुर्घटना के समय मैं बाबा की गहराई से याद कर रहा था तथा डिब्बे में लगने वाले प्रत्येक धक्के पर उनको अन्तस्तल से पुकार रहा था। इससे मेरी समझ में आया कि प्रियतम बाबा को मेरे कारण कष्ट उठाना पड़ा और मेरी सुरक्षा के लिये दौड़ना पड़ा। मैंने अगाधरूप से अपने को द्रवित महसूस किया और जोर-जोर से गहरी सिसकियों के साथ मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। किन्तु शीघ्र मैंने अपने आपको सम्हाला और आगे क्या

होता है इसकी प्रतीक्षा करने लगा। कई घण्टे की थकाने वाली प्रतीक्षा के पश्चात् इटारसी जंक्शन से राहत ट्रेन आई और यात्रियों को गन्तव्य स्थान की ओर ले गई। १५ मार्च के पूर्वान्ह में इस ट्रेन द्वारा मैं मनमाड जंक्शन पहुँच गया, जहाँ से मुझे अहमदनगर के लिये ट्रेन बदलनी थी। यहाँ पुनः मुझे अहमदनगर का टिकट खरीदने के लिये टिकट घर की ओर दौड़ना पड़ा और वह उस यात्रा की मेरी अन्तिम परीक्षा थी।

मैं सायंकाल लगभग ४ बजे अहमदनगर पहुँचा और सीधे बाबा के कार्यालय गया। बाबा के सेक्रेटरी श्री आदि के. ईरानी मेरी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि मुझे सुबह ही अहमदनगर पहुँच जाना था। उन्होंने मुझसे कहा कि वह सुबह बाबा से मिले थे और बाबा ने उनसे मेरे पहुँचने से सम्बन्धित कई प्रश्न पूछे थे। मैंने आदीजी से उपरोक्त ट्रेन दुर्घटना की गाथा बताई। आदीजी ने मुझे तुरन्त मेहेराज़ाद भेज दिया, जहाँ मुझे बाबा के समक्ष उपस्थित होना था। बाबा ने चिन्ता के साथ मेरी यात्रा तथा कुशलता के बारे में मुझसे कई प्रश्न पूछे। मैंने उनसे ट्रेन दुर्घटना के बारे में बतलाया। यह सुनकर उन्होंने बार-बार मुझसे पूछा कि क्या पूरी ट्रेन में कोई व्यक्ति घायल हो गया था। मैंने उन्हें बतलाया कि केवल एक-दो लोगों को मामूली सी चोटें आई थीं और सभी लोग एक भयंकर आपदा से बच गये थे। बाबा की ट्रेन दुर्घटना के बारे में चिन्ता तथा उनकी बार-बार की पूछताछ ने, कि क्या कोई व्यक्ति उस ट्रेन दुर्घटना में घायल हो गया था, मुझे विश्वास कराया कि निश्चित रूप से बाबा ने ही सम्पूर्ण ट्रेन दुर्घटना को टाला था और ऐसा उन्होंने अपने प्रिय दास, मेरे कारण किया था। बाबा ने मेरे पीले, दुर्बल एवं जर्जर स्वास्थ्य को करुणापूर्वक देखा तथा डॉक्टर (कुमारी) गौहर ईरानी से मुझे तुरन्त डॉक्टरी उपचार देने हेतु विचार विमर्श किया। उन्होंने मुझे कैप्सूल दिया जिसे दोपहर तथा सायंकाल के दोनों भोजनों के बीच में लेना था। इस प्रकार ईश्वर स्वयं मेरा दुनियावी डॉक्टर भी बना। उन्होंने मुझे मेहेराज़ाद में पूरे १० दिन तक अपने साथ रखा। ईश्वर के साथ उस कालातीत निवास के दौरान मैं पूर्णतया चंगा हो गया तथा मैं इतने कम समय में अपने चेहरे पर गुलाबी रंग पाकर बिल्कुल अचम्भित था ! मैं एकबार पुनः

सामान्य रूप से उत्साह तथा शक्ति से युक्त, स्वस्थ एवं प्रसन्न हो गया। केवल दयालु प्रभु ही मेरे लिये ऐसा कर सकते थे।

उन १० दिनों के दौरान बाबा ने १८ मार्च को अपना सार्वजनिक दर्शन साकोरी में उपासनी महाराज के आश्रम में दिया, तथा कुछ दिन बाद पूना में सेन्ट मीरा हाईस्कूल में दिया। बाबा ने मुझे इन दोनों दर्शन कार्यक्रमों में उनके साथ रहने वाली मण्डली में रखा। बाबा ने उन दर्शन कार्यक्रमों में अपनेआपको अद्वितीय रूप से प्रकट किया। बाबा के साथ उस प्रवास के दौरान मैंने उनसे एक अद्वितीय आन्तरिक भेंट भी प्राप्त की। यह वास्तव में एक दुर्लभ भेंट है जो उन्होंने हमेशा के लिए अपनी असीम दया के कारण मुझे प्रदान की। मेहेराज़ाद में अपने प्रवास के दौरान एक दिन सुबह जागने पर, मैंने अपने आपको असामान्य रूप से प्रसन्न अनुभव करता हुआ पाया। वह खुशी मेरे अन्तस्तल से प्रवाहित हो रही थी, और मैं इसका स्पष्ट रूप से कोई कारण नहीं जान सका। मैंने बाह्य रूप से इसका कारण जानने का प्रयास किया किन्तु असफल रहा। यह मेरे लिये एक बिल्कुल नया अनुभव था। अन्त में आनन्द के इस सतत् प्रवाह ने मुझे अन्तःकरण की ओर खींचा और मुझे ज्ञान कराया कि बाबा के नाम का जप "बाबा, बाबा, बाबा....." मेरे हृदय की धड़कनों के साथ स्वतः हो रहा था, और बाबा नाम के उस स्वतः जप से उस आनन्द का प्रवाह हो रहा था जिसे मैं महसूस कर रहा था। मेरे हृदय की धड़कनों के साथ बाबा-नाम का वह जप तब से हमेशा मेरे अन्दर अखण्ड रूप से चल रहा है, और तदनुसार इसके साथ आनन्द की अनुभूति स्वाभाविक रूप से हो रही है, और इसीलिये तब से मैं निरन्तर विपत्तियों, कष्टों, परीक्षाओं तथा दुःखों में भी खुशी का आनन्द लेता रहा हूँ। बाबा ने अपने आनन्द की यह भेंट मुझे विगत रात्रि प्रदान की थी, और मैंने महसूस किया कि यह मेरे अन्दर प्रियतम बाबा की प्रत्यक्ष आन्तरिक क्रिया का परिणाम था जिसके लिये बाबा ने विशेष रूप से मुझे मेहेराज़ाद बुलाया था, और इस भेंट के ठीक पूर्व मेरा वह महान कष्ट, बाबा से इस महान भेंट को प्राप्त करने के लिये, मात्र मुझे तैयार करने के लिये था।

अपने अन्दर बाबा के नाम के इस जप के स्वतः तथा सतत् प्रवाह के कारण, मुझे ईश्वर के नाम का अथवा उसके गुणों का मुख से 'कीर्तन' करने की आवश्यकता नहीं रह गई थी। जब कभी मैं 'कीर्तन' गाने वाली पार्टी के साथ बैठता हूँ, तो मैं उस कीर्तन के अपने उच्चारण को अपने मुख से वास्तविकरूप से उच्चारण किये बिना उनकी आवाज़ के साथ पूर्णरूप से एक महसूस करता हूँ। मेरे हृदय की धड़कन इसके साथ लयबद्ध हो जाती है तथा इसका उच्चारण ऐसे करती है मानो यह इसी से प्रवाहित हो रही है। इस प्रकार मुझे केवल अपने हृदय की धड़कन को, किसी 'कीर्तन' अथवा संगीत से, इसका पूर्ण शान्ति से आनन्द लेने के लिये, लयबद्ध करना पड़ता है मानो मैं स्वयं ही इसे वास्तविक रूप से कर रहा हूँ। यह यथार्थ में परमानन्द की अवस्था है जिसका मैं बाबा की कृपा तथा उनकी अनन्त दया के कारण आनन्द उठाता हूँ।

मेहेराज़ाद में भगवान मेहेरबाबा के साथ १० दिन तक रहने के पश्चात्, मैं अपना कार्य चालू रखने के लिये तरोताज़ा एवं स्फूर्तियुक्त होकर घर लौट आया। बाबा ने अपनी असीम दया के कारण मेहेराज़ाद में मुझे भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार की आरोग्यता प्रदान की जिससे मैंने उनके द्वारा सौंपे गये दैवी कार्य को और अधिक उत्साह से करने के लिये अपनेआपको आध्यात्मिक रूप से उन्नत तथा तैयार पाया। बाबा ने फरवरी १९५८ ई. में मेहेराबाद में अपने प्रेमियों को अपना 'सहवास' देने की घोषणा की। यह बाबा का अन्तिम 'सहवास' होने जा रहा था, क्योंकि बाबा ने स्वयं घोषित किया था कि इस प्रकार का 'सहवास' ७०० वर्ष बाद होने वाले उनके अगले अवतरण के पूर्व नहीं होगा। बाबा-प्रेमियों को इस अत्यन्त महत्वपूर्ण 'सहवास' को नहीं चूकना चाहिये। अतः, इस बात को दिमाग में रखकर मैंने उस अद्वितीय दैवी कार्यक्रम के लिये इस क्षेत्र में प्रेमियों को तैयार करना प्रारम्भ कर दिया तथा इस वर्ष के लिये इसे अपना मुख्य कार्य बनाया। समय अत्यन्त महत्वपूर्ण था। वर्ष के मध्य में बाबा ने अपने प्रेमियों को बाबा के प्रेम में सजग रहने तथा उनका 'दामन' मजबूती से पकड़े रहने की चेतावनी दी। बाबा की उस दैवी चेतावनी से मेरे अन्दर गहरा प्रभाव पड़ा तथा उन्होंने मुझे अपने प्रेम की महानतर

शक्ति प्रदान की जिससे मैं अपने पथ पर माया द्वारा प्रस्तुत सभी परीक्षाओं तथा कठिनाइयों में अपने को स्थिर रख सका।

## वर्ष १९५८ :

गौरवपूर्ण वर्ष १९५८, अब मेरे लिये दूसरे भाग्यशाली वर्ष के रूप में आया। इसका प्रारम्भ मेहेराबाद में प्रियतम भगवान मेहेरबाबा के अन्तिम 'सहवास' के साथ हुआ। यह 'सहवास' फरवरी १९५८ ई. में हुआ था। उस दुर्लभ 'सहवास' में भाग लेने के लिये मैं इस क्षेत्र के प्रेमियों के एक बड़े काफ़िले को मेहेराबाद ले गया। बाबा ने अपने प्रेमियों से कहा कि उस 'सहवास' कार्यक्रम के दौरान वह अपने प्रेमियों को कुछ अत्यन्त मूलभूत चीजों को बतायेंगे और फिर उस 'सहवास' के पश्चात् इस प्रकार का कोई 'सहवास' नहीं होगा। उन्होंने उनसे यह भी कहा कि इस 'सहवास' कार्यक्रम के दौरान वह अपने मौजूदा अवतार के उद्देश्य को ठोस रूप प्रदान करेंगे। अतः प्रेमियों से इसको न चूकने के लिये कहा, चाहे उनका स्वास्थ्य खराब हो अथवा उन्हें कुछ बहुत आवश्यक कार्य करने हों। मैंने उस 'सहवास' में पूरे हृदय से बाबा के शब्दों के उत्साह में भाग लिया, और मैंने महसूस किया कि उस 'सहवास' में मैंने बाबा से एक दूसरी आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त की। अपने अन्दर वह आध्यात्मिक उन्नति मुझे अत्यन्त शक्तिशाली मालूम पड़ती थी तथा मेरे जीवन को बिल्कुल एक नया रूप भी दे रही थी। मैंने स्पष्टरूप से महसूस किया कि उस 'सहवास' में भाग लेने के पश्चात् मैं 'सहवास' प्रारम्भ होने के ठीक पूर्व जैसा था उससे निश्चित रूप से भिन्न हो गया था। और, मुझे मालूम पड़ा कि यही स्थिति सभी 'सहवासियों' की थी जिन्हें मैं मेहेराबाद ले गया था। बाबा ने वास्तव में अपनी दिव्यता की एक शक्तिशाली लहर प्रवाहित की थी जिससे सभी सहवासी संतृप्त हो गये थे तथा उन्होंने नये जीवन में प्रवेश किया था ! मैं काफ़िले को दो आरक्षित बोगियों में ले आया।

इस 'सहवास' कार्यक्रम के पश्चात्, बाबा ने १० जुलाई को सम्पूर्ण भारत के अपने चुने हुये प्रेमियों को मेहेराबाद बुलाया। वह भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मीटिंग थी। उस मीटिंग में बाबा ने दुनियाँ को अपना ऐतिहासिक

"विश्वव्यापी सन्देश" तथा अपना प्रवचन "केवल ईश्वर है" दिये, जो बाद में उनके प्रेमियों द्वारा पूरे विश्व में प्रसारित किये गये। इस मीटिंग में मुझे भी आमन्त्रित किया गया था, और मैंने इस जिले के कुछ और प्रेमियों के साथ इसमें भाग लिया। उस मीटिंग में बाबा ने उनसे अधिकाधिक प्रेम करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया, तथा प्रेमियों से कहा कि यदि वे बाबा का प्रेम प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें १४ जुलाई से एक वर्ष तक प्रत्येक आधीरात को सुनाई देने योग्य आवाज़ में बाबा का नाम उच्चारण, प्रथम दिन १४ बार, दूसरे दिन २८ बार, तीसरे दिन पुनः १४ बार, चौथे दिन पुनः २८ बार करना चाहिये। इस प्रकार प्रेमियों को जो बाबा का प्रेम पाने की चाह रखते थे उन्हें पूरे एक वर्ष तक प्रत्येक आधीरात को पारी-पारी से १४ तथा २८ बार उनके नाम का जप करना पड़ता था। बाद में जब मैं बाबा के साथ अकेला था, उन्होंने खुद अपनी ओर से अपने नाम का प्रतिदिन उच्चारण करने के लिये मुझे यह कहते हुये मुक्त कर दिया था, "तुम्हें इसे करने की आवश्यकता नहीं है।" इस मीटिंग के पश्चात्, जो मेहेराबाद में बाबा का अन्तिम कार्यक्रम सिद्ध हुआ, मैं और भी आध्यात्मिक रूप से उन्नत होकर घर लौट आया।

एक बार पुनः नये उत्साह तथा शक्ति से पूरित होकर, मैं बाबा के "विश्वव्यापी सन्देश" तथा उनके प्रवचन 'केवल ईश्वर है' को सुदूर स्थानों में प्रसारित करने के कार्य में लग गया। मैंने उनकी अंग्रेज़ी तथा हिन्दी में अलग-अलग लगभग एक लाख प्रतियाँ छपवाई। जिले के सभी प्रेमियों ने इस कार्य के लिये मेरे पास अपने स्वेच्छिक तथा स्नेहपूर्ण योगदान भेजे तथा उन्होंने बाबा के इन सन्देशों का प्रसार करने के लिये विभिन्न स्थानों पर व्यक्तिगत रूप से जाने की भी इच्छा व्यक्त की। अतः मैंने इस प्रकार के प्रेमियों के कई ग्रुप बनाये तथा अवतार के "विश्वव्यापी सन्देश" का चारों ओर प्रसार करने के लिये उन्हें दूर तथा निकट के स्थानों में भेज दिया। महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानों पर त्योहारों में जब चारों ओर से हजारों की संख्या में तीर्थयात्री एकत्र होते थे तो वे लोग वहाँ तीर्थयात्रियों की भीड़ में प्रियतम बाबा का 'विश्वव्यापी सन्देश' बाँटते थे तथा ऊँचे स्वर में उनके प्रेम तथा सत्य के सन्देश को भी बताते थे। मैं, ६ अन्य बाबा-प्रेमियों के ग्रुप को

अक्टूबर १९५८ ई. में बाबा के सन्देश का प्रसार करने के लिये हिमालय पर्वत के शिखर पर कश्मीर ले गया। हम लोग १५ अक्टूबर को कश्मीर की राजधानी श्रीनगर पहुँचे, और उस स्थान के बाबा-प्रेमियों से सम्पर्क किया। हम लोगों ने बाबा के 'विश्वव्यापी सन्देश' तथा उनके अन्य सन्देशों का वहाँ के विभिन्न स्थानों के स्थानीय निवासियों तथा पर्यटकों में प्रसार किया जो पर्यटक विदेशों से तथा भारत के विभिन्न प्रान्तों से कश्मीर की सुन्दरता को देखने के लिये आये थे। जिन लोगों से हमने सम्पर्क किया उनके हृदयों को बाबा के सन्देश ने प्रभावशाली ढँग से स्पर्श किया। हम लोग कश्मीर राज्य के प्रधान महामहिम युवराज करणसिंह के महल में भी गये और उनको अवतार मेहेरबाबा का सन्देश दिया। उन्होंने हमसे बड़े ध्यान तथा रुचि से सन्देश की प्रति प्राप्त की तथा अत्यधिक प्रभावित मालूम पड़े। उन्होंने हमारा अपने सम्मान्य अतिथि के रूप में स्वागत किया तथा हमसे अत्यन्त प्रेम से मिले। हम लोग श्रीनगर में १९ अक्टूबर तक रूके तथा उस ४ दिन की अल्प अवधि में हम लोग अवतार मेहेरबाबा के दैवी सन्देश को पर्यटकों के माध्यम से भारत के दूरस्थ प्रान्तों तथा विदेशों में भी भेजने में समर्थ हुये। इस कार्य के लिये कश्मीर हमारे लिये एक सुन्दर केन्द्र सिद्ध हुआ।

१८ अक्टूबर की रात्रि से मैं बवासीर तथा पेचिश के साथ-साथ सर्दी तथा तेज बुखार से ग्रस्त हो गया। हमने १९ अक्टूबर से स्थानीय बाबा-प्रेमियों के घरों में जाने तथा उनके परिवारों से मिलने के लिये निश्चित किया था, किन्तु बीमारी के चौमुखे आक्रमण के कारण मैं बिस्तर से उठने में असमर्थ रहा। अतः हमारे ग्रुप के शेष लोगों ने उस कार्यक्रम को चलाया, जबकि मैं होटल में बाबा का स्मरण करता हुआ लेटा रहा। १९ अक्टूबर को मेरे स्वास्थ्य में सुधार के कोई लक्षण नहीं थे, और हम लोगों को २० अक्टूबर की सुबह अपनी वापिसी यात्रा के लिये प्रस्थान करना था, जिसके लिये मेल बस में हमारी सीटें पहले ही रिज़र्व हो चुकी थीं। मेरे साथी अत्यधिक चिन्तित हो रहे थे कि मैं किस प्रकार ऐसी बीमारी की हालत में यात्रा कर सकूँगा। किन्तु, मैं अपने स्वास्थ्य के बारे में अथवा अपनी वापिसी यात्रा के बारे में किसी प्रकार से बिल्कुल चिन्तित नहीं था, क्योंकि मुझे

बाबा की कृपा पर पूरा विश्वास था, और बीमारी के उस भयंकर आक्रमण में भी मैं अपने को प्रसन्न अनुभव कर रहा था। मुझे दृढ़ विश्वास था कि अपनी यात्रा पर प्रस्थान करने के समय बाबा की कृपा मुझे निश्चितरूप से यात्रा करने योग्य कर देगी तथा मुझे लम्बी यात्रा करने के लिये पर्याप्त शक्ति प्रदान करेगी। मैंने बीमारी के उस आक्रमण को बाबा में अपने प्रेम तथा विश्वास की दूसरी परीक्षा के रूप में लिया, जिसे मुझे बहादुरी तथा प्रसन्नतापूर्वक अवश्य स्वीकार करना चाहिये। और, देखिये! २० अक्टूबर की सुबह मैं अत्यन्त ठण्डे तथा बरसाती मौसम में यात्रा करने के लिये यथेष्ट रूप से योग्य हो गया था। जब हम अपने होटल से ताँगा में बस स्टेशन गये तो रिमझिम पानी बरस रहा था। उसी दिन कश्मीर घाटी में हिमपात भी प्रारम्भ हो गया, और यदि हम एक दिन के लिये श्रीनगर में और रूक जाते तो हम निश्चितरूप से हिमपात के कारण वहाँ फँस गये होते। किन्तु, ऐसा कैसे हो सकता था, क्योंकि बाबा पूरे समय हमारे साथ थे। हम लोग शाम तक रास्ते में बिना किसी कठिनाई के जम्मू शहर पहुँच गये और वहाँ रात्रि में विश्राम किया। अगली सुबह हम लोग पठानकोट पहुँचे, और वहाँ से ट्रेन द्वारा यात्रा की और सकुशल घर पहुँच गये। कश्मीर की यात्रा तथा बाबा-कार्य जो हमने वहाँ किया उसने हम सभी को बाबा के प्रेम तथा कृपा के कई बहुमूल्य अनुभव प्रदान किये जिससे हमारे जीवन का मूल्य बढ़ गया। इन महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ वर्ष १९५८ भी व्यतीत हो गया।

## वर्ष १९५९ :

वर्ष १९५९ ने अपने प्रारम्भिक महीनों में मुझे दूरगामी महत्व की अमूल्य शिक्षा प्रदान की। धर्मध्रुव गौर नाम के एक योगिराज (?) के लिये मेरे हृदय में गहरा स्थान था और मैं उनका बड़ा सम्मान करता था। उनसे मेरा सम्पर्क वर्ष १९५० में हमीरपुर में हुआ था। वह आकर्षक व्यक्तित्व वाले एक सुन्दर नवयुवक थे। उन्होंने अपने बारे में बताया था कि वह 'विश्व आध्यात्मिक शान्ति मिशन के अध्यक्ष' हैं, तथा ५१ भाषायें जानते हैं। जब वह यहाँ के एक निवासी के घर पर ठहरे थे तब पहले सम्पर्क में ही मैं उनसे प्रभावित हो गया था। अगली बार वह वर्ष १९५१ में, जब मैं जिला

परिषद का सेक्रेटरी था, हमीरपुर आये थे और लगातार ६ दिन तक मेरे साथ ठहरे थे। बाद में, वह मुझसे अपना सम्पर्क पत्रों के माध्यम से बनाये रहे जिनमें वह मुझे अपना आशीर्वाद, शान्ति तथा शुभकामनायें भेजा करते थे। १९५२ ई. में जब मुझे बिना किसी आधार के हमीरपुर जिला परिषद के सेक्रेटरी के पद से मुक्त कर दिया गया, तो वह मुझे पत्रों के माध्यम से लगातार अपना आशीर्वाद तथा शुभकामनायें भेजते रहे। इन सबसे उनके लिये मेरे हृदय में गहरा स्थान बन गया।

७ वर्ष पश्चात्, मार्च १९५६ ई. में उन्होंने मेरे मौजूदा निवास स्थान का अचानक दरवाजा खटखटाया जिसमें मेरा बाबा का आफिस भी है, जिसे स्वयं बाबा ने वर्ष १९५२–१९५३ में स्थापित किया था। मैं सात वर्ष की लम्बी अवधि के पश्चात् अचानक उनको देखकर अत्यधिक अचम्भित हुआ। मैं उनसे स्नेहपूर्वक मिला तथा उनके ठहरने के लिये अपने घर में उनके इच्छित एकान्त कमरे में व्यवस्था कर दी। इस बार वह मेरे साथ ६ दिन तक रूके। किन्तु, इस बार मैं उनसे प्रभावित नहीं हुआ, क्योंकि वह अपने व्यवहार में अधिक दिखावा कर रहे थे। ७ वर्ष पूर्व जब वह मुझसे मिले थे तो उस समय उनमें यह दिखावा नहीं था। शायद, अपने चारों ओर के लोगों को प्रभावित करने के लिये कि वह अज्ञात प्रदेश में सम्पर्क बनाये हुये हैं तथा वहाँ कार्य कर रहे हैं, अब थोड़ी-थोड़ी देर में वह कुछ बड़बड़ाया करते थे। चूँकि बाबा ने हमें अपने जीवन से सभी दिखावों का त्याग करने के लिये सिखाया है, इसलिये योगिराज (?) धर्मध्रुव के इस दिखावे से उनकी आध्यात्मिक स्थिति के बारे में मेरे अन्दर सन्देह उत्पन्न हो गया। अतः मैंने उनके साथ चौकसी बरतनी प्रारम्भ कर दी।

एक दिन उन्होंने बस्ती में एक बड़ा 'हवन-यज्ञ' कराने के लिये मुझसे यह कहते हुये अपना प्रस्ताव रखा कि यज्ञ के लिये जो धन एकत्रित होगा उससे बचे हुये पैसे से वह बड़ी संख्या में मेहेरबाबा का सन्देश छपवायेंगे तथा 'यज्ञ' में बड़ी संख्या में भाग लेने के लिये एकत्रित लोगों में उनको वितरित करेंगे, और बाबा के सन्देश को भाषणों के माध्यम से भी भीड़ में प्रसारित करेंगे। ये भाषण वहाँ की मीटिंगों में प्रेमियों द्वारा दिये जायँगे। उन्होंने मुझसे कहा कि वह केवल मेहेरबाबा के सन्देशों को प्रसारित करने

के लिये 'यज्ञ' करना चाहते हैं। उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि 'यज्ञ' से बचे हुये प्रचुर धन को वह मेरे परिवार के पालन-पोषण के लिये दे देंगे, क्योंकि वह जानते थे कि मैं एक लम्बे समय से आर्थिक तंगी की पकड़ में रह चुका हूँ। मुझे धन देने के उनके प्रस्ताव को मैंने सतर्कतापूर्वक देखा, और मैंने सोचा कि उसके द्वारा वह शायद लालच देकर मुझे फँसा रहे होंगे। इस प्रस्ताव से मुझे आकर्षण की बजाय नफ़रत महसूस हुई क्योंकि मेरा आर्थिक मामला पूर्णतया सृष्टि के स्वामी प्रियतम् अवतार मेहेरबाबा के अधीन था। मुझे आकर्षित करने वाली यह बात थी कि इस 'यज्ञ' के माध्यम से बड़े पैमाने पर बाबा का कार्य करने तथा बाबा के सन्देशों का प्रसार करने के लिये उनका प्रस्ताव था, अर्थात् वह 'यज्ञ' बाबा के दिव्य सन्देश के प्रसार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु साधन बनने वाला था। किन्तु, मैं स्वयं निर्णय नहीं कर सका कि क्या प्रस्तावित 'हवन-यज्ञ' दैवी कार्य के उद्देश्य के लिये उचित साधन था।

योगिराज (?) धर्मध्रुव ने मुझसे हमीरपुर नगर के चुने हुये बाबा-प्रेमियों को उनके पास बुलाने के लिये कहा जिनको वह बाबा-कार्य के बारे में गुप्त रीति से सम्बोधित करेंगे। तदनुसार मैंने प्रेमियों को बुलाया और उनसे यह कहा कि वह यहाँ बाबा का कार्य करना चाहते हैं। योगिराज (?) ने उनके समक्ष भी 'हवन-यज्ञ' का प्रस्ताव रखा। चूँकि मैं बाबा-कार्य के लिये साधन के रूप में 'हवन-यज्ञ' की शुद्धता के बारे में अभी तक निश्चित नहीं था, अतः मैंने योगिराज (?) से कहा कि मैं बाबा की स्वीकृति प्राप्त करने के पश्चात् ही आगे कोई कार्रवाई कर सकूँगा। सभी प्रेमियों ने मुझसे सहमति प्रकट की। बाद में, कुछ प्रेमियों ने मुझसे बताया कि योगिराज (?) ने इस प्रस्ताव को बाबा के पास उनकी स्वीकृति के लिये भेजने के मेरे इस विचार को पसन्द नहीं किया। योगिराज (?) हमीरपुर से, मुझसे यह कहते हुये चले गये– "ठीक है, आप इस मामले को स्वीकृति के लिये बाबा के पास भेज दें। इस समय मैं अन्य स्थानों की यात्रा पर जा रहा हूँ। यदि बाबा इस प्रस्ताव को स्वीकृति दे दें, तो आप उनकी स्वीकृति की सूचना मुझे तार द्वारा भेज दें। यदि वह स्वीकृति नहीं देते, तो मैं किसी और जगह 'यज्ञ' करने का प्रयास करूँगा।" मैंने बाबा को एक

लम्बा पत्र लिखा जिसमें मैंने उनके समक्ष योगिराज (?) धर्मध्रुव के प्रस्ताव के बारे में तथा उनके प्रस्ताव को स्वीकार करने में अपनी कठिनाई के बारे में, प्रत्येक चीज़ का स्पष्ट रूप से उल्लेख कर दिया।

उस समय बाबा अपनी मण्डली के साथ पूना में "गुरुप्रसाद" बंगले में ठहरे हुये थे। बाबा को भेजे गये मेरे पत्र का उत्तर यहाँ आने के पहले, मुझे पूना में "गुरुप्रसाद" बंगला में तुरन्त उपस्थित होने के लिये बाबा का आदेश तार द्वारा प्राप्त हुआ। बाबा द्वारा मुझे विशेषरूप से अपने पास बुलाने का उद्देश्य मैं नहीं जानता था। मैंने तुरन्त हमीरपुर से प्रस्थान कर दिया और पूना में "गुरुप्रसाद" बंगले में बाबा के पास पहुँच गया। बाबा मुझसे अत्यन्त स्नेहपूर्वक मिले तथा मेरे परिवार की कुशलक्षेम पूछी। बातचीत के मध्य उन्होंने योगिराज (?) धर्मध्रुव की चर्चा की तथा उनके बारे में मेरी राय पूछी। मैंने बाबा से बताया कि अभी तक मैंने उनके विरुद्ध कुछ नहीं पाया सिवाय इसके कि इस बार वह अपना बड़ा दिखावा करते हैं जो मुझे बहुत भद्दा लगता है। बाबा जोर से मुस्कराये तथा मुझसे कहा, "तुम्हें धोखा दिया गया है।" मैंने पूरी गम्भीरता के साथ बाबा के शब्दों को सुना तथा योगिराज (?) की वास्तविकता को हृदयंगम किया। बाबा ने मुझे अपने साथ दो दिन तक रूकने के लिये कहा, और तत्पश्चात् दो या तीन बार में मेरे प्रवास को लगभग दस दिन के लिये बढ़ाया। उस प्रवास के दौरान उन्होंने 'मेहेर पुकार' पत्रिका में छापने के लिये मुझे कुछ सामग्री दी और उसे शुद्ध तथा सुन्दरतापूर्वक व्यवस्थित करने के लिये कहा, ताकि प्रत्यक्ष रूप से मैं यह जान सकूँ कि मुझे बाबा ने 'मेहेर पुकार' पत्रिका में प्रकाशित करने के लिये उस महत्वपूर्ण सामग्री को देने के लिये ही बुलाया था। बाबा ने योगिराज के बारे में जानकारी करने के लिये हमीरपुर एक तार भिजवाया, जिसके उत्तर में बाबा के पास समाचार आया कि 'योगिराज मेरी अनुपस्थिति में पुनः हमीरपुर पहुँच गये हैं, बाबा-प्रेमी स्वामीदीन शर्मा के घर में ठहरे हुये हैं, तथा वहाँ बाबा-प्रेमियों को ठग रहे हैं।' इस पर बाबा ने ६ अप्रैल १९५६ ई. को मेरे नाम से रामसहाय सिंह बघेल को निम्नलिखित तार हमीरपुर भिजवायाः– "तार मिला। आप और भवानीप्रसाद १८ मार्च का एरच द्वारा लिखा मेरा पत्र पढ़ें। तदनुसार शर्मा

तथा उससे सम्बन्ध रखने वालों को योगी और यज्ञ के साथ पूर्णरूप से सम्बन्ध विच्छेद करने के लिये सतर्क कर दें।" यह एक ऐतिहासिक पत्र है जो एरचजी ने मुझे भेजा था। मैंने इसे "गुरुप्रसाद" पूना में एरचजी की फाइल में पढ़ा था, क्योंकि यह मेरे पूना के लिये प्रस्थान करने के पहले हमीरपुर नहीं पहुँचा था। हमीरपुर के उनके प्रमुख कार्यकर्त्ता को अवतार मेहेरबाबा का यह पत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण, शिक्षाप्रद तथा ऐतिहासिक होने के कारण तथा सम्पूर्ण मानवजाति के लिये अत्यन्त उपयोगी भी होने के कारण, इसको ज्यों का त्यों पूरा नीचे दिया जा रहा है :

"गुरुप्रसाद"

२४–बन्द बाग मार्ग,

पूना–१

दिनांक १८.३.१९५६

मेरे प्रिय केशवबाबू,

बन्धु आदी को भेजा गया आपका १०.३.१९५६ ई. का पत्र यहाँ प्रियतम बाबा को पढ़कर सुनाने के लिये मिला।

बाबा बम्बई से १५ तारीख की शाम को पूना आ गये थे तथा वह पूना में जून के अन्त तक रहेंगे।

मैंने योगिराज धर्मध्रुव गौर सम्बन्धी आपका पत्र बाबा को पढ़कर सुनाया। बाबा ने पत्र की बातों को सुना तथा कहा–

"मैं उसके बारे में सब जानता हूँ, वह मुझे प्रिय है, वह मुझसे प्रेम करता है, वह मेरे हृदय के एक कोने में स्थान रखता है।"

बाबा ने तब मुझसे पुनः उनको पत्र पढ़कर सुनाने के लिये कहा और, जब मैं आपके पत्र के अन्तिम अनुच्छेद से पूर्व का अनुच्छेद पढ़ रहा था (जिसमें आपने उल्लेख किया थाः– मुख्य चीज़ जो मुझे खटकती है वह 'हवन-यज्ञ' का कराना है जो योगिराज द्वारा बाबा कार्य के उद्देश्य से किया जाना है, और यदि वह उद्देश्य आध्यात्मिक दृष्टिकोण से आपत्तिजनक

अथवा अनुचित न हो.....) बाबा ने स्पष्ट कियाः– "आध्यात्मिकता के साथ 'हवन यज्ञ' तथा अन्य 'यज्ञों' का क्या सम्बन्ध ?" और, "इस प्रकार के 'यज्ञों' से मेहेरबाबा का अवतारत्व कैसे स्थापित हो सकता है ?" और, "यदि इस प्रकार के यज्ञ अवतारत्व को स्थापित करने में कोई शक्ति रखते होते तो यज्ञों की मुहर से प्रमाणित अवतार के रूप में पूर्णतया स्थापित पीठासीन अवतारों की बाढ़ आ जाती !" किन्तु, "पुरातन पुरुष ने सभी 'यज्ञों', रूढ़ियों, कर्मकाण्डों तथा धार्मिक उत्सवों को समाप्त करने में अपनी मुहर लगाने के लिये एकबार पुनः अवतार लिया है; उसका वही अवतार मानवजाति के बीच सभी समर्पणों का समर्पण है; उसका वही मानव देहधारी रूप सभी मौजूदा रूढ़ियों, कर्मकाण्डों तथा धार्मिक उत्सवों से उत्कृष्ट है; पृथ्वी पर उसकी उपस्थिति ही, बाह्य प्रदर्शन के प्रत्येक उपक्रम को समाप्त करके, प्रत्येक व्यक्ति के हृदय द्वार को उसके अस्तित्व के मूलस्रोत की ओर खोल देने की, मुहर है।"

बाबा ने फिर अपने अत्यन्त प्रिय केशव के, उनके प्रियतम के प्रति, गहरे तथा महान प्रेम की चर्चा की; और इससे एक प्रसंग उत्पन्न हो गया जब बाबा ने यहाँ हम सबको केशव के प्रेम-गीत 'मेहेर चालीसा' का स्मरण करायाः– बाबा ने आपके समर्पण, पावन काज के प्रति आपके उसी समर्पित जीवन तथा हमीरपुर जिले में ग्रुप प्रधान के कर्तव्य का निर्वाह करने में आपकी योग्यता का हमें एहसास करा के हमारे हृदयों को भी स्पर्श किया। बाबा ने फिर हमको हमीरपुर जिले के अपने सभी प्रेमियों के प्रेम का अनुभव कराया। बहुत थोड़े समय में प्रियतम बाबा ने अपने अत्यन्त प्रिय हमीरपुर वालों द्वारा जिले में तथा पड़ोसी जिलों में किये गये कार्य की ओर ध्यान दिलाया। बाबा ने समर्पण, निःस्थार्थ सेवा, उनके प्रति श्रद्धा एवं विश्वास की भावना, जो सबकुछ हमीरपुर जिले में स्वाभाविक रूप से है, का स्मरण कराया। इन शब्दों को कलम से लिखने में लगे समय से भी कम समय में प्रियतम बाबा ने हमको उस तथ्य पर विश्वास कराया कि हमीरपुर जिले के उनके प्रिय जनों को उनके प्रियतम बाबा के प्रति उनके प्रेम तथा विश्वास को स्थापित करने के लिये किसी शिक्षण की आवश्यकता नहीं है। और, चाहे प्रस्तावित 'यज्ञ' को बाबा ने अनुमति दी होती, यद्यपि ऐसा करने

के लिये बाबा कभी नहीं चाहेंगे, इस प्रकार के 'यज्ञ' बाबा प्रेमियों के निर्मल हृदयों को–उन हृदयों को जिनमें प्रियतम बाबा दृढ़तापूर्वक स्थापित तथा पीठासीन हो गये हैं–दूषित करने के समान होंगे। योगिराज का 'यज्ञ' कुछ प्रेमियों के मामलों में उनके हृदयों से स्वयं बाबा को ही त्यागने का कारण हो सकता है। आपका मित्र योगिराज निष्कपटता से सत्य के हेतु कार्य करना चाहता है तथा सत्य की खोज में मानवजाति की सहायता करने के लिये अपने निजी ढँग से वह जोकुछ भी कर रहा है उससे बाबा अत्यन्त प्रसन्न हैं; किन्तु बाबा नहीं चाहते कि हमीरपुर जिले के उनके प्रिय जन अपनी उस दृष्टि को ही खो देने के खतरे की कीमत पर इस 'सत्य' को देखें , वह दृष्टि जो अभी भी उन चीजों को प्रिय मानती है जो प्रियतम बाबा की भौतिक उपस्थिति का प्रमाण हैं।

यदि योगिराज कोई 'यज्ञ' करना चाहता है तो वह अन्यत्र ऐसा करने के लिये स्वतन्त्र है; और यदि वह इसे जिले में करने के लिये कटिबद्ध है, तो यह सभी बाबा-प्रेमियों के लिये उपयुक्त होगा कि वह अपनी स्मरण शक्ति को ताज़ा करें तथा बाबा की "उनके प्रेमियों को चेतावनी" एवं 'यज्ञों', रूढ़ियों, कर्मकाण्डों, धार्मिक उत्सवों तथा विभिन्न योग क्रियाओं पर भी बाबा के प्रवचनों का स्मरण करें।

बाबा चाहते हैं कि मैं यहाँ आपको बताऊँ कि बाबा आपकी बौद्धिक योग्यताओं एवं बाबा में आपके प्रेम तथा दृढ़ आस्था पर ऊँचे दर्जे का विश्वास रखते थे और अब भी रखते हैं। तिस पर भी, आपका मित्र योगिराज, जो छः दिनों के लम्बे समय तक आपके साथ आपके अतिथि के रूप में ठहरा रहा, बाबा-प्रेमियों के ग्रुप प्रधान के रूप में आपकी योग्यता को प्रत्यक्ष रूप से धुँधला कर दिये हुये प्रतीत होता है, तथा वह 'यज्ञ' के साधन को एक यन्त्र के रूप में उपयोग करने के लिये आपको प्रलोभन में डाले रहा, जिसे त्यागने के लिये बाबा ने हमें सदैव सिखाया है। क्योंकि यह साधन बाबा के प्रेम के सन्देश तथा उनके अवतारत्व को स्थापित करने के हेतु प्रभाव-शून्य हो गया है। जब युग का अवतार स्वयं अपनी सृष्टि के बीच ईश-पुरुष के रूप में रहता है तो प्रेम के सिवा सभी चीजें एवं साधन पुराने हो जाते हैं। वास्तव में, जब सभी चीजें तथा साधन पुराने होने लगते हैं तब अवतार का आगमन एक नई व्यवस्था लाता है।

बाबा कहते हैं कि, चूँकि आपने छः दिन तक अपने मित्र योगिराज की संगति की थी, इसलिये आप उनको आसानी से इस सत्य पर विश्वास करा सकते थे कि 'यज्ञ' के रूप में धार्मिक कर्मकाण्डों को करने, तथा कुछ अत्यन्त भूखे प्राणियों को उनके खाने-पीने के अधिकारों से वंचित रखकर यज्ञ की अग्नि में अनावश्यक रूप से जलाने की बजाय योगिराज को प्रेम की कहीं अधिक श्रेष्ठ तथा पावन अग्नि में स्वयं को बलिदान करने पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिये था। विश्वास की इस प्रकार की देन निश्चित रूप से स्वीकार करने योग्य होती तथा अत्यधिक निश्चित रूप से हमीरपुर जिले के वातावरण के पूर्ण अनुरूप होती जो बाबा-प्रेम से पूरित है तथा जो इस प्रेम को पड़ोसी जिलों में बिखेर रहा है।

बाबा को इस प्रकरण पर आश्चर्यमिश्रित विनोद होता है, जो प्रत्यक्ष रूप से आपको प्रलोभित करता मालूम पड़ता है। बाबा के साहसी तथा रुग्ण केशव को चंगा करने की बजाय, उसके ही मित्र ने उसे दिग्भ्रमित तथा कमजोर कर दिया, यद्यपि वह मित्र भी बाबा को अत्यन्त प्रिय है।

इसलिये बाबा पत्र के रूप में इन पृष्ठों के द्वारा अपने अत्यन्त प्रिय केशव के लिये अपनी रोग दूर करने वाली औषधि भेजते हैं, ताकि उनका बहादुर एवं साहसी सैनिक न केवल दिग्भ्रम के अस्थायी संक्रमण पर विजय प्राप्त कर सके बल्कि अधिक सशक्त होकर और अधिक विश्वास के साथ दूसरों में भी उस सत्यता का समावेश कर सके जिसका विश्वास बाबा ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को कराना चाहते हैं जो अब भी प्रभाव शून्य चीज़ों के प्रभाव में फँसे हुये हैं।

बाबा चाहते हैं कि मैं यहाँ यह भी लिखूँ कि आपको इस पत्र के मन्तव्य का गलत अर्थ नहीं लगाना चाहिये बल्कि आप यह महसूस करें कि बाबा योगियों तथा उनकी यौगिक क्रियाओं की सर्वथा निन्दा करते हैं।

बाबा चाहते हैं कि योगियों को बाबा के प्रेम से पूरित हृदयों को दूषित नहीं करना चाहिये। ये योगी, वे जो इच्छा करते और चाहते हैं, अपने-अपने स्थानों में कर सकते हैं किन्तु बाबा के घर में नहीं।

हमारे योगी शुद्धानन्द भारती एक प्रसिद्ध योगी हैं और उनके समर्थकों का एक बड़ा दल है तथा वह मद्रास, वाडालूर आदि में योग

समाज केन्द्रों का संचालन भी करते हैं। योगीजी अपने निजी केन्द्रों पर जोकुछ भी वह चाहते हैं, करने के लिये स्वतन्त्र हैं। किन्तु जब वह बाबा-प्रेमियों के पास जाते हैं तो वह कभी योग अथवा 'यज्ञों' पर चर्चा नहीं करते, वह प्रेम तथा बाबा के विषय में चर्चा करते हैं। जब वह बम्बई में २५ फरवरी को बम्बई की जनता के समक्ष बोले तो उन्होंने इस या अन्य किसी साधन के द्वारा बाबा के अवतारत्व को स्थापित करने के लिये एक भी शब्द 'नहीं' कहा। इसके विपरीत, उन्होंने जनता से अपने हृदयों में बाबा को स्थापित करने का उपदेश दिया तथा पृथ्वी पर बाबा की भौतिक उपस्थिति का अधिकाधिक लाभ लेने को बताया।

बाबा अपने अत्यन्त प्रिय केशव को अपना "प्रेम" भेजते हैं; और, बाबा चाहते हैं कि उनका केशव यह जानकर खुश होवे कि केशव के प्रियतम अपने अति प्रिय केशव को उन लोगों की नज़रों में नहीं गिरने देंगे जो बाबा का कार्य करने का बहाना करते हैं तथा इसके द्वारा अपने स्वार्थ पूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते हैं।

सप्रेम आपका,

(ह.) एरच

पुनश्च : बाबा चाहते हैं कि आप पूर्व उल्लिखित पूना के पते पर इस पत्र का उत्तर दें।

इस पत्र ने मेरी आँखें खोलने का कार्य किया। "गुरुप्रसाद" पूना में बाबा के साथ मेरे लगभग दस दिन के आनन्ददायी प्रवास के पश्चात्, बाबा ने अपने निर्देशों तथा सलाह के आलोक में मुझे पुनः अपना कार्य करने के लिये घर वापिस जाने की अनुमति दे दी। हमीरपुर पहुँचने पर मुझे ज्ञात हुआ कि योगिराज (?) धर्मध्रुव मेरे यहाँ आने के ठीक एक दिन पहले दुबारा हमीरपुर छोड़कर चला गया क्योंकि उसने अवतार मेहेरबाबा के प्रिय तथा अबोध प्रेमियों के मध्य अत्यन्त गन्दा वातावरण उत्पन्न कर दिया था। मेरी अनुपस्थिति में उसने गरीब बाबा-प्रेमियों को, उनके इच्छित सुख की प्राप्ति हेतु, उन्हें अपनी यौगिक शक्तियों से प्रभावित करके, एक-दूसरे से झगड़ा कराने का प्रयत्न किया ताकि वे उसके एजेन्ट के रूप में लोगों

से धन कमाने में उसकी मदद कर सकें। वह बाबा-प्रेमियों से एक-दूसरे के प्रति दुर्भावना रखने के लिये पीठ पीछे उनकी बुराई करते थे। वह कुछ बाबा-प्रेमियों के साथ वासनापूर्ण हावभाव करने की सीमा तक भी गिर गये थे। संक्षेप में, उसने बाबा-प्रेमियों की एकता तथा अच्छाई एवं बाबा में उनके अडिग विश्वास को नष्ट करने का अपना भरसक प्रयास किया, किन्तु व्यर्थ रहा। बाबा के प्रिय प्रेमी अत्यन्त सावधान तथा जाग्रत थे। उन्होंने अपनी ईमानदारी, एकता तथा विश्वास को बनाये रखा, तथा योगिराज (?) को हमीरपुर से बाहर निकालने के लिये एक हो गये। एरचजी का पत्र पढ़ने, योगिराज (?) की इन सभी करतूतों को सुनने, तथा अपने लिये बाबा के शब्दों "तुम्हें धोखा दिया गया है" को स्मरण करने के पश्चात्, मुझे ज्ञात हुआ कि बाबा ने मुझे गम्भीर स्थिति से बचाने के लिये तथा योगिराज (?) को मेरे हृदय से, जहाँ उसका स्थान गहराई से सुरक्षित था, निकाल फेंकने के लिये अपने पास बुलाया था। बाबा ने हमें बताया था कि वह केवल उन्हीं हृदयों में प्रवेश करते हैं जो अन्य प्रत्येक चीज़ से रिक्त हो जाते हैं। बाबा पूर्णरूप से मेरे हृदय में वास कर सकें इसलिये योगिराज (?) का इसके बाहर निकलना आवश्यक था। और ऐसा स्वयं बाबा द्वारा किया गया था। हमीरपुर में उसकी करतूतों की कहानी ने उसको पूर्णरूप से मेरे हृदय से बाहर निकाल दिया था। मैं उससे मुक्त हो गया। वह तीसरे तथा अन्तिम व्यक्ति थे जिसको बाबा ने मेरे हृदय से बाहर निकाला था। हमीरपुर जिले के दीवान शत्रुघ्नसिंह तथा बाबा-प्रेमी परमेश्वरी दयाल (पुकार) दो अन्य व्यक्ति थे जो मेरे हृदय में अत्यन्त गहरा स्थान रखते थे, और जिन्हें बाबा ने पहले ही इससे बाहर निकाल दिया था। मेरे हृदय से इन तीनों के बाहर निकलने से, मेरा हृदय बाबा के लिये रिक्त हो गया तथा मैंने इन तीनों से स्वतन्त्रता का अनुभव किया। योगिराज (?) धर्मध्रुव गौर के प्रकरण ने मेरे जीवन में महान उपहार लाने का काम किया तथा इससे सज्जित होकर मैं अपने कार्य में लग गया।

समय बीतता गया, और मैंने बाबा-कार्य में समय के महत्व का अनुभव किया, जो तेजी से व्यतीत हो रहा था। बाबा ने सितम्बर १९५४ ई. में मेहेराबाद में अपनी 'अन्तिम घोषणा' की थी, फरवरी १९५८ ई. में मेहेराबाद

में अपना अन्तिम 'सहवास' दिया था, तथा १० जुलाई १९५८ ई. को मेहेराबाद में दुनियाँ को अपना "विश्वव्यापी सन्देश" दिया था। मैंने महसूस किया कि बाबा अपने कार्य को अपने अन्तिम 'प्रकटीकरण' के बिन्दु तक ले जाने के लिये अत्यन्त तीव्रता से आगे बढ़ रहे थे ताकि यह उनके विश्वव्यापी कार्य का अन्तिम चरण बन सके। इस भावना से प्रेरित होकर मैंने सोचा कि सभी जगह के बाबा-प्रेमियों के लिये यह सुअवसर है कि जब तक दुनियाँ में बाबा की भौतिक उपस्थिति रहे वे बाबा के नाम का अखण्ड जप करें। बाबा-नाम के इस अखण्ड जप के लिये सभी जगह उनके प्रेमियों को जप की इस ढँग से व्यवस्था करनी चाहिये कि जप का क्रम बीच में खण्डित हुये बिना अखण्ड चल सके। यह तभी सम्भव हो सकता है यदि विभिन्न बाबा-केन्द्र अन्य केन्द्रों के साथ जप चलाने में समन्वय बनाये रखेंगे। इस प्रकार से बाबा-नाम के अखण्ड 'जप' को कितने ही वर्षों तक चलाना सम्भव हो सकेगा। अतः मैंने अपना सुझाव १६ जुलाई १९५९ ई. के अपने पत्र द्वारा बाबा के सेक्रेटरी आदि के. ईरानी को भेज दिया। आदीजी ने मेरे पत्र के उत्तर में मुझे सूचित किया कि बाबा ने दयापूर्वक मेरे सुझाव को केवल तीन माह के लिये स्वीकृत किया है तथा उन्होंने भारत तथा पाकिस्तान के सभी बाबा-प्रेमियों को निम्नलिखित गश्तीपत्र भेजाः—

## अगस्त, सितम्बर तथा अक्टूबर १९५९ ई. को तीन महीने २४ घण्टे-अखण्ड "बाबा" नाम जप

*बाबा के आदेश से नहीं बल्कि हमीरपुर जिले के बाबा-प्रेमियों की ओर से श्री केशव नारायण निगम, हमीरपुर (उ.प्र.) द्वारा प्रस्तावित तथा बाबा द्वारा स्वीकृत।*

१. भारतीय संघ तथा पाकिस्तान के सभी राज्यों के प्रत्येक कस्बे, गाँव तथा नगर में, यदि सम्भव हो, तो १ अगस्त १९५९ ई. को १२ बजे आधी रात से, अखण्ड "बाबा" नाम जप संगठित किया जाये। यदि कुछ विलम्ब से प्रारम्भ हो तो कोई बात नहीं।

२. किसी भी व्यक्ति को किसी केन्द्रीय स्थान अथवा बाबा केन्द्र पर आवश्यक रूप से जप करने के लिये बाध्य नहीं करना चाहिये।

जप केन्द्रीय स्थान, अथवा बाबा केन्द्र अथवा किसी व्यक्ति के घर पर, अथवा बाबा-प्रेमियों के अलग-अलग घरों पर या तो जोर-जोर से या धीरे-धीरे या मन ही मन किया जा सकता है।

३. इस बात का ध्यान रखा जाय कि किसी जप व्यवस्थापक अथवा उसके अथवा उसके परिवार के सदस्यों को उसके या उसकी या उनके जप कराने के कारण किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिये। केवल उन्हीं लोगों को, जो इच्छुक तथा सुविधापूर्वक समय दे सकते हों, जप कराना चाहिये।

४. जप व्यक्तिगत रूप से अथवा किसी सुविधाजनक संख्या के साथ सामूहिकरूप से किया जा सकता है।

५. इसके पहले कि जप प्रत्येक गाँव, कस्बे अथवा नगर में स्वतन्त्र रूप से हो, विभिन्न व्यक्तिगत इकाइयों अथवा समूहों के मध्य समय का समन्वय, प्रत्येक गाँव, कस्बे अथवा शहर में स्वतन्त्र रूप से निर्धारित होना चाहिये।

६. ये विवरण विभिन्न बाबा-केन्द्रों के केवल ग्रुप प्रधानों को वितरित किये जायँ जिन्होंने इस सूचना को अपने पड़ोस के गाँवों, कस्बों तथा नगरों के अपने सम्पर्क के लोगों में वितरित करने के लिये माँगे हों।

७. प्रत्येक बाबा-प्रेमी को जानकारी कराई जाय कि यह जप बाबा के आदेश से नहीं होना है। अतः ऐसा नहीं है कि इसे हर कीमत पर किया ही जाना है।

८. बाबा कहते हैं कि अगस्त, सितम्बर तथा अक्टूबर उनके विश्वव्यापी आध्यात्मिक कार्य से सम्बन्धित तीन नाजुक महीने हैं, अतः बाबा हमीरपुर (उ.प्र.) के प्रस्ताव को स्वीकृति देते हैं।

किंग्स रोड (ह.) आदि के. ईरानी

अहमदनगर,

२३.७.१९५६

तदनुसार मैं सम्पूर्ण जिले में 'जप' संगठित करने में व्यस्त हो गया। उस 'जप' ने हमीरपुर जिले में इतिहास बनाया, और, शायद, सभी स्थानों पर जहाँ यह जप हुआ, इससे आध्यात्मिकता की प्रबल लहर तथा बाबा का प्रेम निःसृत हुआ, और जप स्थलों पर इसके करने में प्रेमियों द्वारा अद्‌भुत प्रकाशन देखे गये। हमीरपुर जिले के मझगवाँ केन्द्र में इस 'जप' का नास्तिक लोगों द्वारा पूरी शक्ति से विरोध किया गया। उन्होंने 'जप' स्थल के समीप से अपनी पूरी आवाज से भद्दे नारे लगाते हुये कोलाहलपूर्ण जुलूस निकाला, और यहाँ तक कि अखण्ड जप की श्रृंखला को खण्डित करने के लिये 'जप' स्थल में भी घुस गये, किन्तु इतिहास में अंकित होने के सिवाय उनके सभी प्रयास विफल हो गये। कुल मिलाकर तीन माह के अखण्ड 'जप' का चारों ओर अद्‌भुत रूप से जागृत करने वाला प्रभाव हुआ। इस प्रकार उस 'जप' की यशस्वी अवधि व्यतीत हो गई। बाबा के प्रिय प्रेमियों ने उनके दर्शन की बाट जोहना प्रारम्भ कर दिया।

## वर्ष १९६० :

वर्ष १९५९ के उत्तरार्द्ध में हमनें बाबा के नाम के अखण्ड 'जप' द्वारा उनकी गहराई से अनुभूति की। प्रत्येक प्रेमी आनन्द की तीव्र लहर में प्रवाहित होने की अनुभूति कर रहा था तथा प्रियतम बाबा के दर्शन के लिये लालायित था, क्योंकि बाबा वर्ष १९५९ के अन्त में अपने एकान्तवास से बाहर आ गये थे। उन्होंने वर्ष १९६० के बिल्कुल प्रारम्भ से ही– २ जनवरी को आरनगाँव ग्राम में, ४ जनवरी को अवतार मेहेरबाबा केन्द्र अहमदनगर में, तथा ६ मार्च को अहमदनगर में– अपना दर्शन देना शुरू कर दिया। इनके अतिरिक्त, उन्होंने अप्रैल से जून १९६० ई. तक "गुरुप्रसाद" पूना में अपने सभी प्रेमियों को अपना दर्शन देने की घोषणा की। इसलिये हमीरपुर जिले के प्रेमियों ने बाबा के दर्शन के लिये एकसाथ ग्रुप में पूना जाने की तैयारी प्रारम्भ कर दी।

इसी बीच में, मैंने यहाँ बाबा के प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में जिले में बाबा-प्रेमियों का एक अन्य ऐतिहासिक सम्मेलन आयोजित किया। वह कार्यक्रम बाबा-प्रेमियों के विश्वास एवं प्रेम की तथा बाबा के प्रेम एवं उनके

उपदेशों को अमल में लाने के उनके साहस की, एक महान परीक्षा थी। सरसई (राठ) गाँव का, मेहतर जाति का एक गहरा बाबा-प्रेमी भगवानदास पिछले कई वर्षों से मुझसे अपने निवास स्थान पर बाबा का कीर्तन कराने तथा उनके सन्देशों का प्रसार करने के लिये बाबा-प्रेमियों के एक विशाल सम्मेलन को आयोजित कराने हेतु निवेदन कर रहा था, किन्तु मैं जानबूझकर इसकी उपेक्षा यह सोचकर कर रहा था कि जिले में इस प्रकार के कार्यक्रम का अभी उचित समय नहीं है। भारत में शताब्दियों तक मेहतरों को पूर्ण अछूत के रूप में माना जाता रहा था तथा वे लोग सभी मानव अधिकारों से वंचित रहते थे। अस्पृश्यता के अभिशाप ने उन्हें हर दृष्टि से तथाकथित सवर्ण लोगों से एवं सम्पूर्ण समाज से भी पूर्णतया पृथक् रखा। अतः सवर्ण लोग न तो मेहतरों के घरों में जा सकते थे, न ही उनके साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध रख सकते थे। मेहतरों के साथ ठहरना, अथवा उनका छुआ या पकाया भोजन लेना यह उनकी कल्पना के परे था। यह हमें शताब्दी पुरानी अत्यधिक कठोर परम्परा के रूप में आगे लिये जा रही थी, और समाज की वर्तमान स्थिति में बाबा-प्रेमियों को इसके लिये बहुत बड़े साहस की आवश्यकता थी कि वे इस परम्परा को तोड़कर अपने गुरुभाई भगवानदास मेहतर के घर पर ठहरें, गाँव के बाहर उनकी झोपड़ियों में मेहतरों के साथ रहें तथा बिना किसी हिचकिचाहट के उनके साथ खायें पियें। ऐसे में यह समाज के लिये एक खुली चुनौती थी। किन्तु हमीरपुर जिले के बाबा के प्रिय प्रेमियों के ऊँचे स्तर के अनुशासन, विश्वास एवं प्रेम को देखकर अन्ततः मैंने इस अमानवीय रूढ़ि को चुनौती देने का साहस कर लिया तथा मैंने जनवरी १९६० ई. में मेहेरधाम नौरंगा में हुये प्रेमियों के एक जमाव में घोषित कर दिया कि ३ तथा ४ अप्रैल १९६० ई. को रामनवमी के अवसर पर, इस जिले के समस्त बाबा-प्रेमियों का एक विशेष सम्मेलन, सरसई (राठ) में बाबा के प्रिय प्रेमी भगवानदास मेहतर के निवास स्थान पर होगा। मैंने सभी प्रेमियों को आगाह किया कि यह सम्मेलन बाबा के प्रति उनके विश्वास तथा प्रेम की महान परीक्षा का सूचक होगा। और, वहाँ उपस्थित सभी प्रेमी बाबा-प्रेम में उस परीक्षा का साहसपूर्वक सामना करने के लिये प्रसन्नता के साथ सहमत हो गये।

इस जिले के कुछ प्रमुख कार्यकर्त्ता प्रबन्ध में भगवानदास की मदद करने के उद्देश्य से उसके निवास स्थान पर एक दिन पहले पहुँच गये और कार्यक्रम की संध्या पर हमीरपुर जिले के, कुछ प्रेमियों को छोड़कर जो साहस नहीं कर सके, लगभग सभी कार्यकर्त्ता एवं सभी केन्द्रों के प्रमुख बाबा-प्रेमी सरसई में भगवानदास मेहतर के निवास स्थान पर एकत्र हो गये। विरोध की स्थिति में तथा क्रोधपूर्ण बड़बड़ाहट के मध्य निर्धारित तिथियों ३ व ४ अप्रैल १९६० ई. को भगवानदास मेहतर के निवास स्थान पर एक अत्यन्त आनन्दपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। बाबा का गहरा प्रेम तथा आशीर्वाद उन सभी के लिये प्राप्त हुआ था जो उस ऐतिहासिक उत्सव में सम्मिलित हुये थे, जबकि बाबा ने अपना प्रेम-आशीर्वाद अलग से भगवानदास को भी इस महान कार्यक्रम पर उसे प्रसन्न तथा उत्साहित करने के लिये भेजा था जिसकी उसने अपनी निर्धनता के बावजूद बाबा-प्रेम में अपने खर्च से व्यवस्था की थी। बाबा के प्रेम तथा आशीर्वाद ने कार्यक्रम को अलौकिक रीति से आनन्ददायी एवं सफल बना दिया। इस जिले में यह कार्यक्रम इतिहास बन गया तथा इसका समाज पर दूरगामी प्रभाव पड़ा। लोग अवतार मेहेरबाबा के प्रेमियों के साहस को देखकर चकित थे, जिसे उन्होंने बाबा के प्रति अपने गहरे प्रेम तथा विश्वास से प्राप्त किया था। बुद्धिमान लोगों ने समाज की इस शताब्दियों पुरानी अमानवीय परम्परा को सफलतापूर्वक तोड़ने के लिये बाबा-प्रेमियों को अद्वितीय श्रेय दिया, जबकि अन्य संकुचित दृष्टिकोण वालों ने बाद में कई वर्षों तक इसके विरुद्ध प्रतिकार किया। बाबा-प्रेमियों ने इस प्रकार की सभी प्रतिक्रियाओं का और भी अधिक दृढ़ता के साथ बाबा-प्रेम में स्थापित होकर बहादुरी के साथ सामना किया। सभी बाबा-प्रेमी इस ऐतिहासिक सफलता पर बेहद प्रसन्न हुये।

अब, हमीरपुर जिले के बाबा-प्रेमियों ने अपना ध्यान तत्काल प्रियतम बाबा के दर्शन की ओर मोड़ दिया, और मैं लगभग २०० पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों के काफ़िले को एक आरक्षित बोगी में पूना ले गया। यह ६६ सीटों वाली बोगी थी जिसमें लगभग २०० प्रेमी बैठे थे। अतः बोगी में भारी भीड़ का अनुमान भलीप्रकार लगाया जा सकता है। फिर भी, उस भीड़ में प्रेमियों

ने १३ मई १९६० ई. को पूना पहुँचने के लिये ३० घण्टे तक प्रसन्नतापूर्वक यात्रा की, और क्या ही हर्ष की बात है कि जैसे ही वे अपने ठहरने के स्थान—एक हाई स्कूल भवन पर पहुँचे—बाबा उनसे मिलने के लिये अपनी मण्डली के साथ वहाँ पहुँच गये। बाबा अपने प्रति उनके प्रेम तथा उस प्रेम के कारण सहे गये कष्ट से, जिसे उन्होंने उनके दर्शन के लिये उठाया था, अत्यधिक प्रभावित हुये। बाबा द्वारा इस प्रकार मिलना अत्यन्त असामान्य था, जिसे उन्होंने किसी दूसरे ग्रुप के साथ नहीं किया। १४ मई की सुबह जब हम लोग ''गुरुप्रसाद'' के अहाते में बाबा के दर्शन के लिए प्रवेश की प्रतीक्षा में एक पंक्ति में खड़े हुये थे, बाबा अपनी मण्डली के साथ बाहर हमारे पास आये और हमसे मिलने लगे। यह भी बाबा के लिये असामान्य था। दर्शन के दौरान बाबा ने हमसे कहा कि यह उनके प्रति हमारे प्रेम के कारण था जिससे वह हमारे आवास स्थल पर हमारे बीच उपस्थित होने के लिये गये थे तथा ''गुरुप्रसाद'' के फाटक तक चलकर हमारे पास पहुँचे थे। उन्होंने व्यक्त किया कि वह उनके प्रति हमारे प्रेम से, तथा जिस रीति से हमने उनका कार्य अपने क्षेत्र में किया था उससे अत्यन्त प्रसन्न थे। उन्होंने तीन माह के अखण्ड 'जप' पर, जोकि हमारे जिले में जप के दौरान आये सभी विरोधों और बाधाओं का बहादुरी से सामना करते हुये सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ था, अपनी महान खुशी प्रकट की तथा उन्होंने इससे भी अधिक खुशी उस कार्यक्रम पर व्यक्त की जो हमने अपने जिले के सरसई ग्राम में भगवानदास मेहतर के निवास स्थान पर आयोजित किया था। बाबा ने, वहाँ उपस्थित सभी लोगों से सरसई सम्मेलन की अत्यन्त प्रशंसा की। बाबा ने हमें हमारे ऊपर उनकी 'नज़र' के लिये आश्वस्त किया और हमें उनका ''दामन'' मजबूती से पकड़े रहने के लिये सचेत किया। हम लोग १४ से १७ मई १९६० ई. तक बाबा के समीप रहे। १७ मई को दोपहरबाद, हमारा काफ़िला रिज़र्व बोगी में पूना से घर के लिये चल दिया।

किन्तु, अब भी कई प्रेमी, जो बाबा के दर्शन की उत्कट इच्छा रखते थे, रह गये थे। दर्शन १० जून १९६० ई. के पश्चात् बन्द होने जा रहा था। इसलिये, मैंने उनके लिये भी एक बोगी रिज़र्व कराई। इस काफ़िले में

हमीरपुर जिले तथा इसके पड़ोस के १४८ पुरुष, स्त्रियाँ तथा बच्चे थे। हमें इन १४८ लोगों को पूना ले जाने के लिये ८० सीटों वाली बोगी मिली, और हम सबने इसमें पूरे आनन्द के साथ यात्रा की। हम लोग ३ जून १९६० ई. को दोपहरबाद ''अवतार मेहेरबाबा की जय'' घोष के साथ पूना पहुँच गये। हमने ''गुरुसाद'' में बाबा के दर्शन ४ से ७ जून १९६० ई. तक किये। यह दर्शन कार्यक्रम का अन्त होने से दर्शनार्थियों की वहाँ भारी भीड़ थी। ७ जून १९६० ई. को दर्शन के दौरान, बाबा ने मुझसे पुनः उनको ''मेहेर चालीसा'' सुनाने के लिये कहा। मैंने एकबार और अपना ''मेहेर चालीसा'' प्रियतम बाबा को सुनाकर अर्पित किया, और उसके साथ बाबा ने उस दिन का दर्शन कार्यक्रम समाप्त कर दिया। १४ मई १९६० ई. को भी बाबा ने मुझसे दर्शन कार्यक्रम के दौरान ''मेहेर चालीसा'' सुना था तथा इससे पुनः पहले की तरह प्रभावित हुये थे। मैं दूसरे काफ़िले को लेकर ७ जून १९६० ई. को दोपहरबाद पूना से वापिस चल दिया। प्रियतम बाबा के दर्शन से पुनः नये उत्साह से पूरित होकर, मैं जिले में बाबा-कार्य में व्यस्त हो गया।

१ जुलाई १९६० ई. से बाबा अपने ६ माह के एकान्तवास में प्रवेश कर गये, जिसे उनके प्रेमियों को जीवन परिपत्र सं. ४७ दिनांक ३० जून १९६० ई. के द्वारा सूचित किया गया था, और वह पुनः पर्दे के पीछे से अपने प्रकटीकरण के कार्य में लग गये।

## १९६१ ई. से १९६९ ई. तक

जैसा ऊपर बताया जा चुका है, बाबा १ जुलाई १९६० ई. से अत्यन्त कठोर एकान्तवास में चले गये। यह उनके अत्यधिक कठोर एकान्तवासों में से एक था, जिसके दौरान बाबा ने स्वयं को बाह्य जगत से पूर्णतया खींच लिया था, ताकि उनके साथ रहने वाले मण्डली के जन भी अपने को उनसे भौतिकरूप से दूर महसूस करें। सभी प्रेमी आशा करते थे कि बाबा का यह एकान्तवास वर्ष १९६० के अन्त तक रहेगा, किन्तु वर्ष की समाप्ति के पूर्व बाबा ने घोषित किया कि वह अपना एकान्तवास अनिश्चित अवधि तक जारी रखेंगे और इससे केवल अपना मौन तोड़ने के पश्चात् ही बाहर आयेंगे। बाबा की इस घोषणा को सुनकर सभी जगह के प्रेमी घबड़ा

गये क्योंकि वे बाबा के दर्शन की उत्कट अभिलाषा रखते थे जिसे बाबा विगत कई वर्षों से प्रति वर्ष कम से कम एकबार अपने प्रेमियों को देते रहे थे। वे सतत् बढ़ते हुए उत्साह तथा शक्ति के साथ बाबा के सन्देशों का प्रसार करते हुए, धैर्यपूर्वक उनकी मर्ज़ी में दर्शन की प्रतीक्षा करते रहे।

उनके दर्शन की अपने प्रिय प्रेमियों की अभिलाषा को पूरा करने के लिये, बाबा ने ''गुरुप्रसाद'' पूना में १५ से ३१ मई १९६१ ई. तक उनको अपना दर्शन देने की घोषणा की। बाबा की इस घोषणा से उनके प्रेमियों में खुशी की एक जोरदार लहर फैल गई। मैं एकबार पुनः बाबा के निकट होने के उस दुर्लभ अवसर को नहीं चूक सका क्योंकि पृथ्वी पर अवतार के दर्शन की तुलना में कोई भी चीज़ इससे अधिक गौरव की, महत्त्व की तथा मूल्यवान नहीं हो सकती है। चूँकि समय बहुत कम था इसलिये हम रेलगाड़ी में अपनी लम्बी यात्रा के लिये सीटों का आरक्षण कराने में असमर्थ थे। अतः इस क्षेत्र के बाबा-प्रेमियों ने अपनी सुविधानुसार तिथियों में बाबा के दर्शन के लिये छोटे-छोटे ग्रुपों में पूना जाना प्रारम्भ कर दिया। मैंने अन्तिम तिथियों ३० तथा ३१ मई १९६१ ई. को बाबा का दर्शन करने के लिये २८ मई १९६१ ई. को ५० पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों के काफ़िले के साथ प्रस्थान कर दिया। हम लोग २८ मई १९६१ ई. को झाँसी में पठानकोट–बम्बई एक्सप्रेस में बैठ गये। पूरी रेलगाड़ी यात्रियों से ठसाठस भरी थी, किन्तु प्रियतम बाबा की मधुर याद में हमने पूरे दिन तथा आधीरात तक खुशी-खुशी यात्रा की। आधीरात को हम लोग मनमाड जंक्शन के पास पहुँच रहे थे, जहाँ से हमें पूना के लिये अपनी रेलगाड़ी बदलनी थी। हमारी एक्सप्रेस रेलगाड़ी थोड़ी लेट होने के कारण पूरी रफ्तार से चल रही थी तथा पिम्परखेड स्टेशन से गुजर रही थी। पिम्परखेड स्टेशन के सन्धि स्थान पर इन्जन को अचानक झटका लगा और वह मुख्य लाईन पर जाने के बजाय लूपलाईन पर चला गया, और सभी बोगियाँ इसी प्रकार इसके पीछे चली गईं। सभी यात्रियों ने प्रबल झटके महसूस किये, बोगी के नीचे से कर्कश आवाज सुनी तथा रेलगाड़ी के नीचे तथा चारों ओर से धूल के उठते हुये काले बादल देखे। यात्रियों को रेलगाड़ी के पटरी से उतर जाने की आशंका हुई और सभी ने रेलगाड़ी को रोकने के लिये

अपनी-अपनी बोगियों की जंजीरें खीच दीं, तथा ड्राइवर ने इन्जन के सम्पूर्ण ब्रेक लगा दिये। रेलगाड़ी कुछ दूर जाकर रुक गई; उसकी तीन बोगियाँ पटरी से उतर गईं थीं। सभी यात्री अत्यन्त भय तथा आतंक के कारण रेलगाड़ी के नीचे उतर पड़े, और एक बड़ी दुर्घटना से बचाने के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया। इन्जन ड्राइवर ने यात्रियों को बताया कि जिन स्थितियों में रेलगाड़ी जा रही थी, इसके अचानक लूपलाईन में घूम जाने तथा जंजीर एवं ब्रेक द्वारा अचानक रुक जाने से, सम्पूर्ण रेलगाड़ी को ध्वस्त हो जाना चाहिये था और सभी यात्रियों को कुचलकर मर जाना चाहिए था। उसने उनको बताया कि यद्यपि उसको एक बड़ी दुर्घटना से रेलगाड़ी बचाने के लिए पुरस्कृत किया जायगा, किन्तु सम्पूर्ण दुर्घटना को केवल ईश्वर द्वारा बचाया गया है। उसने उनको आगे बताया कि स्थिति से घबराकर उसने इन्जन को बचाने का प्रयास किया और उसके लिये उसने पूरे ब्रेक लगा दिये, और अपने इन्जन को बचाते हुए वह यह देखने के लिये नीचे उतर पड़ा कि क्या कोई यात्री अथवा बोगी सुरक्षित बच गई है ! इसके विपरीत, वह यह जानकर पूर्णतया आश्चर्यचकित था कि सभी यात्रियों सहित पूरी रेलगाड़ी सुरक्षित थी, केवल तीन बोगियाँ पटरी से उतर गई थीं किन्तु वे रेल की पटरी से दूर नहीं हटीं थीं। सभी यात्री बातचीत कर रहे थे कि रेलगाड़ी में निश्चितरूप से कुछ भाग्यशाली आत्मायें हैं जिनके कारण ईश्वर ने दुर्घटना को टाल दिया है और सभी यात्री बच गये हैं। मैंने बड़े ध्यान से उनकी बातचीत सुनी और स्वयं विचार किया कि वे लोग नहीं जानते हैं कि वहाँ पृथ्वी पर मौजूद अवतार मेहेरबाबा के ५० प्रिय बच्चे हैं जो उस रेलगाड़ी से यात्रा कर रहे हैं और जिनके कारण बाबा ने सम्पूर्ण रेलगाड़ी को एक बड़ी दुर्घटना से बचाया है। मैं उस रेलगाड़ी के शयनयान में यात्रा कर रहा था, और मैंने पाया कि बाबा की कृपा से मेरी बोगी पटरी से नीचे नहीं उतरी थी जबकि इसके आगे की दो बोगियाँ तथा पीछे की एक बोगी पटरी से नीचे उतर गई थी। हम लोगों में से कई ने रेल दुर्घटना के दौरान ऊँचे स्वर में ''बाबा'' को पुकारा, और हम सभी ने महसूस किया कि बाबा हमें छुटकारा दिलाने आये थे तथा उन्होंने निश्चित रूप से दुर्घटना को टाल दिया।

इस दुर्घटना के कारण हम लोग ३० मई १९६१ ई. को दोपहरबाद बाबा के दर्शन कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिये पूना नहीं पहुँच सके। हम लोग उस दिन रात्रि में पूना पहुँचे। किन्तु बाबा अपने प्रिय प्रेमियों को नहीं भुला सके। हम लोग रेलवे स्टेशन के निकट एक हाई स्कूल में ठहरे थे और बिस्तर पर सोने की तैयारी कर रहे थे कि तभी बाबा की मण्डली के एक जन हमारे पास चुपचाप खुशी की यह खबर देने आये कि चूँकि रेल दुर्घटना हो जाने के कारण हम लोग बाबा के दर्शन नहीं कर सके थे, इसलिये बाबा ने कृपापूर्वक ३१ मई १९६१ ई. को प्रातः ११ बजे ''गुरुप्रसाद'' में हमें अलग से दर्शन देने का समय दिया है। उन्होंने हमें ''गुरुप्रसाद'' में प्रातःकाल ठीक ११ बजे उपस्थित होने के लिये कहा। बाबा का यह समाचार पाकर हम लोग कितना खुश थे ! हम लोग ३१ मई को प्रातः ११ बजे ''गुरुप्रसाद'' पहुँच गये, बाबा ने तुरन्त हमें दर्शन हॉल के अन्दर बुलाया और हम सबको अपना आनन्ददायी दैवी सहवास दिया। उन्होंने हमें अत्यन्त स्नेहपूर्वक देखा, हमसे हमारी कुशलक्षेम पूछी, रेल दुर्घटना के बारे में हमसे पूछा और हमसे विनोदपूर्वक बात की। अन्त में उन्होंने हमें मिठाई के रूप में अपना प्रेम-प्रसाद दिया। तत्पश्चात् दोपहरबाद भी हम दर्शन कार्यक्रम में उपस्थित हुये। बाबा के दर्शन का यह अन्तिम दिन होने के कारण, संयुक्त राष्ट्र अमरीका के कुछ प्रेमियों सहित भारत के सभी भागों के प्रेमियों की वहाँ भारी भीड़ थी। दर्शन कार्यक्रम के प्रारम्भ में वहाँ एकत्रित प्रेमियों से बाबा ने कहा, ''तुम लोग अत्यन्त भाग्यशाली हो जो मेरे दर्शन कार्यक्रम के अन्तिम दिन यहाँ उपस्थित हो।'' फिर उन्होंने वहाँ उपस्थित अपने सभी प्रेमियों को तथा उन प्रेमियों को भी, जो वहाँ उपस्थित नहीं थे, अपना प्रेम-प्रसाद दिया। तत्पश्चात् बाबा ने मुझसे उन्हें ''मेहेर चालीसा'' सुनाने के लिये कहा, जिसे मैंने अपने हृदय की गहराई से सुनाया। कार्यक्रम के अन्त में बाबा ने सभी को अपना प्रसाद दिया, तथा अनिश्चितकाल के लिये पुनः अपने एकान्तवास में चले गये।

जब बाबा एकान्तवास में होते थे तो वह हमेशा अपने आन्तरिक कार्य को अधिक तीव्र कर देते थे, जो दुनियाँ की घटनाओं के द्वारा तथा उनके प्रिय प्रेमी तथा कार्यकर्ताओं द्वारा, उनके सत्य व प्रेम के सन्देश-प्रसार के

सघन बाह्य कार्य के रूप में, परिलक्षित होता था। बाबा के नाम तथा उनके सन्देश को उनके प्रेमियों द्वारा नये क्षेत्रों तथा स्थानों में फैलाया जा रहा था तथा अधिकाधिक लोग बाबा के प्रेम में आते जा रहे थे। और, जब अधिक लोग बाबा के प्रेम के प्यासे हो जाते थे तब एक निश्चित अवधि के बाद बाबा पुनः अपना दर्शन देकर उनकी प्यास बुझा देते थे। वर्ष १९६२ में प्रेमियों ने पहले की तरह उस वर्ष के दौरान किसी समय बाबा के दर्शन की आशा करनी प्रारम्भ कर दी। इस वर्ष बाबा ने नवम्बर के प्रथम सप्ताह में एक बहुत बड़ा दर्शन कार्यक्रम रखा। उन्होंने इसे ''१९६२ पूर्व-पश्चिम मिलन'' कहा। यह दर्शन कार्यक्रम सभी दर्शन कार्यक्रमों से शानदार रूप में हुआ, और यह ''गुरुप्रसाद'' पूना में हुआ। बाबा ने अपने प्रेमियों से कहा कि उस पूर्व-पश्चिम मिलन के दौरान वह अपने प्रेमियों के लिये अपने प्रेम को मुक्त करने हेतु अपने हृदय की एक खिड़की खोलेंगे। पाश्चात्य जगत के लगभग २०० प्रेमी उस अभूतपूर्व मिलन में उपस्थित होने के लिये आये थे। मैं उस दर्शन कार्यक्रम के लिये लगभग ६०० पुरुष, स्त्रियों तथा बच्चों के काफ़िले को पूना ले गया। इस प्रकार के बड़े ग्रुप की यात्रा को संगठित करने में बाबा की कृपा ने मेरी सहायता की तथा काफ़िला कुशलतापूर्वक पूना गया और वापिस झाँसी आ गया। यह मेरे लिये बहुत ही भारी कार्य सिद्ध हुआ जिसे मैंने बाबा की कृपा तथा उनकी आन्तरिक सहायता के द्वारा सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। बाबा के उस पूर्व-पश्चिम मिलन में, जो अपने प्रकार का अन्तिम था, मैंने महसूस किया कि बाबा ने अपने हृदय की एक खिड़की खोल दी थी। मैंने उनका प्रचुर प्रेम प्राप्त किया तथा आन्तरिक रूप से अपने को पूरित महसूस किया। अब मैंने पुनः अपने में स्पष्ट परिवर्तन पाया, जिसे मैं महसूस करता हूँ किन्तु व्यक्त नहीं कर सकता। समस्त प्रेमी भी बाबा के प्रेम में एक नये जीवन तथा उत्साह से भर गये थे। पूर्व-पश्चिम मिलन समाप्त होने के पश्चात्, मैं आरक्षित स्पेशल रेलगाड़ी में काफ़िले को वापिस घर ले आया।

अब तक मैं बाबा के आध्यात्मिक जीवन में लगभग स्थापित हो चुका था, इसलिये आध्यात्मिक रहन-सहन एवं आध्यात्मिक कार्य मेरे जीवन में स्वाभाविकरूप से हो गये थे। बाबा अपने प्रकटीकरण कार्य में तूफानी गति

से आगे बढ़ रहे थे। १९६३ ई. के प्रारम्भिक महीनों में, मुझे बाबा से मेहेराज़ाद में उनके साथ कुछ दिन रहने के लिये विशेष बुलावा प्राप्त हुआ। तदनुसार मैं वहाँ पहुँच गया और बाबा के दैवी सहवास में कुछ दिन रहा, तथा एकबार पुनः आध्यात्मिक आवेश से युक्त हो गया। १९६० से १९६४ ई. तक मैंने काफी संख्या में बाबा के तथा बाबा पर लिखे गये हिन्दी प्रकाशनों को निकाला। मई १९६५ ई. में बाबा ने अपने प्रेमियों को ''गुरुप्रसाद'' पूना में उनका दर्शन करने का एक दूसरा अवसर प्रदान किया, और समय ने इसकी पुष्टि की कि यह अन्तिम अवसर था जिसे बाबा ने प्रदान किया था। मैं बाबा के उस दर्शन के लिये दो आरक्षित रेल की बोगियों में इस क्षेत्र के लगभग २०० पुरुष, स्त्रियों तथा बच्चों के एक काफ़िले को ले गया, जबकि लगभग ४०० प्रेमी स्पेशल बसों द्वारा पूना गये। हम लोग इस दर्शन के दौरान भी बाबा में सराबोर हो गये। इस दर्शन में बाबा ने अपने कार्य के सम्बन्ध में हमीरपुर जिले के अपने प्रिय प्रेमियों को कई बहुमूल्य अनुभव तथा उपदेश दिये, और उनसे पूरित होकर मैं काफ़िले को वापिस ले आया।

१९६५ ई. के प्रारम्भ से ही मेरा दाहिना हाथ बाबा-कार्य करने में बेकार होने लगा। लगभग १४ वर्ष तक इसने सुबह से लेकर शाम तक बाबा के आफ़िस का काम करने में मेरी मदद की, किन्तु १९६५ ई. में यह पारकिन्सन रोग (पैरालिसिस एजीटस) से ग्रसित हो गया। प्रारम्भ में मैंने इसकी उपेक्षा कर दी और अपने कार्य को हमेशा की तरह करता रहा, किन्तु एक वर्ष पश्चात् मेरे हाथ की हरकत और इससे लिखने की गति तथा शक्ति क्षीण होने लगी। तब मैंने इसका इलाज शुरू किया, किन्तु किसी इलाज से इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मैंने बाबा को इसकी जानकारी कराई, और उन्होंने मुझे किंग जार्ज मेडिकल कालेज अस्पताल लखनऊ में भर्ती होने, तथा न्यूरो सर्जन द्वारा अपनी जाँच कराने की सलाह दी जिसके लिये मुझे बाबा की व्यक्तिगत डॉक्टर (कुमारी) गौहर ईरानी से एक परिचयात्मक पत्र प्राप्त हुआ। अपने साथ उस पत्र को लेकर मैं लखनऊ में न्यूरो-सर्जन से मिला। न्यूरो-सर्जन की देखभाल में पूर्व उल्लिखित अस्पताल में १४ दिन भर्ती रहा तथा ३ महीने उनका इलाज

कराया, किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। उसी समय १६ तथा १७ अप्रैल १९६७ ई. को ''गुरुप्रसाद'' पूना में बाबा के पास उपस्थित होने के लिये उनके यहाँ से मुझे विशेष बुलावा प्राप्त हुआ। तदनुसार मैं १६ अप्रैल को दोपहर बाद ''गुरु प्रसाद'' पहुँच गया। बाबा ने विशेष रूप से मेरे दाहिने हाथ की हालत के बारे में मुझसे पूछा। उसी समय इसमें रोग के कारण कम्पन प्रारम्भ हो गया। मैंने अपना कम्पन करता हुआ हाथ बाबा को दिखलाया तथा उनको, जो इलाज मैंने कराया था, उसका इतिहास बतलाया। बाबा ने इसे गम्भीरता से सुना तथा संकेतों द्वारा मुझसे कहा (एरच जी ने उसकी व्याख्या की) : ''यह किसी इलाज से अच्छा नहीं होगा; एक दिन यह अपने-आप निकल जायेगा। चिन्ता मत करना।'' बाबा ने इसे प्रत्येक मीटिग में, जब मैं उनके समक्ष होता था, दोहराया। उन्होंने मुझसे यह भी कहा, ''यद्यपि यह किसी इलाज से अच्छा नहीं होगा, फिर भी तुम इसका नियमित रूप से सर्वोत्तम इलाज– चाहे ऐलोपैथिक, अथवा आयुर्वेदिक, अथवा होम्योपैथिक, अथवा अन्य कोई इलाज, अवश्य करते रहना।'' इतना ही नहीं बाबा ने मुझे एक सन्देश के साथ भारत के सर्वोच्च न्यूरो-सर्जन, बम्बई के अपने प्रिय प्रेमी डाक्टर राम जी. गिन्डे के पास अपनी जाँच कराने तथा इलाज कराने के लिये भेजा। मैं बम्बई गया और डाक्टर गिन्डे से अपनी जाँच कराई तथा छः माह तक उनका इलाज किया, किन्तु सब बेकार रहा। कम्प रोग की दशा और भी अधिक खराब हो गई तथा मैं दाहिने हाथ से लिखने और काम करने में असमर्थ हो गया। किन्तु मैंने उसके बारे में चिन्ता नहीं की क्योंकि बाबा ने मुझसे पहले ही कहा था कि यह किसी दवा से अच्छा नहीं होगा किन्तु एक दिन यह अपने आप निकल जायेगा, अतः मुझे चिन्ता नहीं करनी चाहिये। अतः मैंने बाबा के निर्देशानुसार इसका सर्वोत्तम इलाज–आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, बायोकेमिक, ऐलोपैथिक, तथा अन्य दूसरे–करना जारी रखा। इन सभी इलाजों के बावजूद मेरे हाथ की हालत दिन पर दिन और अधिक खराब होती चली गई। मेरा दाहिना हाथ बेकार हो जाने के कारण मेरा आफ़िस का काम बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया तथा मैं इसके बारे में चिन्तित हुआ। किन्तु इसके लिये कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि बाबा ने मुझे अपने हाथ की ऐसी ही हालत में जितना अधिक से अधिक काम हो सके, करने की सलाह दी थी तथा

चिन्ता न करने को कहा था। अतः मैं अपने रोगग्रस्त हाथ से जितना काम कर सकता था, कर रहा था।

अक्टूबर १९६८ ई. में मुझे मेहेराबाद में बाबा के साथ दो दिन रहने के लिये बाबा के यहाँ से पुनः विशेष बुलावा प्राप्त हुआ, और मैं वहाँ बाबा के दिव्य सहवास में ११ अक्टूबर से १४ अक्टूबर १९६८ ई. तक पूरे तीन दिन तथा चार रात रहा। वहाँ बाबा मुझसे १२ अक्टूबर को सुबह मिले। इस बार वह बाह्य जगत से पूर्णतया पृथक् हुये मालूम पड़ते थे। फिर भी उन्होंने मुझसे अपने हाथ आगे फैलाने के लिये कहा, जिन्हें मैंने तत्काल फैला दिया। मेरा दाहिना हाथ कम्प रोग के कारण बुरी तरह हिल रहा था। उन्होंने मेरे हाथों को गहराई से तथा दयापूर्वक देखा। कुछ क्षण पश्चात् उन्होंने पुनः मुझसे अपने हाथ उनके आगे फैलाने के लिए कहा, और उन्होंने मेरे हिलते हुए हाथ को गहरी दयापूर्ण चितवन से पुनः देखा। फिर उन्होंने मेरे कम्प रोग के बारे में मुझसे संकेतों द्वारा व्यक्त किया (एरचजी ने व्याख्या की) : ''यह असाध्य रोग है किन्तु मैं देखूँगा कि यह एक दिन निकल जायेगा। चिन्ता मत करना।'' मैंने विनम्रतापूर्वक बाबा को उत्तर दिया, ''बाबा, मैं अपने हाथ के कम्प रोग के बारे में चिन्ता नहीं करता, किन्तु मुझे केवल उस समय चिन्ता होती है जब आपका कार्य मेरे हाथ के कम्प रोग के कारण नहीं हो पाता है।'' बाबा ने इसे गहराई से सुना तथा शान्त रहे। १३ अक्टूबर को सुबह बाबा ने अपने चुने हुये कुछ कार्यकर्ताओं की वहाँ मीटिंग बुलाई। उस मीटिंग में उन्होंने मुझसे एकत्रित कार्यकर्ताओं के सामने अपने दोनों हाथ फैलाने के लिये कहा, जिन्हें मैंने तुरन्त फैला दिया। मेरे दाहिने हाथ में उस समय ज़बर्दस्त कम्पन हो रहा था। जब सभी कार्यकर्ताओं ने मेरे कम्पन करते हुये हाथ को देखा, तो बाबा ने उनसे कहा, ''इसने मेरे लिए बहुत अधिक कार्य किया है, जिससे अब इसके हाथों की यह स्थिति हो गई है। मैं इसके हाथों को (कार्यकर्ताओं की ओर अपने दोनों हाथों को फैलाते हुए तथा उनकी ओर संकेत करते हुए) एक दिन अपने हाथों की तरह पुनः चँगा कर दूँगा।'' इस प्रकार बाबा ने सभी कार्यकर्ताओं को अपने उस आश्वासन का गवाह बनाया जिसे उन्होंने मेरे हाथ को एक दिन चँगा करने के लिए दिया था। प्रियतम बाबा

के साथ मेरा वह अन्तिम मिलन था। १४ अक्टूबर को दोपहरबाद उन्होंने मुझसे विदाई के रूप में उनके बायें गाल का चुम्बन लेने के लिए कहा, और १५ अक्टूबर को सुबह मुझसे मेहेराज़ाद छोड़ने के लिये कहा। मैंने ईश-बाबा के बायें गाल का चुम्बन लिया, और वह अन्तिम चुम्बन था। बाबा ने मुझे हिन्दी में छापने के लिये तीन पुस्तकें – भाऊ कलचुरी द्वारा लिखित ''मेहेर गीतिका'' तथा ''मेहेर सरोद'' और डॉक्टर विलियम डंकिन कृत ''दी वेफेयरर्स'' का भाऊ कलचुरी द्वारा हिन्दी में किया गया अनुवाद–भी दीं। मुझे क्या पता था कि प्रियतम बाबा को सदा के लिये मेरा यह अन्तिम नमस्कार था।

३१ जनवरी १९६९ ई. को मुझे बाबा के सेक्रेटरी श्री आदि के. ईरानी से तार द्वारा सन्देश प्राप्त हुआ कि ३१ जनवरी १९६९, शुक्रवार को दोपहर में बाबा ने अपना भौतिक शरीर छोड़ दिया है। मुझे इस समाचार से धक्का नहीं लगा क्योंकि मैंने यह महसूस नहीं किया कि बाबा मुझसे अथवा अपने प्रेमियों से दूर चले गये हैं। मैं बाबा के भौतिक शरीर के चले जाने पर मुस्कराया और "अब आगे क्या होगा ?" इसकी प्रतीक्षा करने लगा। इसमें सन्देह नहीं कि यह एक बड़ी घटना थी। यह जानकर कि बाबा के भौतिक शरीर का दर्शन मेहेराबाद पहाड़ी पर अनिश्चित काल के लिये खुला है, मैं अपने परिवार तथा कुछ अन्य बाबा-प्रेमियों के साथ मेहेराबाद की ओर दौड़ा। हम लोग ६ फरवरी १९६९ ई. को दोपहरबाद मेहेराबाद पहुँच गये तथा समाधि में लेटे हुये बाबा के शरीर का दर्शन किया। मुझे बाबा का चेहरा सुन्दर तथा स्वस्थ किन्तु अत्यन्त विश्वव्यापी त्रास का बोझ लिये हुये दिखता था। मुझे उनके त्रास के इस बोझ पर कष्ट महसूस हुआ। "अवतार मेहेरबाबा ट्रस्ट समिति" के अध्यक्ष ने घोषित किया कि बाबा का शरीर अन्तिम रूप से ७ फरवरी १९६९ ई., शुक्रवार को दफ़ना दिया जायगा।

तदनुसार, हम लोग ७ फरवरी १९६९ ई., शुक्रवार को बड़े तड़के मेहेराबाद पहाड़ी पर पहुँच गये, और पुनः बाबा के शरीर का दर्शन किया। मैंने अन्तिम बार समाधि में बाबा को "मेहेर चालीसा" सुनाना चाहा, और मुझे ऐसा करने की अनुमति मिल गई। विगत कई वर्षों में बाबा स्वयं मुझसे उन्हें "मेहेर चालीसा" सुनाने के लिये कहा करते थे, और उन्होंने मुझसे

इसको लगभग एक दर्जन बार सुना था। किन्तु अब मैंने अपनी ओर से अन्तिम बार इसे बाबा को सुनाना चाहा। समाधि में उनके चरणों के पास बैठकर और उनके सुन्दर चेहरे की ओर मुँह करके, मैंने उन्हें अपनी अन्तिम भेंट के रूप में अपने हृदय की गहराई से "मेहेर चालीसा" सुनाया। दोपहरबाद बाबा का शरीर समाधि में हमेशा के लिये दफ़ना दिया गया। मैंने उस दफ़न करने के कार्य में भाग लिया, और वह बाबा के साथ मेरी गाथा का अन्त था।

अन्त में मैं पूरी ईमानदारी से घोषित करना चाहता हूँ कि अवतार मेहेरबाबा के साथ मेरे सम्पर्क की इस अल्प अवधि में प्रियतम बाबा ने स्वयं मुझे अपना निरन्तर साथी बना लिया है। मैं अपने को उनसे एक क्षण के लिये भी अनुपस्थित नहीं पाता। मैं अपने में बाबा के शब्दों की सत्यता को स्पष्ट रूप से महसूस करता हूँ, "मैं तुम्हारी श्वास की अपेक्षा तुम्हारे अधिक निकट हूँ।" वास्तव में वह मेरे साथ इतने स्वाभाविक तथा सहज हो गये हैं जितनी मेरी श्वास है, इसीलिये उनकी मधुर याद मुझमें सततरूप से, इसके लिये प्रयास किये बिना, बनी रहती है। इसका तात्पर्य है कि मैं कभी महसूस नहीं करता कि बाबा मुझसे दूर अथवा पृथक् अथवा भिन्न भी हैं; किन्तु मैं महसूस करता हूँ कि वह मुझमें ही हैं ! उनके साथ मेरे जीवन की इस अवधि में ऐसे क्षण रहे हैं जब मैंने बाबा के शब्दों "एकमात्र मैं हूँ" को सत्यता की झलक से युक्त पाया। उस क्षणिक झलक में मैंने प्रसन्नतापूर्वक अपनेआप को "पूर्णतया अकेला" महसूस किया, जबकि उस क्षण सृष्टि की चेतना मेरे अन्दर से लुप्त हो गई। कुछ क्षण ऐसे भी थे जब मैंने स्पष्ट रूप से महसूस किया कि बाबा के विश्वव्यापी बोझ का थोड़ा सा हिस्सा मेरे कन्धों पर है, ताकि उस समय मैं जान सकूँ कि बाबा के विश्वव्यापी बोझ तथा त्रास का क्या तात्पर्य है। यह भी क्षणिक झलक थी जिसे मैंने केवल बाबा की कृपा से प्राप्त किया।

दूसरे, जब से मैं २० मार्च १९५२ ई. को जिला परिषद हमीरपुर के सेक्रेटरी पद से मुक्त होने के पश्चात्, २१ मार्च १९५२ ई. से बाबा के जीवन (यथार्थ दैवी जीवन) में सम्मिलित हुआ हूँ तब से मेरा जीवन निरन्तर कष्टमय रहा है। इस जीवन में मैं एक क्षण भी कष्टरहित नहीं रहा—शारीरिक,

मानसिक अथवा अन्य कष्ट सदैव मुझे घेरे रहे हैं। अब मैं स्पष्ट रूप से महसूस करता हूँ कि चूँकि बाबा ने अपनी अनन्त कृपा के परे २१ मार्च १९५२ ई. से बाह्य तथा आन्तरिक रूप से मुझे अपने जीवन का भागीदार बनाया था, इसलिये बाबा के विश्वव्यापी त्रास, जिसे बाबा निरन्तर भोगते थे, का हिस्सा पाना मेरे लिये स्वाभाविक था। और, यह शायद बाबा के साथ इसी भागीदारी के कारण था कि कभी-कभी मुझे बाबा की सत्यता की झलकें मिलती थीं। किन्तु मेरे इस सतत त्रास के दौरान मैं अपने अन्तस्तल में हमेशा प्रसन्नता महसूस करता रहा हूँ, इसीलिये मेरे कष्ट मुझे कभी नीरस नहीं मालूम पड़े। वस्तुतः, कष्ट मेरी आदत बन गये हैं, और मैं इसके साथ अपना सामंजस्य प्रसन्नतापूर्वक बनाये रखता हूँ। प्रियतम अवतार मेहेरबाबा की कृपा के लिये धन्यवाद।

तीसरे, अपनी वर्तमान आध्यात्मिक स्थिति के साथ मैं स्पष्टरूप से महसूस करता हूँ कि मैं अपने जीवन की यात्रा में कहाँ खड़ा हूँ। मैं महसूस करता हूँ कि प्रियतम मेहेरबाबा का सानिध्य प्राप्त करने के पूर्व मैं अपने जीवन की 'मंज़िल' से दूर तथा बहुत अधिक दूर था और उस 'मंजिल' तक पहुँचने के लिये मुझे हजारों पुनर्जन्मों की आवश्यकता पड़ती। मेरी जीवन-यात्रा का अन्त मुझे क्षितिज के परे प्रतीत होता था, जहाँ तक पहुँचने के लिये असंख्य जीवन-अवधियों की आवश्यकता होती, किन्तु दैवी प्रियतम मेहेरबाबा के साथ मेरे सम्पर्क की इस अल्प अवधि के पश्चात्, मैंने स्पष्ट तथा निश्चित रूप से महसूस किया कि बाबा के साथ मेरा जीवन पूरा हो गया है तथा मैं निश्चितरूप से इसके अन्त तक पहुँच गया हूँ। उनकी दैवी कृपा से मैं शीघ्र अपनी 'मंज़िल' तक पहुँच गया और अब मुझे कहीं भी नहीं जाना है।

चौथे, और अन्तिमरूप से, मुझमें एक स्पष्ट भावना सतत रहती है कि प्रियतम अवतार मेहेरबाबा ने हमेशा के लिये मुझे माया के बन्धन से मुक्त कर दिया है, तथा मेरा मौजूदा जीवनकाल मेरी जीवन-यात्रा के जन्मों तथा मृत्युओं की अनन्त श्रंखला की अन्तिम कड़ी है। अब, बाबा की कृपा से मैं एक मुक्त आत्मा हूँ जिसे अपने लिये प्राप्त करने के लिये कुछ भी शेष नहीं रह गया है। बाबा ने अपनी असीम दया के वशीभूत मुझे सब, और उससे

भी अधिक दिया। मैंने अपने ''मेहेर चालीसा'' में उनसे जो प्रार्थना की है वह सब तथा असीमरूप से उससे अधिक प्राप्त कर लिया है। मैं सोचता हूँ कि यह कहना सर्वोत्तम होगा कि प्रियतम अवतार मेहेरबाबा ने मुझे मेरे हृदय की पूर्ण सन्तुष्टि की सीमा तक अपने आप को प्रदान कर दिया है। मेरे अन्दर यह भावना स्वतः, सहज तथा सतत है। यह अपने तरीके से अनवरतरूप से मेरे अन्दर इसके लिये चाह, इच्छा अथवा विचार का प्रयास किये बिना भी प्रवाहित होती रहती है। यह मेरे साथ इतनी स्वाभाविक हो गई है जितनी मेरी अपनी श्वास। मैं अपने अस्तित्व को अकथनीयरूप से धनी महसूस करता हूँ, और अपने को प्रियतम बाबा के जीवन में पूर्णतया स्थापित महसूस करता हूँ; और, इस दुनिया में एक साधारण व्यक्ति के रूप में रहते हुये, मैं जीवन की समस्त परिस्थितियों एवं दशाओं में सतत रूप से अपने अन्दर परम आनन्द का उपभोग करता हूँ। मैं महसूस करता हूँ कि चेतना के विकास के अनन्त दौर में, मैंने जो कुछ सीखा था, वह सब मैं भूल गया हूँ। यह सब प्रियतम अवतार मेहेरबाबा की कृपा के द्वारा हुआ है। इसका यह अर्थ नहीं लगाना चाहिये कि मैंने चैतन्य रूप से ''बाबा'' अथवा ईश्वर को प्राप्त कर लिया है।

मैंने १९४२ ई. में बाबा के नाम का चरम दुर्भावना तथा अपमान के साथ सत्कार किया, और उन्होंने मुझे अपनी अनन्त कृपा से पुरस्कृत किया। एकमात्र दैवी प्रियतम मेहेरबाबा ही ऐसा कर सकते थे।

इस वर्णन को अन्तिम रूप से पूरा करने के लिये, मुझे बाबा के साथ अपनी जीवन गाथा में कुछ और शामिल करना है। प्रियतम अवतार मेहेरबाबा की कृपा मेरे लिये एकबार ''ईश्वर है'' की अचानक तथा क्षणिक झलक भी लाई। उस क्षण के दौरान मेरी सबकुछ की चेतना, केवल ''ईश्वर का अस्तित्व है'' की चेतना के अतिरिक्त, जहाँ पूर्ण शान्ति, अक्षोभ तथा निश्चलता प्रबल होती है, लुप्त हो गई। ईश्वर के ''निश्चल अस्तित्व'' की चेतना के अतिरिक्त विचार, अनुभव, भावना और सभी कुछ पूर्णतया निश्चल हो जाते हैं तथा कुछ भी शेष नहीं रहता। कुछ क्षण पश्चात् यह झलक जिस प्रकार आई थी उसी प्रकार एकाएक तथा स्वतः चली गई।

''केवल मैं हूँ'' तथा ''ईश्वर है'' की दोनों झलकें मुझे आप से आप तथा एकाएक मिलीं और वे कुछ सेकेण्ड पश्चात् इसी रीति से चली गईं। ये दोनों झलकें मुझे गत वर्ष-१९६८ ई.-में पृथ्वी पर प्रियतम मेहेरबाबा की भौतिक उपस्थिति में, उस समय जब दुनिया भर में बाबा-प्रेमियों द्वारा बाबा के आदेश से प्रतिदिन ''परवरदिगार प्रार्थना'' तथा ''प्रायश्चित प्रार्थना'' की जाती थी, भिन्न-भिन्न समयों में मिली थीं। बाबा के दैवी कार्य की वह सर्वाधिक गौरवपूर्ण अवधि थी, और उस अवधि में ये झलकें मुझे निःसन्देह मेरे ऊपर बाबा की कृपा के प्रकाशन के रूप में मिली थीं।

ऐतिहासिक क्रम में, पहले मुझे ''बाबा के विश्वव्यापी बोझ'' की, फिर भिन्न समय में ''केवल मैं हूँ'' की झलक मिली, जबकि ''ईश्वर है'' की झलक अन्तिम थी। ये झलकें मुझे दैवी प्रियतम मेहेरबाबा के ''नाम'' तथा ''यश'' के समक्ष सर्वथा तुच्छ दृष्टिगोचर होती हुईं, प्रतिदिन के जीवन में साधारण घटनाओं के रूप में मिलीं। मेरे लिये कोई झलक, चाहे वह कितनी महान हो, प्रियतम बाबा के ''नाम'' के यश को न तो कभी प्राप्त कर सकती है और न बराबरी कर सकती है। फिर भी, मैंने कई बार इन झलकों को कम से कम एकबार पुनः प्राप्त करने की आकांक्षा की तथा प्रयास किया, किन्तु वे अब तक पुनः घटित नहीं हुई।

बाबा ने हमें बताया है, ''कुछ भी न माँगो और तुम्हें सबकुछ मिलेगा।'' निःसन्देह मेरे प्रियतम अवतार मेहेरबाबा ने मेरे मामले में अपने शब्दों को सत्य सिद्ध कर दिया है।

**केशव नारायण निगम**
अवतार मेहेरबाबा हमीरपुर केन्द्र
हमीरपुर (उत्तर प्रदेश)
भारत

**।। समाप्त ।।**

# पूरक

# Cosmic Meher Family

# मेहेर ब्रह्म परिवार

# का

# विनय पत्र

अनन्त श्री विभूषित श्री सद्‌गुरु सच्चिदानन्द अवतार मेहेर बाबा की मुक्तिदायी सेवा में :

मुसहफ़–ए–रुयेजानां पे लाखों सलाम,
ऐसे सुल्तान–ए–ख़ूबां पे लाखों सलाम।।

तेरा दीदार दीदार अल्लाह का,
ऐसे महबूब–ए–यज़दां पे लाखों सलाम।।

आप मुश्किल कुशा–ए–हादी ओ रहनुमां,
ऐसे मुरशिद–ए–पाकां पे लाखों सलाम।।

भेजता है शब व रोज़ वाहिद मुदाम,
मुरशिद–ए–पाक सुल्तां पे लाखों सलाम।।

**प्रेममूर्ति !**

आज इस शुभ घड़ी में मेहेर ब्रह्म परिवार, जिसके विचार ने रीवा (विन्ध्य प्रदेश) में सन् १९४८ ई. में अपना जन्म और आपकी मान्यता पाई थी, आप **हुज़ूर** को अपने बीच प्रत्यक्ष पाकर सार्थक हो गया। आपके पावन **सगुण** दर्शन के लिए इस परिवार की चिरकाल से तड़पती हुई लालसा इस क्षण पूर्ण हुई। इसका जन्म जन्मान्तर से सोया हुआ भाग्य जाग उठा। आप इस परिवार के **परम भाग्य** के रूप में आज प्रत्यक्ष हो गए। हम खुशी के मारे अवाक् हैं।

(Cosmic Meher Family) **मेहेर ब्रह्म परिवार** के सामान्य **पिता** व स्फूर्ति केन्द्र आप हैं; और, हे देव ! इसके एकमात्र धर्म, साध्य और आराध्य केवल आप ही हैं। यह परिवार आपकी नीचे लिखी हुई **मौन वाणी के एक-एक अक्षर का उपासक है–**

"No sacrifice is too great to set man free from his bondage to physical and material things. He must be inspired to realize that **God** alone is **Real;** all else is a vain and empty pursuit of transitory values. He must be helped to inherit the **Truth** that mankind is **One.** He must be given the capacity to love all men as his brothers, regardless of colour, creed or country."

"It is my divinely appointed task to bring this spiritual freedom to mankind; and I look to those who would be crusaders in the cause of **Truth** to help me in this **God-Ordained** mission."

(इन्सान को भौतिक तथा स्थूल चीज़ों के बन्धन से छुड़ाने के लिए जितना भी बड़ा बलिदान किया जाय वह थोड़ा है। उसके अन्तर में ऐसा अनुभव करने की स्फूर्ति जागृत करना आवश्यक है कि केवल **ईश्वर** ही **सत्य** है और उसके अलावा सब कुछ नश्वर मानों (Values) के पीछे व्यर्थ और ख़ाली दौड़ना है। उसको इस **सत्य** की विरासत दिलाने में हाथ लगाना आवश्यक है कि मानवजाति **एक** है। उसके अन्तर में ऐसी क्षमता पैदा करनी चाहिए कि वह रंग, धर्म अथवा देश के भेदभाव को त्याग कर सब मनुष्यों को अपने भाइयों के समान प्यार करे।

मैं मानवजाति को यही आध्यात्मिक स्वतंत्रता देने का कार्य ईश्वर से लेकर आया हूँ; और जो लोग सत्य के काज में अपने को लगाने वाले हैं उनसे मैं आशा करता हूँ कि वे दैव द्वारा दिए गए इस उद्देश्य में मेरी सहायता करें।)

## मर्यादा पुरुषोत्तम !

आप हमको ऊपर बताए गए अपने अमर काज में खपा देने की महान

कृपा करें। इससे बढ़कर हमारे अहंकारी शरीरों का और कोई उपयोग नहीं हो सकता। हे प्रभू ! **आपका पाक दामन पा जाने पर तो लोक-परलोक, सिद्धि-शक्ति और मुक्ति आदि अपने आप हमारी हो गईं;** आपकी पावन शरण पाकर भी इनकी चाह करना बेमतलब है। अतः अब तो हमारे जीवन के एक-एक क्षण और शरीर के एक-एक कण को अपनी पावन सेवा में लगाकर हमें धन्य कीजिये, क्योंकि **यह शरीर तो हमें फिर मिल सकता है, लेकिन आप और आपका पावन काज युगों बाद बिरलों को ही मिलते हैं।** आपका काज लोक परलोक दोनों के लिए परम वरदान है। कुछ समय से दुनियाँ आपकी माया के वशीभूत होकर बहुत तप रही है। उसकी तपन बुझाने के लिए आपके काज में इस परिवार का बलिदान आपके श्रीचरणों में प्रस्तुत है, उसे स्वीकार करो भगवन् !

## नरनारायण !

बहुत प्रतीक्षा के बाद हमें ढाढस मिला है कि आप जल्द ही दुनियाँ को मौजूदा भीषण मायावी ताप से मुक्त करने जा रहे हैं। १२ फरवरी १९५२ ई. को **आपकी पहिली असली वर्षगाँठ** के शुभ दिन आप द्वारा ईश्वर का आशीर्वाद और आपका प्रेम पाकर आपके सब जन महान शान्ति व आनन्द को प्राप्त हुए। इस परिवार ने उसी सौभाग्यशाली दिन से **मेहेर सम्वत्** (Meher Era) का प्रारम्भ, दैवी प्रकाश का सूत्रपात और **नवीन युग** का प्रादुर्भाव देखा। परन्तु, हे दीनबन्धु ! अपनी माया की भीषण प्रचंडता का शमन करने के लिए आप वैसा ही **भीषण विराट स्वरूप** धारण करते हुए दिखाई दे रहे हो जैसा आपने द्वापर में महाभारत के समय धारण किया था। आपकी यह लीला बड़ी भयानक है, यद्यपि यह आपका सनातन खेल है। अस्तु,

## रहमतुल्लिल आलमीन !

आप आलम पर रहम करके अपना प्रचंड स्वरूप जल्द शान्त करें। इस परिवार की आपके श्रीचरणों में बारम्बार यही प्रार्थना है।

( १ )

हे जगत्राता विश्वविधाता, हे सुख शान्ति निकेतन हे !
प्रेम के सिन्धू दीन के बन्धू, दुःख दरिद्र विनाशन हे !!

( २ )

शुभ्र अनन्त अज्ञेय अनामय, जगके द्वन्द निकन्दन हे !
करुणासिन्धू आर्त्त के बन्धू, अखिल अशान्ति विनाशन हे!
शुभ्र प्रभाकर शान्त सुधाकर, पूरण ब्रह्म सनातन हे !

( ३ )

तू है पिता कुटुम्ब यह तेरा, भक्ति तेरी अनुपम धन हे!
नित्य नवीन बढ़े यह नाता, याद तेरी हो छिन छिन हे!
बन्धु सखा भ्राता प्रतिपालक, केवल तू अवलम्बन हे !

( ४ )

माया मोह विनाश शीघ्र कर, मुक्त करो भवबन्धन हे !
कण कण में तेरी ही आभा, लखें विश्व के सब जन हे!
मेहेर रहे जगत पर तेरी, बाबा अलख निरञ्जन हे !

**विश्व का कल्याण हो। धर्म की स्थापना हो।**
**दैवी जीवन का संचार हो। मेहेर समर्थ की जय जयकार हो।**

स्थान महेवा,
डाकघर कबरई,
ज़िला हमीरपुर
(उत्तर प्रदेश)
अगहन शुक्ल ५,
सम्वत् २००६ विक्रमी।

मेहेर श्रीचरण-चन्द्र-चकोर,
मेहेर ब्रह्म परिवार के सब जन
मार्फ़त
केशव नारायण निगम
शनिवार, २२.११.१९५२ ई.

*नोट—ऊपर अंग्रेज़ी अंश के नीचे बड़े कोष्ठों के भीतर दिया गया हिन्दी भावार्थ मूल विनय-पत्र में नहीं है। वह भावार्थ अंग्रेज़ी न जानने वालों की सुविधा के लिए ही इस पुस्तिका में जोड़ दिया गया है।*

# अधिकार पत्र

अवतार मेहेरबाबा कैम्प
१०७–ए, राजपुर रोड, देहरादून
दिनांक २३.३.५३

हमीरपुर (उ.प्र.) जिले के संबंधित सभी बाबा प्रेमियों को

प्रिय बहनों और भाइयो,

श्री मेहेर बाबा हमीरपुर जिले के अपने सभी प्रेमियों को यह ज्ञात कराना चाहते हैं कि उन्होंने केशव नारायण निगम को बाबा द्वारा दिये गये ईश्वरीय कार्य को करने की आज्ञा दी है। केशव १ अप्रैल ५३ से सात महीने तक उनके कार्य में व्यस्त रहेंगे। बाबा ने केशव को, उनके हमीरपुर के प्रेमियों द्वारा भेंट में दिये गये १६७७ रु. की धनराशि में ५०० रु. और जोड़कर, कुल २,१७७ रु. की धनराशि को खर्च करने का अधिकार दिया है। बाबा ने २१७७ रु. की इस धनराशि को निम्नलिखित ढँग से खर्च करने की आज्ञा दी है :–

१. ५०० रु. ''मेहेर गीतावली'' की छपाई में (समूल्य प्रकाशन)।

२. ३५० रु. श्री बाबा के सार्वजनिक दर्शन प्रोग्रामों के दौरान विभिन्न स्थानों में, विभिन्न अवसरों पर दिये गये श्री बाबा के संदेशों के हिंदी अनुवाद एवं उनकी छपाई में (समूल्य प्रकाशन)।

३. ३६५ रु. ''मेहेर ब्रह्म परिवार'' पुस्तिका की छपाई का खर्च (समूल्य प्रकाशन)।

४. ३६२ रु. केशव की सात महीनों की यात्राओं का खर्च एवं डाक खर्च।

५. ६०० रु. बाबा द्वारा केशव और उसके परिवार को प्रसाद के रूप में अप्रैल और मई ५३ के लिये दिया गया मासिक खर्च।

शेष पाँच महीनों, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर ५३ के लिये बाबा ने विष्णु देवरुखकर को पाँच महीने तक, प्रति माह ३०० रु. केशव के परिवार के लिये भेजने की आज्ञा दी है।

बाबा कार्य में हुये यात्रा व्यय एवं डाक खर्च के लिये बाबा द्वारा निर्धारित ३६२ रु. की धनराशि के अलावा, बाबा ने केशव को ''मेहेर गीतावली'', ''मेहेर ब्रह्म परिवार'' और ''हिन्दी संदेश'' पुस्तिकाओं की बिक्री से प्राप्त धन को भी, यात्रा व्यय एवं डाक खर्च में इस्तेमाल करने का अधिकार दिया है। बाबा ने केशव से सारे खर्च का हिसाब रखने के लिये भी कहा है।

श्री बाबा पूरे हमीरपुर जिले के अपने सभी प्रेमियों को अपना प्रेम भेजते हैं।

बाबा की आज्ञा से

आपका स्नेही बन्धु,
ह. एरच
(एरच)

## हिन्दी

पहले, बाबा ने केशव को सात महीने के लिये अपना दैवी कार्य सौंपा और, बाद में सात महीने की अवधि समाप्त होने के पूर्व, उन्होंने केशव को यह जानने के लिये पुनः अपने पास बुलाया कि उसने उनका कार्य किस प्रकार किया था। केशव से सुनने के पश्चात् बाबा अत्यंत प्रसन्न हुये और कहा, ''मैंने तुमसे १००% काम करने के लिए कहा था लेकिन तुमने इसे १०१% किया है, इसलिये तुम इस कार्य को स्थायी रूप से करो। तुम्हारे परिवार के भरण पोषण के लिये मैं प्रति माह ३०० रु. तुम्हें अपने प्रसाद के रूप में दूँगा। मेरे इस प्रसाद को, तुम मेरे द्वारा तुमको दिये गये मेरे दैवी कार्य से न जोड़ना। तुम्हारे द्वारा किये गये कार्य का इनाम ईश्वर तुमको देगा और वह निश्चित रूप से तुम्हें इनाम देगा। मेरे द्वारा दिये गये दैवी कार्य के अतिरिक्त तुम और कोई काम, अथवा नौकरी अथवा व्यापार न करना।''

**(ह० के. एन निगम)**